मुसलमान बीवी

मौलाना इदरीस अंसारी

हुन्न लिबासुल्लकुम व अन्तुम लिबासुल्लहुन्न
वे तुम्हारी लिबास हैं, तुम उनका लिबास हो।

मुसलमान बीवी

औरतों को अपने खाविंदों की फ़रमांबरदारी करने, उनके घरों की हिफ़ाज़त करने, बच्चों के पालने-पोसने के तरीक़े और आपस में निबाह करने का चाव पैदा करने, ख़ाविंदों की ना-फ़रमानी करने और उसके ख़िलाफ़ चलने के डरावे, बहुत ही आसान हिंदी भाषा में लिखे गये हैं, ताकि इसे पढ़ कर हर औरत को अपनी ज़िम्मेदारी का पूरा-पूरा एहसास हो सके।

लेखक:
मौलाना मुहम्मद इदरीस अंसारी

इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०

मुसलमान बीवी

लेखक :
मौलाना मुहम्मद इदरीस अंसारी

ISBN 81-7231-119-2

प्रथम संस्करण : 1994
पुनः प्रकाशन : 2014

प्रकाशक :
इस्लामिक बुक सर्विस (प्रा०) लि०
1511-12, पटौदी हाउस, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)
फ़ोन : 011-23244556, 23253514, 23269050, 23286551
फ़ैक्स : 011-23277913 | **e-mail :** info@ibsbookstore.com
Website : www.ibsbookstore.com

OUR ASSOCIATES

- Angel Book House FZE, **Sharjah (U.A.E.)**
- Azhar Academy Ltd., **London (United Kingdom)**
- Lautan Lestari (Lestari Books), **Jakarta (Indonesia)**
- Husami Book Depot, **Hyderabad (India)**

Printed in India

विषय-सूची

क्या ?	कहां ?
१. अपनी बात	३
२. मुसलमान बीवी	५
३. मुसलमान मर्द क्या करें	१८
४. मियां-बीवी कैसे रहें ?	२१
५. बच्चे कैसे पाले जाएं ?	२६
६. ससुराल में कैसे रहें ?	३५
७. घर कैसे चलायें ?	३७
८. झूठी क़समें मत खाओ	३६
९. मुसलमान बीवी, दूसरा हिस्सा	४०
१०. एक दूसरे के हक़	४१
११. बे-अक़्ल औरतें	७३
१२. सलीक़ा और अदब	७६
१३. ऐब दूर करो	८६
१४. तजुर्बा और इंतिज़ाम	९२
१५. बच्चों की देखभाल	१०२
१६. अच्छी और भली बातें	१०५
१७. हुनर और पेशा	११२

अपनी बात

अगर किसी को ऐसी बीवी मिल जाए, जो अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के हुक्मों पर चले और अपने फ़र्ज़ को अदा करने की कोशिश करे, तो घर के जन्नत बनने में कोई कठिनाई नहीं हो सकती और अगर बीवी, बे-अक़्ल, झगड़ालू, ज़िद्दी और बे-सलीक़ा मिल जाए तो घर जन्नत के बजाए दोज़ख़ बन जाता है, फिर उसकी वीरानी के लिए रास्ते खुल जाते हैं। देखते-देखते भरा-पुरा घर तबाह हो जाता है, नयी नस्लों में जो ख़राबियां पैदा होती हैं, वे अलग, ऐसे ही घर होते हैं जिनके लिए तरक़्क़ी के सारे रास्ते बन्द हो जाते हैं।

यह किताब इसी मक़सद से तैयार की गई है कि बीवियां उन बातों को जानें जो घर को जन्नत बनाने में मदद करती हैं। उन्हें मालूम हो कि ज़िंदगी किस तरह गुज़ारी जाए कि दुनिया भी बने, घर भी संवरे और अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० की खुशी भी उन्हें हासिल हो। ग़रज़ यह कि बीवियों से मुताल्लिक़ जितनी भी बातें हो सकती हैं, सब इसमें लिख दी गयी हैं जैसे यह कि मियां-बीवी के ताल्लुक़ात कैसे होने चाहिए, बच्चे कैसे पाले जायें, ससुराल में कैसे रहा जाए, घर का इंतिज़ाम कैसे संभाला जाए, कौन सी अच्छी और भली बातें हैं जो अपनायी जायें, हुनर और पेशे का चाव कैसे पैदा किया जाए, वग़ैरह वग़ैरह।

किताब उर्दू में थी, जिसका बहुत ही आसान हिंदी तर्जुमा इसमें पेश किया गया है, ताकि पढ़ने में और समझने में किसी क़िस्म की कठनाई न हो। उम्मीद है पसंद की जाएगी।

—प्रकाशक

मुसलमान बीवी

१. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जिस औरत ने पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ी, रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखे और अपने को बुरे काम से बचाया यानी बद-कारी नहीं की और अपने शौहर के हुक्म पर चली, उसका कहना माना, ऐसी औरत को अख़्तियार है, जन्नत के जिस दरवाज़े में चाहे, दाख़िल हो जाये। —तबरानी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَرْءَةُ إِذَا صَلَّتْ خَمْسَهَا وَصَامَتْ شَهْرَهَا وَأَحْصَنَتْ فَرْجَهَا وَأَطَاعَتْ بَعْلَهَا فَلْتَدْخُلْ مِنْ أَيِّ أَبْوَابِ الْجَنَّةِ شَاءَتْ (رواه ابو نعيم فى الحلية طبرانى)

२. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, औरत के लिए दो पर्दे हैं। एक शौहर, दूसरे क़ब्र और दोनों में ज़्यादा पर्दे वाली चीज क़ब्र है। —तबरानी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِلْمَرْءَةِ سِتْرَانِ اَلزَّوْجُ وَالْقَبْرُ اَسْتَرُهَا الْقَبْرُ (طبرانى)

३. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, दीनदार बेवा औरत का नाम आसमानों में शहीदा हो जाता है। —दैलमी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْاَرْمِلَةُ الصَّالِحَةُ سُمِّيَتْ فِى السَّمٰوٰتِ شَهِيْدَةً (ديلمى)

यानी आसमान में उसके नाम से जितनी कार्रवाइयां की जाती हैं, उसमें उसको शहीदा (शहादत पाने वाली औरत) के इज़्ज़तदार नाम से याद किया जाता है।

४. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जिस औरत का शौहर मर जाये, वह रंगीन कपड़ा न पहने, न ज़ेवर पहने, न मेंहदी लगाये और न आंखों में सुरमा लगाये —मिश्कात

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمُتَوَفّٰى عَنْهَا زَوْجُهَا لَا تَلْبَسُ الْمُعَصْفَرَ مِنَ الثِّيَابِ وَلَا الْمُمَشَّقَةَ وَلَا الْحُلِيَّ وَلَا تَخْتَضِبُ وَلَا تَكْتَحِلُ (مشکوٰۃ)

यानी उसको दस दिन चार महीने बनाव-सिंगार न करना चाहिए, इसको इद्दत कहते हैं।

५. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जो औरत बिना किसी बड़ी ज़रूरत के अपने शौहर से तलाक़ मांगे, उस पर जन्नत की ख़ुश्बू हराम है।

तिर्मिज़ी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَيُّمَا امْرَاَةٍ سَاَلَتْ زَوْجَهَا طَلَاقًا مِنْ غَيْرِ بَاْسٍ فَحَرَامٌ عَلَيْهَا رَائِحَةُ الْجَنَّةِ۔ (ترمذی)

६. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जो औरत नाराज़ रहती है अपने शौहर से उस पर लानत है अल्लाह की। —दैलमी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَيُّمَا امْرَاَةٍ غَضِبَتْ زَوْجَهَا فَعَلَيْهَا لَعْنَةُ اللّٰهِ (دیلمی)

७. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जो औरत मर गई और उसका शौहर उसकी ज़िन्दगी में उससे ख़ुश रहा, वह बिना किसी शक के, जन्नत में जायेगी —इब्ने माजा

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَيُّمَا امْرَاَةٍ مَاتَتْ زَوْجُهَا عَنْهَا رَاضِيًا دَخَلَ الْجَنَّةَ۔ (ابن ماجه)

८. फ़र्माया अल्लाह के रसूल

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

सल्ल० ने, ऐ औरत ! देख, बस तेरी जन्नत और दोज़ख़ तेरा शौहर है। أُنْظُرِيْ فَإِنَّمَا هُوَ جَنَّتُكِ أَوْ نَارُكِ

—तबक़ाते इब्ने साद (طبقات ابن سعد)

यानी औरत अपने शौहर की ख़ुशी में जन्नत और उसकी ना-ख़ुशी में जहन्नम में जायेगी।

९. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, औरतों में सबसे अच्छी औरत वह है, जो अपने शौहर को ख़ुश करती है जब वह उसको देखता है और उसका कहना मानती है जब वह कोई हुक्म करता है और अपने माल व जान में उसके ख़िलाफ़ नहीं करती जिससे उसको रंज पहुंचे —बैहक़ी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَيْرُ النِّسَاءِ الَّتِيْ تَسُرُّ زَوْجَهَا إِذَا نَظَرَ وَتُطِيْعُهُ إِذَا أَمَرَ وَلَا تُخَالِفُهُ فِيْ نَفْسِهَا وَلَا فِيْمَا لِهَا بِمَا يَكْرَهُ۔ (بیہقی)

यानी जो औरत हर तरह अपनी जान व माल से अपने शौहर के ख़ुश करने में लगी रही, अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के नज़दीक वह सबसे अच्छी औरत है।

१०. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जो भी औरत या मर्द किसी औरत और उसके शौहर के दर्मियान बिगाड़ डलवा दे, वह हमारी उम्मत से निकला हुआ है। —अबू दाऊद

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَيْسَ مِنَّا مَنْ خَبَّبَ امْرَأَةً عَلَى زَوْجِهَا۔ (ابوداؤد)

औरतें ख़ूब समझ लें, क्योंकि यह बुरी आदत बहुत सी औरतों में पाई जाती है। ऐसी औरत को हुज़ूर सल्ल० अपनी उम्मत से बाहर निकाल देंगे। इसलिए सब बहनों को इस बुरे काम से तौबा करनी चाहिए।

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّ الْمَرْأَةَ إِذَا اسْتَعْطَرَتْ فَمَرَّتْ بِالْمَجْلِسِ فَهِيَ كَذَا وَكَذَا يَعْنِي زَانِيَةً۔ (ترمذی)

११. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने जो औरत ख़ुश्बू लगाकर मर्दों के पास से गुज़रती है। ऐसी औरत बदकार है। —तिर्मिज़ी

कितने बड़े अफ़सोस की बात है कि हुज़ूर सल्ल० ने उस औरत को, जो ख़ुश्बू लगाकर बाज़ारों, गली-कूचों और सिनेमाओं में जाये, उसको बदकार फ़र्माते हैं और हम फिर भी इस हरकत से बाज़ न आयें और बे-धड़क बनाव-सिंगार करके घरों से बाहर निकलें।

१२. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कि एक बार मैंने एक ना-महरम जवान मर्द और जवान औरत को एक जगह देखा, तो मुझको उन दोनों पर शैतान का बड़ा डर है कि वह ज़रूर इस मौक़े से फ़ायदा उठायेगा, यानी शैतान दोनों के चाल-चलन को बिगाड़ देगा और औरत की इज़्ज़त को ख़ाक में मिला देगा।

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِيَّاكُمْ وَالدُّخُوْلَ عَلَى النِّسَاءِ فَقَالَ رَجُلٌ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ أَرَأَيْتَ الْحَمْوَ فَقَالَ الْحَمْوُ الْمَوْتُ (بخاری ومسلم)

१३. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, तुम ना महरम औरतों के पास आने-जाने से बचो। एक सहाबी रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! बतलाइये, क्या शौहर के भाई (यानी देवर, जेठ) बे-तकल्लुफ़ अपनी भाभी के पास आ-जा सकते हैं। फ़र्माया, वे औरत के लिए मौत हैं।

—बुख़ारी व मुस्लिम

यानी जिस तरह ज़हर खाने से दुनिया की मौत हो जाती है वैसे ही देवर-जेठ का आना-जाना औरत के ईमान के लिए ज़हर है और यही आख़िरत की बर्बादी है।

१४. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, मेरी उम्मत की औरतों पर हम्माम में नहाना हराम है। —हाकिम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْحَمَّامُ حَرَامٌ عَلٰى نِسَآءِ اُمَّتِيْ (حاکم)

यानी जिस जगह ना-महरम मर्दों का आना-जाना हो, उस जगह से औरतों को बचना चाहिए। मर्दों की जगह औरतों का क्या काम औरतों को ग़ैर-मर्दों से अलग रहना चाहिए।

१५. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जो औरत धोनी की ख़ुश्बू बसाये, वह हमारे साथ इशा में न आए। —अबू दाऊद

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِمْرَاَةٌ اَصَابَتْ بَخُوْرًا فَلَا تَشْهَدْ مَعَنَا الْعِشَاءَ (ابوداؤد)

पहले ज़माने में औरतें मस्जिद में जाकर हुज़ूर सल्ल० के पीछे जमाअत के साथ नमाज़ें पढ़ा करती थीं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, जो ख़ुश्बू बसा कर नमाज़ के लिए आये, वह हमारी मस्जिद में न आए क्योंकि ख़ुशबू की महक से मर्दों की नज़रें ख़ुद ही उस औरत पर पड़ेगी और यह बिगाड़ की वजह होगी। बहनों को ग़ौर करना चाहिए कि उस ज़माने में भी जब औरत को ख़ुश्बू बसाकर मर्दों की मज्लिस में आने से हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया, तो आज के बिगाड़ के ज़माने में हम पर कितनी ज़िम्मेदारी आ जाती है। पहली बात तो यह है कि हम बाज़ारों में, सैरगाहों और तमाशों में जायें और फिर इतना बड़ा ज़ुल्म कि ख़ुश्बू लगाकर, बनाव-सिंगार करके जायें। अगर हम मुसलमान हैं तो इस बे-शर्मी से तौबा करें।

१६. फ़र्माया हुज़ूर सल्ल० ने, ना-महरम मर्दों के सामने सिंगार करके इतराने वाली औरत क़ियामत की

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مَثَلُ الْمَرْءَةِ فِي الزِّيْنَةِ فِيْ غَيْرِ

अंधरी की तरह है कि उसका कोई नूर नहीं। —मिश्कात

أَهْلِهَا كَمَثَلِ ظُلْمَةٍ يَوْمَ الْقِيَمَةِ لَا نُوْرَ لَهَا۔ (مشکوٰۃ)

अल्लाह भी फ़र्माता है, 'ज़मीन पर इतरा कर न चलो' क्योंकि इतराने में गमण्ड पाया जाता है, जो अल्लाह को ना-पसन्द है और शैतान को खुश करता है, यानी ऐसी औरत, जो मर्दों के साथ मटक-मटक कर चले, उसमें कोई भलाई नहीं, बल्कि उसमें बुराई ही है।

१७. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जिस औरत के तीन ना-बालिग़ बच्चे मर जायें और वह उन पर सब्र करे और सवाब की उम्मीद रखे, ऐसी औरत जन्नत में ज़रूर दाख़िल होगी। —मिश्कात

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ. لَا یَمُوْتُ لِاِحْدَاکُنَّ ثَلٰثَۃٌ مِّنَ الْوَلَدِ فَتَحْتَسِبُہٗ اِلَّا دَخَلَتِ الْجَنَّۃَ۔ (مشکوٰۃ)

तो अगर हमारे साथ कोई ऐसा मौक़ा पेश आ जाए तो पूरे सब्र से काम लेना चाहिए। रोना-पीटना और बयान करना मुसलमान बीवियों का काम नहीं। अल्लाह की चीज़ थी, उसने ले ली, हां, आंसुओं से रोने में कोई हरज नहीं।

१८ फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, मेरी उम्मत की बेहतरीन औरतें वे हैं, जो अच्छी शक्ल की हों और उनका मह्र थोड़ा हो। —दैलमी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ۔ خِیَارُ نِسَاءِ اُمَّتِیْ اَحْسَنُھُنَّ وَجْھًا وَّاَرْخَصُھُنَّ مَھْرًا۔ (دیلمی)

यह उसकी ख़ूबी की दलील है। इसलिए चाहे शौहर में ताक़त उसकी अदायगी की हो या न हो, उस पर हज़ारों का बोझ रख देना कौन-सी समझदारी है इससे निकाह भी ख़तरे में पड़ जाता है, क्योंकि

बहुत से मर्द यह ख़्याल कर लेते है कि मह्र देना तो हैं ही नहीं, जो यह कहें, उनका निकाह सही नहीं। हमेशा ख़्याल रखो मह्र हैसियत के मुताबिक़ बंधवाना चाहिए।

१९. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जिसने सब्र दिलाया उस औरत को, जिसका बच्चा मर गया, उसको जन्नत का लिबास पहनाया जाएगा। —मिश्कात

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ مَنْ عَزّٰی ثَکْلٰی کُسِیَ بُرْدًا فِی الْجَنَّۃِ۔ (مشکوٰۃ)

यानी जब किसी का बच्चा मर जाए, तो तुम उसकी मातमपुर्सी को अगर जाओ तो इस तरह न किया करो कि उसके साथ मिलकर रोने-धोने लगो, बल्कि उससे ऐसी बातें करो, जिससे उस बेचारी को सब्र आ जाए। ऐसी औरत को अल्लाह जन्नत का लिबास पहनाएगा।

२०. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, ऐ औरतो! तुम अपने ऊपर सब्र लाज़िम कर लो और ज़रूरी कर लो सुब्हानल्लाह, लाइलाह इल्लल्लाह सुब्हानल मलिकिल क़ुद्दूस पढ़ने को और गिनती किया करो तुम उंगलियों पर। बेशक, ये उंगलियां सवाल की जायेंगी, बातें कराई जायेंगी और अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न रहना, वरना तुम उसकी रहमत से महरूम रह जाओगी। —चहल हदीस

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ عَلَیْکُنَّ بِالتَّسْبِیْحِ وَالتَّھْلِیْلِ وَالتَّقْدِیْسِ وَاعْقِدْنَ بِالْاَنَامِلِ فَاِنَّھُنَّ مَسْئُوْلَاتٌ مُسْتَنْطِقَاتٌ وَلَا تَغْفُلْنَ فَتَنْسَیْنَ الرَّحْمَۃَ۔ (چہل حدیث)

२१. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, क़ियामत के दिन सबसे

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ

ज्यादा बदमाश मर्द वह होगा जो अपनी बीवी की खास बातें लोगों में ज़ाहिर करे। इसी तरह कुछ औरतों की भी यह आदत होती है कि वह मियां-बीवी वाली ख़ास बातों को अपनी सहेलियों को सुना देती हैं, इससे बचना चाहिए, यह बहुत बड़ा गुनाह है।

—मुस्लिम

وَسَلَّمَ. اِنَّ مِنْ اَشَرِّ النَّاسِ عِنْدَ اللّٰهِ مَنْزِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ الرَّجُلُ يُفْضِيْ اِلٰى اِمْرَأَتِهٖ وَتُفْضِيْ اِلَيْهِ ثُمَّ يَنْشُرُ سِرَّهَا. (مسلم)

२२. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, जब शौहर रात में अपनी बीवी को अपने पास बुलाए, ताकि उसके साथ सोये और औरत बिना शरई मजबूरी के इन्कार कर दे, तो तमाम रात सुबह तक उस औरत पर फ़रिश्ते लानत करते हैं। —बुख़ारी शरीफ़

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. اِذَا دَعَى الرَّجُلُ اِمْرَأَتَهٗ اِلٰى فِرَاشِهٖ فَبَاتَ غَضْبَانَ لَعَنَتْهَا الْمَلٰٓئِكَةُ حَتّٰى تُصْبِحَ. (بخاری شریف)

२३. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, तीन आदमी ऐसे हैं जिनकी न तो नमाज़ क़ुबूल होती है और न उनकी कोई नेकी आसमान की तरफ़ चढ़ती है। एक भागा हुआ गुलाम, जब तक कि वह अपने मालिकों के पास वापस न आ जाए। दूसरे वह औरत जिससे उसका शौहर नाराज़ हो। तीसरे बेहोश, जब तक कि वह नशे के इस्तेमाल से तौबा न कर ले।

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. ثَلٰثَةٌ لَا يُقْبَلُ لَهُمْ صَلٰوةٌ وَلَا تَصْعَدُ لَهُمْ حَسَنَةٌ وَالْعَبْدُ الْاٰبِقُ حَتّٰى يَرْجِعَ اِلٰى مَوَالِيْهِ فَيَضَعُ يَدَهٗ فِيْ اَيْدِيْهِمْ وَالْمَرْأَةُ السَّاخِطُ عَلَيْهَا زَوْجُهَا وَالسَّكْرَانُ حَتّٰى يَصْحُوْا. (رواه البيهقي)

तो जिस औरत का शौहर उससे नाराज़ है, उसकी न तो नमाज़ क़ुबूल होती है और न उसकी कोई नेकी क़ूबूल होती है, ख़ुदा की पनाह, अल्लाह की नाराज़ी अलग और फिर कोई नेकी भी क़ुबूल न हो,रो हमारा क्या ठिकाना। —बैहक़ी

२४. हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़र्माती हैं कि हुज़ूर सल्ल० मुहाजिरों और अन्सार के लोगों में तशरीफ़ रखते थे। इतने में एक ऊंट आया और आपको सज्दा किया। इस पर सहाबियों ने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल ! आपको जब जानवर और पेड़ भी सज्दा करते हैं तो हम ज़्यादा हक़ रखते हैं कि आपको सज्दा करें। इस पर आपने फ़र्माया, अपने रब की इबादत करो और मेरी इज़्ज़त करो। अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो मैं कि वे अपने औरतों को हुक्म करता शौहरों को सज्दा करें और शौहर का इतना बड़ा हक़ है कि अगर वह यह कहे कि पीले पहाड़ से पत्थर उखाड़ कर काले पहाड़ पर ले जा और काले से सफ़ेद पहाड़ पर ले आ तो औरत के ज़िम्मे ज़रूरी है कि उसके हुक्म को पूरा करे, हालाँकि यह काम बिल्कुल बे-फ़ायदा है, लेकिन हुज़ूर सल्ल० ने शौहर का हुक्म मानने की कितनी ताकीद की। —अहमद

عَنْ عَائِشَةَ اَنَّ رَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَ فِيْ نَفَرٍ مِّنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ فَجَاءَ بَعِيْرٌ فَسَجَدَ لَهٗ فَقَالَ اَصْحَابُهٗ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ تَسْجُدُ لَكَ الْبَهَائِمُ وَالشَّجَرُ فَنَحْنُ اَحَقُّ اَنْ نَّسْجُدَ لَكَ فَقَالَ اعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَاَكْرِمُوْا اَخَاكُمْ وَلَوْ كُنْتُ اٰمِرُ اَحَدًا اَنْ يَّسْجُدَ لِاَحَدٍ لَاَمَرْتُ الْمَرْاَةَ اَنْ تَسْجُدَ لِزَوْجِهَا وَلَوْ اَمَرَهَا اَنْ تَنْقُلَ مِنْ جَبَلٍ اَصْفَرَ اِلٰى جَبَلٍ اَسْوَدَ وَمِنْ جَبَلٍ اَسْوَدَ اِلٰى جَبَلٍ اَبْيَضَ كَانَ يَنْبَغِيْ لَهَا اَنْ تَفْعَلَهٗ۔

(رواه احمد)

२५. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, न सवाल करे किसी आदमी से उसकी बीवी के तलाक़ देने का, ताकि समेट ले उसका हक़ अपने लिए और ताकि उसके शौहरों से निकाह कर ले, क्योंकि उसको वही कुछ मिलेगा, जो उसकी तक़्दीर में है।

—बुख़ारी व मुस्लिम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا تَسْأَلُ الْمَرْأَةُ طَلَاقَ أُخْتِهَا لِتَسْتَفْرِغَ صَحْفَتَهَا وَلْتَنْكِحْ فَإِنَّ لَهَا مَا قُدِّرَ لَهَا۔ (بخاری ومسلم)

जैसे एक आदमी के निकाह में कोई औरत है और मर्द दूसरी औरत से निकाह करना चाहता है। इस पर वह औरत यह कहती है कि पहले तू अपनी औरत को तलाक़ दे, फिर मैं तेरे से निकाह करूंगी। या दो औरतें एक आदमी के निकाह में हैं। एक बीवी यह कहे कि मेरी सौत को तलाक़ दे तो मैं तेरे घर रहती हूं, वरना नहीं। इसको हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया है, कहा है कि अपनी-अपनी तक़्दीर का ही शुक्र अदा करते रहो।

२६. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, लानत करे अल्लाह ना-महरम औरत को देखने वाले पर और उसी तरह ना महरम मर्द को दिखाने वाली औरत पर। —बैहक़ी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَعَنَ اللّٰهُ النَّاظِرَ وَالْمَنْظُوْرَ إِلَيْهِ (رواه البیہقی فی شعب الایمان)

आज कल हमारी बहनें इसकी एहतियात नहीं करतीं अक्सर शादी वग़ैरह के मौक़ों पर हमारी बहनें ऐसी बे-एहतियाती करती हैं कि ना-महरम की नज़रें उन पर पड़ जाती हैं। ऐसी औरत पर ख़ुदा की लानत और फिटकार होती है, इसलिए हम सबको इसकी बहुत एहतियात करनी चाहिए।

२७. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने कोई मर्द स अकेले में न

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

मिले, मगर तीसरा, उसमें शैतान ज़रूर आ जाता है। —तिर्मिज़ी

لَا يَخْلُوَنَّ رَجُلٌ بِامْرَأَةٍ اِلَّا كَانَ ثَالِثُهُمَا الشَّيْطٰنَ ـ (ترمذی)

यानी शैतान इन दोनों में जोश पैदा करता है और इन दोनों को बुरे कामों में लगा देता है।

२८. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, तुम्हारे घर में हिजड़े न आया करें। —बुख़ारी व मुस्लिम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَدْخُلَنَّ هٰؤُلَاءِ عَلَيْكُمْ ـ (بخاری ومسلم)

यानी हिजड़ों से हुज़ूर सल्ल० ने पर्दा करने की हिदायत फ़र्माई है, वे पर्दा करने में मर्दों की तरह हैं। इस ज़माने में अक्सर जगह देखा गया है, जब किसी जगह कोई बच्चा पैदा होता है, तो ये कमबख़्त बे-तकल्लुफ़ पर्दादार घरों में घुसे चले जाते हैं और बहनें, इस वजह से उनसे छिपती नहीं कि ये मर्द तो नहीं, फिर इनसे पर्दा किस बात का। यह सख़्त ग़लती है, इसलिए आइन्दा के लिए इससे तौबा करनी चाहिए।

२९. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, पर्दा करो अंधों से। उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़र्माती हैं कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िद्मत में कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! ये तो अंधे हैं, हमको कहां देखते और पहचानते हैं। इस पर आपने फ़र्माया कि अगर वह अंधा है तो क्या तुम तो अंधी नहीं। —अहमद तिर्मिज़ी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِحْتَجِبَا مِنْهُ فَقُلْتُ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ اَلَيْسَ هُوَ اَعْمٰى لَا يُبْصِرُنَا وَلَا يَعْرِفُنَا فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَفَعَمْيَاوَانِ اَنْتُمَا اَلَسْتُمَا تُبْصِرَانِهٖ ـ (رواہ احمد ترمذی)

कुछ औरतें अन्धों से पर्दा नहीं करती कि यह तो अंधा है, इससे

क्या पर्दा लेकिन इस हदीस से मालूम हुआ कि जिस तरह मर्द को औरत की ओर देखना दुरुस्त नहीं, वैसे ही अजनबी मर्द की ओर औरत का देखना भी दुरुस्त नहीं।

३०. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, औरत पर्दे में रहने की चीज़ है। फिर भी जब वह अपने घर से बे-ज़रूरत निकलती है, शैतान उसको मर्दों की नज़रों में अच्छा करके दिखला देता है, और बदमाश मर्द उसे ख़ूबसूरत औरत समझ कर उसके पीछे लग जाते हैं या मर्दों में बैठकर उसकी बातें करते हैं। —तिर्मिज़ी

قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَلْمَرْأَةُ عَوْرَةٌ فَاِذَا خَرَجَتْ اِسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ ۔ (ترمذی)

यानी ज़रूरी सफ़र वग़ैरह के लिए अपने घर से निकले, वरना नहीं, क्योंकि यह कमबख़्त शैतान लोगों की नज़रों को औरतों की तरफ़ फेर देता है और बदमाश मर्द हमारे बारे में क्या-क्या ख़्याल करने लगते हैं। आज कल फ़ैशन हो गया है कि बुर्क़ों पर ख़ूब कढ़ाई करेंगी, शलवार के पाँयचों पर बेल-बूटे बनायेंगी ताकि बाहर ना-महरम मर्दों की नज़रें पड़ें, वरना बुर्क़ा तो, सच में, पर्दे के लिए बनाया है और उसको बनाव-सिंगार का ज़रिया बना लें, कितनी ग़लत बात है। इन्हीं सब वजहों से सैकड़ों औरतें मज्लिसों और ताज़ियों से ग़ायब हो गईं और लोगों ने उन्हें ले जाकर बेच दिया, या उनकी आबरू लूट ली। यह जो कुछ हो रहा है, शरीअत की बातों पर अमल न करने से हो रहा है।

३१. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने सबसे ज़्यादा बरकत वाला वह निकाह है, जो मेहनत में आसान हो। —बैहक़ी

قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَعْظَمُ النِّكَاحِ بَرَكَةً اَيْسَرُهُ مَؤُنَةً ۔

यानी हल्का-फुल्का हो, न ज्यादा बोझ लड़के वालों पर पड़े और न ही लड़की वालों पर। आज कल हमारे यहां जहेज़ की रस्मों ने हमारे निकाहों को कितना मुश्किल बना दिया है, इसीलिए आज कल हमारे यहां बरकत नहीं रही। इन्हीं बेकार की रस्मों की वजह से बहुत से ग़रीब आदमी अपनी लड़कियों की तमाम जवानी ख़त्म कर देते हैं, न उनके पास देने को होता है, न वे बिना जहेज़ दिए शादी करने को तैयार होते हैं, क्योंकि इससे बिरादरी में नाक कटती है। तो हमको अपने निकाहों को बरकतदार बनाने के लिए इन बेकार की रस्मों को छोड़ देना चाहिए।

३२. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, ऐ औरतो! जब तुम आपस में औरतों के साथ कहीं बैठा करो, तो किसी औरत का हाल अपने शौहर के सामने इस तरह बयान न करो कि बिल्कुल (ही) उस औरत का अपने शौहर के सामने नक़्शा खींचकर रख दो कि फ़लानी के कपड़े ऐसे थे, ऐसी नाक है, ऐसी आंखें हैं, ऐसा क़द है। इससे हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़र्माया है, क्योंकि शायद इसका दिल उस औरत से लग जाये और फिर तुम रोती फिरो। —मुस्लिम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ
لَا تُبَاشِرُ الْمَرْأَةُ الْمَرْأَةَ فَتَنْعَتَهَا لِزَوْجِهَا
كَأَنَّهُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا۔ (مُسْلِم)

३३. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, लानत करे अल्लाह उन मर्दों पर जो सूरत बनाते हैं औरतों की।

क़ुर्बानि जाइये हुज़ूर सल्ल० के, कि कैसी-कैसी फ़ायदे की बातें हमको बतलाई।

यानी औरतों को मर्दों की काट-छाँट अपनाने से मना किया गया है इसलिए हमको अपने पहनावे वग़ैरह में इसका ज़रूर ख़्याल करना चाहिए।

—मज़ाहिरे हक़ भाग ३ पृ० ११

मुसलमान मर्द क्या करें

३४. हज़रत मुआविया क़ुरैशी रज़ि० फ़र्माते हैं, कि मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! बीवी का उसके शौहर के ऊपर क्या हक़ है? आपने फ़र्माया, जब तू खाये, उसको भी खिला, जब तू कपड़े पहने, उसे भी पहना, उसके मुंह पर मत मार, उसे गालियां न दे और न उसको छोड़, मगर घर में। —अहमद व अबूदाऊद

قَالَ مُعَاوِيَةُ الْقُشَيْرِيُّ قُلْتُ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ مَاحَقُّ زَوْجَةِ اَحَدِنَا عَلَيْهِ قَالَ اَنْ تُطْعِمَهَا اِذَا طَعِمْتَ وَتَكْسُوْهَا اِذَا كْتَسَيْتَ وَلَا تَضْرِبِ الْوَجْهَ وَلَا تُقَبِّحْ وَلَا تَهْجُرْ اِلَّا فِى الْبَيْتِ ۔ (رواہ احمد وابوداؤد)

यानी यह नहीं कि ज़रा नाराज़ हुए और उसके बाप के यहां पहुंचा दिया।

३५. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, सिखाओ तुम अपनी औरतों को सूरः नूर, पारा १८, क्योंकि इस सूरः में अल्लाह ने औरत और मर्द के

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ ۔ عَلِّمُوْا نِسَائَكُمْ سُوْرَةَ

आपसी ताल्लुक़ात और इज़्ज़त व आबरू की बातें फ़र्माई हैं।

(اربعین للفقیر) النُّوْرِ

३६. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, मना करो अपनी औरतों को बनाव, सिंगार का लिबास पहनने से और मस्जिद में इतराकर चलने से। —तिर्मिज़ी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. نَهُوْا نِسَاۤئَكُمْ عَنْ لُبْسِ الزِّيْنَةِ وَالتَّبَخْتُرِ فِى الْمَسْجِدِ

(رواه الترمذی)

अफ़सोस कि वहां तो हुक्म है रोकने का, यहां उनको बना-सजा कर जामा मस्जिद की सैर को ले जायें और ख़ुदा जाने कहां-कहां ले जायें, बड़े अफ़सोस की बात है।

३७. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, सबसे ज़्यादा पूरे ईमानवाला वह आदमी है, जो सबसे ज़्यादा अख़्लाक़ वाला हो, और तुममें बेहतर वह है, जो सबसे ज़्यादा अच्छा हो, अपनी बीवी के साथ। —तिर्मिज़ी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اَكْمَلُ الْمُؤْمِنِيْنَ اِيْمَانًا اَحْسَنُهُمْ خُلُقًا وَخِيَارُكُمْ خِيَارُكُمْ لِنِسَاۤئِهِمْ.

(رواه الترمذی وقال حسن صحیح)

यानी जिसका बर्ताव उसकी बीवी के साथ अच्छा नहीं, वह मर्द भी अच्छा नहीं और जिस मर्द का बर्ताव अपनी बीवी के साथ जितना अच्छा है, वह भी अल्लाह के नज़दीक उतना ही अच्छा है, इसलिये मर्दों को अपनी बीवियों के साथ अख़्लाक़ वाला, नर्म और हंसमुख रहना चाहिए। यह नहीं कि घर में आये और मुंह चढ़ा रहे।

३८. हुज़ूर सल्ल० जब अपने ज़नान ख़ाने में अपनी बीवियों के पास तशरीफ़ ले जाते, तो आपका उनके साथ यह बर्ताव होता—'सबसे ज़्यादा करम, सबसे ज़्यादा मेहरबान, ज़्यादा हंसने वाले, ज़्यादा मुस्कराने वाले।'

كَانَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِذَا خَلَى بِنِسَآئِهِ أَلْيَنَ النَّاسِ وَأَكْرَمَ النَّاسِ ضَحَّاكًا بَسَّامًا۔

(شعرانی ونسائی)

यहाँ तक कि घर के काम जो औरतों के होते हैं, वे ख़ुद अपने हाथों से अंजाम देते, जैसे आटा गूंधती हुई होतीं, तो आप पानी लाकर दे देते, कभी चूल्हे पर लकड़ियाँ पहुंचा देते, कभी चारपाई ढीली देखी तो अदवान कस देते, ग़रज़ यह कि अपने घर का काम, बावजूद दोनों जहान के बादशाह होने के, अपनी बीवियों के साथ बे-तकल्लुफ़ ख़ुद कर लिया करते थे। हम भी उनके उम्मती हैं हमको उनकी मुबारक सुन्नतों पर चलना चाहिए।

३९. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, न दुश्मनी रखे कोई मुसलमान मर्द अपनी मुसलमान बीवी से। अगर एक बात उसकी बुरी होगी तो दूसरी बात से तुम ख़ुश भी हो जाओगे।

—मुस्लिम

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَا يَضْرُكُ مُؤْمِنٌ مُؤْمِنَةً إِنْ كَرِهَ مِنْهَا خُلُقًا رَضِيَ مِنْهَا اٰخَرَ۔ (مسلم)

क्योंकि बीवी आख़िर इन्सान हैं। उनसे भी ग़लती हो जाती है अगर उससे हो गई, तो उससे आँख बचा जाओ और उसको माफ़ कर दो। यह कौन-सी इन्सानियत है, नमक ज़्यादा हो गया, मिर्च तेज हो गई और अपने घर में फ़साद मचा दिया। इसी से बहुत-से घर बिगड़ गए हैं। हदीस में आया है कि शैतान जैसी औरत और

मर्द के बिगाड़ से खुश होता है, किसी चीज़ से भी खुश नहीं होता। इसलिए हमको चाहिए कि शैतान को खुश करने का ज़रिया न बनें।

४०. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, बोझ उठाओ औरतों का उनकी ख्वाहिश पर। —शारानी

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ. اِحْمِلُوا النِّسَاءَ عَلٰی اَهْوَائِهِنَّ. (شعرانی)

यानी उनकी दिल चाहती चीज़ों पर। यह नहीं कि निकाह शौक़ में कर लिया अब इस बेचारी के न खाने की परवाह और न पहनने का ख्याल, बल्कि औरत की हर तरह की दिलदारी करनी चाहिए। अब वह बेचारी अगर कुछ नहीं कह सकती तो आख़िरत में सबसे बड़े हाकिम की अदालत में एक-एक चीज़ का जवाब देना होगा।

४१. फ़र्माया अल्लाह के रसूल सल्ल० ने, मोमिन जब अपने हाथ से नेवाला बनाकर अपनी बीवी के मुंह में देता है इस पर भी उसक सवाब होता है।

قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ. اَلْمُؤْمِنُ يُؤْجَرُ فِیْ كُلِّ اَمْرٍ حَتّٰی فِی اللُّقْمَةِ يَرْفَعُهَا اِلٰی فِیْ امْرَاَتِهٖ. (اربعین للفقیہ)

क्योंकि इससे बीवी का दिल होगा कि मेरे शौहर को मुझसे मुहब्बत है और ख़ूब समझ लो कि बीवी की दिलदारी करना बहुत बड़ा सवाब है। इसी तरह बीवी को भी शौहर की ख़ुशी का ख्याल रखना चाहिए अपने हाथ से नेवाला बनाकर खिलाने से आपस में मुहब्बत बढ़ती है।

मियां बीवी कैसे रहें ?

१. यह ख़ूब समझ लो कि मियां बीवी का एक ऐसा साथ है कि सारी उम्र उसी में बसर करना है। अगर दोनों का दिल मिला हुआ

है तो इससे बढ़कर कोई नेमत नहीं और अगर ख़ुदा न करे, दोनों के दिल में फ़र्क़ आ गया तो इससे बढ़कर कोई मुसीबत नहीं। इसलिए जहाँ तक हो सके, मियाँ का दिल हाथ में लिये रहो और उसकी आँख के इशारे पर चला करो। जैसे अगर वह हुक्म दे कि रात भर हाथ बाँधे खड़ी रहा करो, तो दुनिया और आख़िरत की भलाई और कामयाबी हासिल करो।

२. किसी वक़्त कोई ऐसी बात न करो, जो उसकी तबीयत के ख़िलाफ़ हो, जैसे अगर वह दिन को रात बतला दे, तो तुम भी दिन को रात कहने लगो।

३. कमसमझी और अन्जाम न सोचने की वजह से कुछ बीवियाँ ऐसी बातें कर बैठती हैं, जिससे मर्द के दिल में मैल और फ़र्क़ आ जाता है। कहीं बे-मौक़ा ज़बान चला दी, कोई बात ताने की कह दी, गुस्से में जली-कटी बातें कह दीं कि मर्द को ख़ामख़ाह सुनकर बुरा लगे। फिर जब उसका दिल फिर जाता है (हट जाता है) और उस में फ़र्क़ पड़ जाता है, तो रोती-फिरती है। यह ख़ूब समझ लो कि शौहर के दिल में मैल आ जाने के बाद अगर दो-चार दिन में तुमने कह-सुनकर उसको मना भी लिया, तब भी वह बात नहीं रहती जो पहले थी। फिर हज़ार बातें बनाओ, मजबूरियाँ ज़ाहिर करो। लेकिन जैसें पहले दिल साफ़ था, अब वैसी मुहब्बत नहीं रहेगी, जब कोई बात होती है, तो यही ख्याल आ जाता है कि यह वही है जिसने फ़लाँ-फ़लाँ दिन ऐसा कहा था, इसलिये अपने शौहर के साथ ख़ूब सोच-समझ कर रहना चाहिए कि ख़ुदा और रसूल सल्ल० की भी ख़ुशी हो और दुनिया व आख़िरत दोनों दुरुस्त हो जायें। समझदार औरतों को कुछ बताने की तो कोई ज़रूरत ही नहीं है, क्योंकि वे ख़ुद ही अच्छे बुरे को देख लेती हैं, लेकिन फिर भी हम कुछ ज़रूरी बातें बयान करते हैं। तुम उनको ख़ूब समझ लो ताकि बातें ख़ूब अच्छी तरह मालूम हो जाये।

४. शौहर की हैसियत से ज़्यादा ख़र्च न मांगो।

५. जो कुछ भी तुमको मिल जाए, उसी पर ख़ुश रहो और अपना घर समझ कर चटनी-रोटी खाकर गुज़ारा कर लो।

६. अगर कभी कोई कपड़ा ज़ेवर पसन्द आया, तो भी, शौहर के पास ख़र्च न हो, तो उसकी फ़र्माइश न करो और न उसके मिलने पर अफ़सोस करो, बल्कि अपने मुंह से कोई लफ़्ज़ भी बिल्कुल न निकालो। ख़ुद सोचो कि अगर तुमने कहा तो तुम्हारा ग़रीब शौहर अपने दिल में क्या कहेगा कि उसे हमारी परेशानी का कुछ भी ख्याल नहीं कि ऐसी बे-मौक़ा फ़र्माइश करती है। बल्कि अगर शौहर अमीर हो, तब भी जहाँ तक हो सके, ख़ुद किसी बात की फ़र्माइश न करो, हाँ, अगर वह ख़ुद तुमसे पूछे कि तुम्हारे वास्ते क्या लाऊँ, तो बतला दो, क्योंकि फ़र्माइश करने से बीवी नज़रों से गिर जाती है और उसकी बात-टेढ़ी कच्ची हो जाती है।

७. किसी बात पर ज़िद की हठ मत करो। अगर कोई बात तुम्हारे खिलाफ़ भी हो, तो उस वक़्त जाने दो, फ़िर किसी दूसरे वक़्त मुनासिब तरीक़े से तै कर लेना।

८. अगर शौहर के यहाँ तकलीफ़ के साथ गुज़र-बसर हो रहा है, तो किसी के सामने उसको कभी ज़ुबान पर न लाओ और हमेशा ख़ुशी ज़ाहिर करती रहो कि मर्द को रंज न पहुंचे और तुम्हारे इस क़िस्म के तरीक़े में उसका दिल तुम्हारी मुट्ठी में हो जाएगा।

९. अगर शौहर तुम्हारे लिए कोई चीज़ ला दे तो तुमको पसन्द आए या न आए, हमेशा उस पर ख़ुशी ज़ाहिर करो। यह न हो कि यह चीज़ बुरी है, हमारे पसन्द की नहीं है, इससे उसका दिल थोड़ा हो जायेगा और फिर तुम्हारे वास्ते कभी भी कोई चीज़ लाने को उसका दिल न चाहेगा और अगर उसकी तारीफ़ करके ख़ुशी से ले लोगी तो उसका दिल और बढ़ेगा और फिर उससे बेहतर चीज़ ला देगा, कभी भी ग़ुस्से में आकर शौहर की ना-शुक्री न करो और यों न

कहने लगो कि इस कमबख़्त उजड़े के यहाँ आकर मैंने क्या देखा, बस सारी उम्र मुसीबत और तकलीफ़ से कटी। माँ बहन ने मेरी क़िस्मत ही फोड़ दी कि मुझे ऐसी बला में फांस दिया, ऐसी आग में झोंक दिया, क्योंकि ऐसी बातों से मर्द के दिल में जगह नहीं रहती।

हदीस शरीफ़ में है, अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया है कि मैंने दोज़ख़ में औरतें बहुत देखी हैं किसी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल दोज़ख़ में औरतें ज़्यादा क्यों जायेंगी ? तो आपने फ़र्माया कि ये औरों पर लानत बहुत किया करती हैं और अपने शौहर की ना-शुक्री बहुत किया करती हैं, तुम ख़्याल करो कि शौहर की नाशुक्री कितनी बुरी चीज़ है। और किसी पर लानत करने का मतलब यह है कि तुम यह कहो कि फ़लाँ पर ख़ुदा की मार हो, उस पर ख़ुदा की फटकार, फ़लानी का लानती चेहरा है, मुंह पर तेरे लानत बरस रही है, ये सब बातें बहुत बुरी हैं।

१०. शौहर को किसी बात पर ग़ुस्सा आ गया तो ऐसी बात मत कहो, जिससे उससे ग़ुस्सा और ज़्यादा हो जाये। हर वक़्त मिज़ाज देख कर बात करो, अगर देखो कि इस वक़्त हंसी-दिल्लगी में ख़ुश है तो हंसी दिल्लगी करो और नहीं तो हंसी-दिल्लगी न करो, जैसा मिज़ाज देखो वैसी बातें करो। किसी बात पर तुम से नाराज़ होकर रूठ गया, तो तुम भी मुंह फुलाकर न बैठ रहो, बल्कि ख़ुशामद करके बताकर, हाथ जोड़ करके, जिस तरह भी बने उसको मना लो. चाहे तुम्हारी ग़लती हो या न हो और शौहर ही की ग़लती हो, तब भी तुम हरगिज़ न रूठो और हाथ जोड़ कर अपनी ग़लती माफ़ कराने में अपनी इज़्ज़त समझो।

११. ख़ूब समझ लो कि मियाँ-बीवी का मिलाप सिर्फ़ ख़ाली-ख़ाली मुहब्बत से नहीं होता, बल्कि मुहब्बत के साथ शौहर का अदब भी करना ज़रूरी है। शौहर को अपने बराबर के दर्जे में समझना बहुत बड़ी ग़लती है।

१२. मियां से हरगिज़ कभी अपनी कोई ख़िद्मत न लो। अगर वह मुहब्बत में आकर कभी तुम्हारे हाथ-पांव या सिर दबाने लगे, तो तुम न करने दो। भला सोचो तो सही कि अगर तुम्हारा बाप ऐसा करे तो क्या तुमको गवारा होगा। फिर शौहर का दर्जा तो बाद से भी ज्यादा है। उठने-बैठने में, बातचीत करने में, मतलब यह कि हर बात में अदब-तमीज़ का पास और ख़्याल रखो और अगर ख़ुद तुम्हारी ही ग़लती हो तो ऐसे वक़्त ऐंठ कर अलग बैठना तो और भी पूरी बेवक़ूफ़ी है और नादानी है, ऐसी बातों से शौहर का दिल फट जाता है।

१३. तुम्हारा शौहर जब कभी परदेस से आये तो उसकी ख़ैरियत पूछो कि वहां आप किस तरह रहे, आपको कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई, हाथ-पांव पकड़ लो कि आप थक गए होंगे और फिर सबसे पहले इन से खाने को पूछो कि अगर आपको भूख हो तो खाना लाऊं। अगर कह दे कि ले आओ तो सबसे पहले पानी का लोटा लाकर उसके हाथ धुलाओ और जो कुछ हो सके, उनके सामने रख दो और गिलास भर कर साथ ही पानी भी रख दो। जब वह खा पीकर लेट जायें तो उनके हाथ-पांव पकड़ लो और उनसे यह कहो कि लाइये आपका बदन दबा दूं, आप सफ़र की वजह से काफ़ी थक गए होंगे वरना अगर गर्मी का मौसम हो, तो पंखा झलने खड़ी हो जाओ, मतलब यह कि उसकी राहत व आराम की बातें करो। उससे रुपए पैसे की बातें हरगिज़ न करने लगो, कि हमारे लिए क्या-क्या चीज़ लाए, कितना रुपया लाये। यह भी न करो कि उसकी जेब टटोलने और उसके बटवे की तलाशी लेने लगो। रुपए का बटवा कहां है, देखें कितना रुपया है। जब वह ख़ुद दे दे तो ले लो, यह न पूछो कि तनख़्वाह तो बहुत है, इतने महीनों में बस इतना ही लाये। तुम बहुत ख़र्च कर डालते हो। आख़िर इतना रुपया कहां ख़र्च कर डाला, क्या कर

डाला, कभी ख़ुशी के वक़्त सलीक़े के साथ बातों-बातों में पूछ डालो, तो ख़ैर इसमें कोई हरज नहीं।

१४. अगर शौहर के माँ-बाप ज़िन्दा हों और वह रुपया-पैसा सब उन्हीं को दे, तुम्हारे हाथ न रखे तो बुरा न मानो, बल्कि अगर तुमको दे, तब भी अक़्लमन्दी की बात यही है कि तुम अपने हाथ में न लो और यह कहो कि उन्हीं को दीजिए ताकि सास-ससुर का तुम्हारी ओर से दिल मैला न हो और तुमको बुरा न कहें कि हमारे लड़के को अपने फन्दे में कर लिया और जब तक सास-ससुर ज़िन्दा रहें, उनकी ख़िद्मत और उनकी ताबेदारी को अपना फ़र्ज़ जानो और इसी में अपनी इज़्ज़त समझो और सास-नन्दों से अलग होकर रहने की हरगिज़ फ़िक्र न करो कि सास-नन्दों से बिगाड़ हो जाने की यही जड़ है। ख़ुद सोचो कि माँ बाप ने उसे पाला-पोसा और अब बुढ़ापे में इस उम्मीद पर उसकी शादी की कि हमको आराम मिले और जब बहू आई तो डोले से उतरते ही इस फ़िक्र में पड़ गई कि मियां आज ही से माँ-बाप को छोड़ दें, क्योंकि फिर जब शौहर के माँ-बाप को मालूम होता है कि यह हमारे बेटे को हमसे छुड़ाती हैं तो फ़साद फैलता है, इसलिए तुम ख़ानदान वालों के साथ मिल-जुल कर रहो।

१५. अपना मामला शुरू से अदब-लिहाज़ का रखो। छोटों पर मेहरबानी, बड़ों का अदब किया करो। अपना कोई काम दूसरों के ज़िम्मे न रखो और अपनी कोई चीज़ बे-जगह पड़ी न रहने दो कि फ़्लां उसको उठाये।

१६. जो काम सास-नन्दें करती हैं, तुम उसके करने से शर्माओ नहीं। तुम ख़ुद बे-कहे उनसे ले लो और कर दो। इससे ससुराल वालों के दिल में तुम्हारी मुहब्बत पैदा हो जाएगी।

१७. जब दो आदमी चुपके-चुपके बातें करते हों तो उनसे अलग हो जाओ और इसकी खोज न लगाओ कि आपस में क्या बातें हो रही थीं और ख़्वामख़्वाह यह भी न ख़्याल करो कि कुछ हामरी

ही बातें होंगी।

१८. यह भी ज़रूर ख़्याल रखो कि ससुराल में बे-दिली से मत रहो, गर्चे यह नया घर है, नये लोग होने की वजह से दिल न लगे, ऐसा हो सकता है, लेकिन जी को समझाना चाहिए, न कि वहां रोने बैठ जाओ, जब देखो तो रो रही हैं, जाते देर नहीं हुई और आने का तक़ाज़ा शुरू कर दिया।

१६. बात-चीत में ख़्याल रखो। न तो आप ही आप इतनी बक-बक करो जो बुरी लगे, न इतनी कम कि मिन्नत-ख़ुशामद के बाद भी न बोलो कि यह भी बुरा है और घमंड समझा जाता है।

२०. अगर ससुराल में कोई बात नागवार और बुरी लगे तो मैके में आकर चुग़ली न खाओ। ससुराल की ज़रा-ज़रा सी बात आकर मां से कहना और माओं का ख़ुद ससुराल की बातें खोद-खोद कर पूछना बड़ी बुरी बात है। इससे आपस में लड़ाई-झगड़े पड़ते हैं, उसके सिवा और कोई फ़ायदा नहीं होगा।

२१. शौहर की चीज़ों को ख़ूब सलीक़े और तमीज़ से रखो। रहने का कमरा साफ़ रखो, गन्दगी न रहने दो। बिस्तर मैला-कुचैला न होना चाहिए, शिकन निकाल डालो, तकिया मैला हो गया हो तो ग़िलाफ़ बदल दो, न हो तो सी डालो। जब शौहर के कहने पर तुमने किया तो इसमें क्या बात रही। मज़ा तो इसी में है कि बे-कहे सब चीज़ें ठीक कर दो, जो चीज़ें तुम्हारे पास रखी हों, उनकी हिफ़ाज़त रखो। कपड़े हों तो तह करके रखो, यों लापरवाही से इधर-उधर न डालो, बल्कि क़रीने से किसी सन्दूक़ वग़ैरह में रखो, कभी किसी काम में हीला-बहाना न करो, न कभी झूठी बातें बनाओ कि इससे एतबार जाता है, फिर सच्ची बात का भी यक़ीन नहीं आता।

२२. अगर शौहर तुमको ग़ुस्से में कभी कुछ बुरा-भला कहे, तो तुम सब्र करो और बिल्कुल जवाब न दो, बल्कि ख़ामोश हो जाओ,

चाहे वह कुछ भी कहता रहे, तुम चुपकी बैठी रहो। ग़ुस्सा उतर जाने के बाद देखना, वह ख़ुद शर्मिन्दा होगा और तुमसे कितना ख़ुश रहेगा और फिर कभी इन्शाअल्लाह तुम पर ग़ुस्सा न करेगा और अगर तुम भी रूठीं तो बात बढ़ जाएगी, फिर न मालूम कहां तक नौबत हहुंचे।

२३. ज़रा-ज़रा से शुबहे पर तोहमत न लगाओ कि तुम फ़्लानी के साथ बहुत हंसा करते हो, वहाँ ज़्यादा जाया करते हो, वहां बैठे क्या करते हो, कि इसमें मर्द अगर बे-क़सूर हो तो तुम ही सोचो कि उसको कितना बुरा लगेगा और अगर सचमुच उसकी आदत ही ख़राब है, तो यह ख़्याल करो कि तुम्हारे ग़ुस्सा करने और बकने-झकने से या और कोई दबाव डाल कर ज़बरदस्ती करने से तुम्हारा ही नुक़्सान है। अपनी तरफ़ से दिल मैला करना है तो कर ले, इन बातों से कहीं आदत जाया करती है। आदत छुड़ाना हो तो अक़्लमन्दी से रहो। अकेले में चुपके-चुपके समझाओ-बुझाओ। अगर समझाने और अकेले में शर्म दिलाने से भी आदत न छूटे तो ख़ैर सब्र करके बैठी रहो, लोगों के सामने गाती न फिरो, और उसको बदनाम और रुसवा न करो, तेज़ तेज़ होकर उसको मत दबाओ कि इस तरीक़े से ज़िद ज़्यादा बढ़ जाती है और ग़ुस्से में आकर वह काम ज़्यादा करने लगता है, अगर तुम ग़ुस्सा करोगी, और लोगों के सामने बक-झक करके रुसवा करोगी, तो जितना तुमसे बोलता था, उतना भी न बोलेगा, फिर उस वक़्त रोती फिरोगी और यह ख़ूब याद रखो कि मर्दों को ख़ुदा ने शेर बनाया है, दबाव और ज़बरदस्ती से हरगिज़ क़ाबू में नहीं आ सकते। उनको क़ाबू में करने की बहुत आसान तरकीब ख़ुशामद और ताबेदारी है, उन पर ग़ुस्सा, गर्मी करके दबाव डालना बड़ी ग़लती और ना-समझी है। अगचे इसका अन्जाम अभी समझ में नहीं आता, लेकिन जब बिगाड़ की जड़ पड़ गयी तो कभी न कभी ज़रूर इसका ख़राब नतीजा पैदा होगा।

लखनऊ में एक बीवी के मियां बड़े बद-चलन थे। दिन रात बाहरी बाज़ारी औरतों के पास रहा करते थे। घर में बिल्कुल नहीं आते और दिलचस्प बात यह है कि बाज़ारी औरत फ़रमाइश करती रहती कि आज पुलाव पके, आज फ़्लां चीज़ पके, और वह बेचारी दम नहीं मारती। जो कुछ मियां कहता, रोज़ाना बराबर पका कर खाना बाहर भेज देती और कभी कुछ सांस नहीं भरती। देखो सारे इन्सान उस बीवी की कैसी वाह-वाह करते है और ख़ुदा के यहां जो रुत्बा उसको मिलेगा, वह अलग रहा और जिस दिन मियां को अल्लाह ने हिदायत दी और बद-चलनी छोड़ दी उस दिन बीवी के ग़ुलाम ही हो जाएंगे।

बच्चे कैसे पाले जाये ?

यह बात याद रखने की है कि बचपन में जो आदत भली या बुरी पड़ जाती है, वह उम्र भर नहीं जाती, इसलिए बचपन से जवान होने तक की इन बातों का एक तरतीब के साथ ज़िक्र किया जाता है :—

१. नेक और दीनदार औरत का दूध पिलायें। दूध का बड़ा असर होता है।

२. औरतों की आदत है कि बच्चों को कहीं सिपाही से डराती हैं, कहीं और डरावनी चीज़ों से। यह बुरी बात है, इससे बच्चे का दिल कमज़ोर हो जाता है।

३. बच्चे को दूध पिलाने के लिए और खाना खिलाने के लिए वक़्त मुक़र्रर रखो, ताकि वह तन्दुरुस्त रहे।

४. साफ़ सुथरा रखो और गर्मी में उसको रोज़ाना नहलाया करो और सर्दी में गर्म पानी से दोपहर के वक़्त रोज़ाना नहलाया

करो, कि इससे तन्दुरुस्ती क़ायम रहती है।

५. उसका बहुत बनाव-सिंगार न किया करो।

६. अगर लड़का है तो उसके सिर पर बाल न बढ़ाओ।

७. रात के वक़्त रोज़ाना उसकी आंख में सुरमा लगाया करो।

८. अगर लड़की है, उसको, जब तक पर्दे में बैठने लायक़ न हो ज़ेवर न पहनाओ। इससे एक तो उसकी जान का ख़तरा है, दूसरे बचपन ही से ज़ेवर का शौक़ दिल में होना अच्छा नहीं।

९. बच्चों के हाथ से ग़रीबों को खाना, कपड़ा पैसा और ऐसी चीज़ें दिलवाया करो। इसी तरह खाने-पीने की चीज़ उनके भाई बहनों को या और बच्चों को बतला दिया करो, ताकि उनमें खैर खैरात की आदत पड़े, मगर यह याद रखो तुम अपनी ही चीज़ें उनके हाथ से दिलवाया करो, खुद जो चीज़ शुरू से उन्हीं की हो, उसको दिलवाना किसी को दुरुस्त नहीं।

१०. ज़्यादा खाने वालों की बुराई उनके सामने किया करो, मगर किसी का नाम लेकर नहीं, बल्कि इस तरह कि जो कोई बहुत खाता है, लोग उसको हब्शी समझते हैं उसको बैल जानते हैं।

११. अगर लड़का हो, सफ़ेद कपड़े से लगाव उसके दिल में पैदा करो और रंगीन और तकल्लुफ़ के लिबास से उसको नफ़रत दिलाओ कि ऐसे कपड़े लड़कियां पहनती हैं, तुम माशाअल्लाह मर्द हो, हमेशा उसके सामने ऐसी बातें करो।

१२. अगर लड़की हो ज़्यादा मांग-चोटी, बहुत अच्छे पहनावे और तकल्लुफ़ के कपड़ों की आदत न डालो।

१३. उसकी सब ज़िद्द न पूरी करो कि उससे मिज़ाज बिगड़ जाता है।

१४. चिल्ला कर बोलने से रोको, खास कर अगर लड़की हो तो चिल्लाने से खूब डांटो, वरना वही आदत हो जाएगी।

१५. जिन बच्चों की आदतें ख़राब हैं या पढ़ने-लिखने से भागते

हैं, या तकल्लुफ़ के खाने-कपड़े के आदी हैं, उनके पास बैठने और उनके साथ खेलने से उनको बचाओ।

१६. इन बातों से बच्चों को नफ़रत दिलाती रहो, ग़ुस्सा, झूठ बोलना, किसी को देखकर जलना या लालच करना, चोरी, चुग़ली खाना, अपनी बात को पच करना, खामखाह उसको बनाना, बे-फ़ायदा बहुत सी बातें करना, बे-बात हंसना, धोखा देना, बुरी-भली बात का न सोचना और जब इन बातों में से कोई बात हो जाए, फ़ौरन उसको रोको, उसकी तम्बीह करो, नरमी से समझाओ फिर भी न रुके, तो सख़्ती करो।

१७. अगर कोई चीज़ तोड़-फोड़ दे या किसी को मार बैठे, मुनासिब सज़ा दो, ताकि फिर ऐसा न करे। ऐसी बातों में लाड़-प्यार हमेशा के लिए बच्चों को खो देता है।

१८. बहुत सवेरे न सोने दो।

१९. सवेरे जागने की आदत डालो।

२०. जब सात साल की उम्र हो जाये नमाज़ की आदत डालो।

२१. जब मक्तब में जाने के क़ाबिल हो जाये, सबसे पहले क़ुरआन शरीफ़ पढ़वाओ।

२२. जहां तक हो सके, दीनदार उस्ताद से पढ़ाओ।

२३. मक्तब में जाने में कभी रियायत न करो।

२४. किसी-किसी वक़्त उनको नेक क़िस्से और कहानियां सुनाया करो।

२५. उनको ऐसी किताबें मत देखने दो, जिनमें आशिक़ी-माशूक़ी की बातें या शरअ के ख़िलाफ़ मज़मून या और बेहूदा क़िस्से ग़ज़लें वग़ैरह हों।

२६. ऐसी कताबें पढ़वाओ, जिसमें दीन की बातें और दुनिया की ज़रूरी कार्रवाई आ जाये।

२७. मक्तब से आ जाने के बाद किसी क़दर दिल बहलाने के

लिए उसको खेलने की इजाज़त दो ताकि उसकी तबीयत ढीली न होने पाये, लेकिन खेल ऐसा हो, जिसमें कोई गुनाह न हो और चोट लगने का डर न हो।

२८. आतिशबाज़ी या बाजा, बेकार की चीजें मोल लेने के लिए पैसे न दो।

२९. खेल-तमाशे दिखलाने की आदत न डालो।

३०. औलाद को कोई ज़रूरी हुनर सिखला दो, जिससे ज़रूरत और मुसीबत के वक़्त चार पैसे हासिल कर वह अपना और अपने बच्चों का गुज़ारा कर सके।

३१. लड़कियों को इतना लिखना सिखा दो कि ज़रूरी ख़त और घर का हिसाब-किताब लिख सकें।

३२. बच्चों की आदत डालो कि अपना काम अपने हाथ से किया करें, अपाहिज और सुस्त न हो जायें। उनसे कहो कि रात को बिछौना अपने हाथ से बिछायें, सुबह को सवेरे उठ कर तह करके एहतियात से रख दें कपड़ों की गठरी अपने इन्तिज़ाम में रखें, उधड़ा फटा कपड़ा ख़ुद ही सी लिया करें, कपड़े चाहे मैले हों या साफ़, ऐसी जगह रखें जहां कीड़े चूहे न हों। धोबिन को ख़ुद गिन कर दें और लिख लें और गिन कर पड़ताल कर लें।

३३. लड़कियों को ताकीद करो कि जो ज़ेवर तुम्हारे बदन पर है, रात को सोने से पहले और सुबह को जब उठो, देखभाल लिया करो।

३४. लड़कियों से यह कहो कि जो काम खाने-पकाने, सीने-पिरोने कपड़े रंगने, चीज़ बुनने को घर में हुआ करे, उसमें ग़ौर करके देखा करो क्योंकर हो रहा है इस तरह ये बातें आसानी से ज़ेहन में बैठ जायेंगी।

३५. जब बच्चे से कोई बात ख़ूबी की ज़ाहिर हो, उस पर ख़ूब शाबाशी दो, प्यार करो बल्कि उसको कुछ इनाम दो ताकि उसका दिल बढ़े। जब उसकी बुरी बात देखो, तो उसे अकेले में समझाओ

कि देखो बुरी बात है, देखने वाले क्या कहते होंगे और जिस-जिसको खबर होगी, वह दिल में क्या कहेगा। खबरदार! फिर न कहना, अच्छे लड़के ऐसा नहीं किया करते और अगर फिर वही करे तो मुनासिब सज़ा दो।

३६. माँ को चाहिए कि बच्चों को बाप से डराती रहे।

३७. बच्चे को कोई काम छिपाकर न करने दो। खेल हो या खाना हो या कोई और काम हो, जो काम छिपाकर करेगा, समझ जाओ कि वह उसको बुरा समझता है, तो अगर वह बुरा है, तो उससे छुड़ाओ और अगर अच्छा है, जैसे खाना-पीना तो उससे कहो कि सबके सामने खाये-पिये।

३८. कोई काम मेहनत और कसरत का उसके ज़िम्मे कर दो, जिससे तन्दुरुस्ती भी रहे और हिम्मत भी बंधे, सुस्ती न आने पाये, जैसे लड़कों को डंड, मुगदर करना, एक-आध मील चलना और लड़कियों के लिए चक्की या चरखा चलाना ज़रूरी है। इसमें यह भी फ़ायदा है कि इन कामों को वे ऐब न समझेंगे।

३९. चलने में ताकीद करो कि बहुत जल्दी न चले। निगाह ऊपर उठा कर न चले।

४०. उसको आजिज़ी अख्तियार करने की आदत डालो। ज़ुबान से, चाल से, बर्ताव से, शेखी न बघारने पाये, यहाँ तक कि अपने साथियों में बैठकर अपने कपड़े या मकान या खानदान या किताब व क़लम या तख्ती तक की तारीफ़ न करे।

४१. कभी-कभी उसको दो-चार पैसे दे दिया करो ताकि अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ खर्च किया करे, मगर उसको यह आदत न डालो कि कोई चीज़ तुमसे छिपा कर खरीदे।

४२. उसको खाना खाने का तरीक़ा और महफ़िल में उठने-बैठने का तरीक़ा सिखलाओ, जैसे :—

उसे बताओ कि दाहिने हाथ से खाना खाया करो, शुरू में

बिस्मिल्लाह कहो, अपने सामने से खाओ, औरों से पहले मत खाओ, खाने को घूर कर न देखो, खाने वालों की तरफ़ न देखो, बहुत जल्दी-जल्दी न खाओ, ख़ूब चबा-चबा कर खाओ, जब तक लुक़्मा न निगल लो, दूसरा लुक़्मा मुंह में न रखो। सालन तमीज़ के साथ लुक़्मा में लगाओ ताकि शोरबा वग़ैरह कपड़े पर न टपकने पाये और उंगलियां ज़रूरत से ज़्यादा न सनने पायें। लुक़्मा चबाते वक़्त चपड़-चपड़ न करो, खाना खाते वक़्त नंगा सिर न रखो, खाने से पहले और खाने के बाद हाथ धो लो। पानी सीधे हाथ से और तीन सांस में पियो, खाने के बाद अल्लाह का शुक्र करो।

४३. उसे सिखाओ कि जिससे मिलो, अदब से मिलो, नर्मी से बोलो, महफ़िल में थूको नहीं, वहां नाक साफ़ न करो, अगर ऐसी ज़रूरत हो, वहां से अलग चले जाओ। वहां अगर जम्हाई या छींक आये तो मुंह पर हाथ रख लो। आवाज़ धीमी रखो, किसी की तरफ़ पीठ न करो। ठोढ़ी के नीचे हाथ देकर न बैठो, उंगलियों को न चटखाओ, बे-ज़रूरत बार-बार किसी की ओर न देखो, अदब से बैठी रहो, बहुत न बोलो, बात-बात में क़सम न खाओ, जहां तक मुम्किन हो, बोलने पहले न करो। जब दूसरा आदमी बात करे, पूरे ध्यान से सुनो, ताकि उसका दिल न दुखे, हां, अगर गुनाह की बात हो तो न सुनो या मना कर दो, या वहां से उठ जाओ। जब तक कोई आदमी बात न पूरी करे बीच में न बोलो। जब कोई आये महफ़िल में जगह न हो, ज़रा अपनी जगह से खिसक जाओ। मिलकर बैठ जाओ, ताकि जगह हो जाये। जब किसी से मिलो या रुख़सत होने लगो, 'अस्सलामुअलैकुम' कहो और जवाब में 'वअलैकुम अस्सलाम' कहो और तरह-तरह के लफ़्ज़ न कहो।

ससुराल में कैसे रहें

१. हरहाल में सास का अदब इस तरह करो जैसे अपनी प्यारी मां का किया जाता है।

२. हर वक्त उनकी खुशियों का ख्याल रखो, चाहे तुम्हें तकलीफ़ हो या राहत, लेकिन उनकी मर्ज़ी के खिलाफ़ एक क़दम न चलो ज़ुबान से कोई ऐसा लफ्ज़ न निकालो, जिससे उनको तकलीफ़ हो जब उनसे कुछ कहो या कोई बात करो तो ऐसे लफ्ज़ इस्तेमाल करो, जो बुज़ुर्गी के लिये आते हैं।

३. सास तुमको अगर किसी मामले में तम्बीह करे, तो खामोशी से सुन लो। अगर मान लो, वह कड़वी बात भी कहें, तो खामोश रहो, पलट कर जवाब न दो।

४. उनकी खिदमत, अपनी मां की तरह करो। अगर किसी काम को दूसरे से कहें, तो तुम उसे अपने लिये समझ कर अंजाम दो।

५. ससुर की इज्ज़त और एहतराम अपने मेहरबान बाप की तरह करो।

६. जिस तरह हमने सास के साथ बात करने का अदब बयान किया है, इसी तरह यहां भी ख्याल रखो। जैसे, कोई पूछे कि वह कहां गये हैं, जवाब में कहो कि फ़लां जगह तशरीफ़ गये हैं अगर कोई पूछे कि फ़लां मामले में उन्होंने क्या कहा है तो तुम जवाब में कहो, इस तरह फ़र्माया है। यहां तक कि उनके आराम पहुंचाने और उनकी खिदमत करने के बराबर कोशिश करती रहो।

किसी जश्न वग़ैरह में जाना हो तो अपने शौहर या ससुर या सास से इजाज़त लेकर जाओ। वे इजाज़त दें तो जाओ, वरना मत जाओ।

७. नन्द, देवरानी, जेठानी के साथ अपनी बहनों की तरह बर्ताव करो, छोटी हो तो छोटी बहनों की तरह बर्ताव करो, क्योंकि जैसा तुम उनसे बर्ताव करोगी, वैसा ही बर्ताव वे तुम्हारे साथ करेंगी। आपस में एक दूसरे की बुराई न करो, किसी में कोई ऐब या बुराई देखो तो दूसरे से उसका ज़िक्र न करो।

८. किसी की बुराई उसकी पीठ के पीछे करना ग़ीबत है और ग़ीबत बहुत बड़ा गुनाह है। ग़ीबत ही से आपस में रंज़िश, लड़ाई-झगड़े होते हैं। कुछ औरतें कह देती हैं कि हम कोई ग़लत थोड़े ही कह रहे हैं, उसमें तो यह बुराई मौजूद है। याद रखो कि ग़ीबत इसी का नाम है कि किसी के पीछे उसकी बुराई का ज़िक्र किया जाय और अगर उसमें वह बुराई नहीं है और फिर की जाए तो वह ग़ीबत से भी बड़ा गुनाह है।

९. जो बच्चे तुम्हारे ससुर की या उनके क़रीबी रिश्तेदारों की औलाद हों, उनके साथ बड़ी मुहब्बत और मेहरबानी से पेश आओ। नबी करीम सल्ल० ने फ़र्माया कि जो आदमी बड़ों का अदब न करे और छोटों से मुहब्बत न करे, वह हममें नहीं है।

१०. जहाँ तक हो सके, इस बात का ख्याल रखो कि छोटों से प्रेम और बड़ों की इज्ज़त उनके मर्तबे के एतबार से होनी चाहिए।

११. घर में अगर नौकरानी हो तो उसकी ताक़त से ज्यादा उससे काम न लो। अगर कोई काम उस पर भारी हो तो ख़ुद उसकी मदद करनी चाहिए उससे सख़्ती से पेश न आना चाहिए। अगर वह बीमार हो या उसको कोई तकलीफ़ हो तो उसकी ख़िद्मत करो, उसकी देख-भाल करो, ख़ुद उसका काम कर दो, कोई अच्छी चीज़ या नई तरकारी घर में आये, थोड़ी बहुत उसको भी दे दो। इससे उसके दिल में तुम्हारी मुहब्बत पैदा होगी, तुम्हारा वह हमदर्द बन जायेगी और अल्लाह की ख़ुशी जो हासिल होगी वह अलग लेकिन इतना ज्यादा सिर पर भी न चढ़ाओ कि वह गुस्ताख़ और लापर-

वाह हो जाए क्योंकि यह बात नौकरानी के लिए भी नुक्सानदेह है कि आइन्दा दूसरी जगह नौकरी न कर सकेगी। जहां जायेगी वहां काम को अच्छी तरह अंजाम न दे सकेगी, इसलिए उसे कोई नौकर भी न रखेगा।

घर कैसे चलायें

१. घर अगर अच्छे ढंग से चलाया जाये तो रोज़ी की कमी के बावजूद घर में रौनक़ रहती है और घर से ग़रीबी और फ़क़ीरी नहीं टपकती। अगर अच्छा इन्तिज़ाम न हो तो दौलतमंदी के बावजूद भी घर में नहूसत और ग़रीबी बरसती है।

२. हमने अपनी आँख से कुछ दौलतमंद घरों को देखा है कि औरतों में घर चलाने का सलीक़ा न होने से उनके घर की हालत ग़रीबों के घर से भी बद-तर होती है।

३. इन सब में खर्च का अंदाज़ा करना और मौक़े को ध्यान में रखना पड़ता है। खर्च में बीच का रास्ता अपनाना चाहिए, हमेशा ज़रूरत के मौक़े पर खर्च करना चाहिए।

४. बीच के रास्ते से हमारा मतलब यह है कि आमदनी से ज़्यादा खर्च न हो, न इस क़दर कम कि कंजूसी तक की नौबत पहुंचे, अल्लाह तआला ने कलाम पाक में ज़्यादा खर्च करने वालों की और कंजूसी करने वालों की, दोनों की बुराई की है।

५. न माल से इतनी मुहब्बत हो कि एक-एक पैसे को थोक लगा कर रखे और अपनी ज़रूरत पर भी खर्च न करे, न इतना शाहखर्च बने कि पैसे की जगह दो पैसा खर्च कर दे। मतलब यह है कि जितनी ज़रूरत हो उतना खर्च करे, जितनी चादर हो, उतने पैर फैलाये।

६. अपने से बड़ों का लालच न करो। अगर रोज़ाना का हिसाब

लिख लिया करो तो बहुत अच्छा है कि तमाम खर्च दर्ज होते रहें। जिस वक़्त चाहो देख लो और कभी-कभी शौहर को दिखा दो कि उनको भी इत्मीनान रहे।

७. अगर किसी को क़र्ज़ दो, तो उसको भी लिख लिया करो और जब लो तो उस वक़्त भी नोट कर लो, ताकि भूल न जाओ।

८. धोबी को कपड़े दो तो अलग-अलग हर कपड़े की तायदाद नोट कर लो। ताकि लेते वक़्त सब कपड़े संभालने में आसानी हो। अगर कोई कपड़ा कम हो, तो फ़ौरन मालूम हो जाये कि फ़्लाँ कपड़ा नहीं आया। उसको बताकर उससे कपड़ा मंगा लो।

९. इस तरह अगर तमाम घर की चीज़ों की एक लिस्ट बना लो, उसमें बहुत फ़ायदा होता है कि क्या-क्या चीज़ है और कितनी-कितनी है। अगर ख़ुदा-न-ख़्वास्ता कोई चीज़ कम हो तो फ़ौरन पता चल जाता है कि फ़्लां चीज़ कम है, कहां गयी थी, फ़्लाँ जगह है, वापस नहीं आयी। इस तरह घर की चीज़ें गुम कम होती हैं।

१०. हर चीज़ को उसके ठिकाने पर रखो। जो बरतन या चीज़ें हर वक़्त की हों, वही बाहर रखो, बाक़ी चीज़ों को अंदर रखो। उन्हें ज़रूरत पड़ने पर ही निकालें, ज़रूरत पूरी होने के बाद उसी जगह रख दें। कोई इधर-उधर पड़ी न रहे, इस तरह अक्सर चीज़ें गुम हो जाती हैं।

११. कपड़ों को ट्रंक या बक्स वग़ैरह में रखो, इधर-उधर न पड़े रहें। ऊनी-रेशमी कपड़ों की देख-भाल करो, ख़ास कर बरसात से पहले और बरसात में भी। जिस दिन पानी बरस रहा हो और धूप खूब निकली हुई हो, उस दिन कपड़ों को धूप लगाकर ट्रंक या बक्स में बन्द कर दो। नीम के पत्ते या नफ़रीन की गोलियाँ उनमें रखो ताकि कीड़ा न लगे।

हमने यहां कुछ नसीहतें लिख दी हैं, अगर आप इन हिदायतों पर अमल करेंगी, तो इन्शाअल्लाह दोनों दुनिया में कामयाबी मिलेगी

दुनिया में भी जन्नत और आख़िरत में भी जन्नत मिलेगी।

झूठी कसमें मत खाओ

हमारे नबी सल्ल० ने फ़रमाया कि अल्लाह क़ियामत के दिन तीन आदमियों से बातें न करेगा, न उनकी तरफ़ रहमत की नज़र से देखेगा :—

१. वह आदमी जो अपने दिये पर एहसान करे यानी किसी के साथ कोई अच्छा बर्ताव करने के बाद एहसान जताने वाला।

२. वह आदमी जो झूठी क़सम खाये और अपने व्यापार को झूठी क़सम खा कर बढ़ाये।

३. वह मर्द जो अपने पाजामा को घमंड से टख़नों से नीचे रखे या लटकाये।

—मुस्लिम

फ़—मगर औरतों को चाहिये कि वे पाजामों को टख़नों से नीचा रखें।

मुसलमान बीवी, दूसरा हिस्सा

अल्लाह का हज़ार-हज़ार शुक्र है कि 'मुसलमान बीवी का दूसरा हिस्सा, मुझ ना-चीज़ को लिखने का मौक़ा मिला, जिसमें औरतों और बच्चियों को अपने मां-बाप की फ़रमां-बरदारी करने, अपनी पढ़ाई-लिखाई, आदत-अख़्लाक़ को ठीक रखने व सुधारने पर उभारने, दूसरे रिश्तेदारों के हुक़ूक़, ख़ास तौर से सास, ससुर, बन्दों के साथ बर्ताव करने और आपस में निबाह करने के तरीक़े, ऐब व तक्लीफ़ की बातों के नुक़्सान, सलीक़ा और हुनरमंदी की बातों के फ़ायदे तजुर्बे और इंतिज़ाम की ख़ूबियाँ, बहुत आसान ज़ुबान में लिख दी गयी हैं, ताकि हर औरत उसको पढ़ कर अपनी औलाद की ज़िन्दगी को अच्छी तरह चैन और सुख से गुज़ार सके।

—लेखक

एक दूसरे के हक़

मेरी प्यारी बहनो ! माँ-बाप के बड़े हक़ हैं। परवरदिगार के बाद माँ-बाप की फ़र्मांबरदारी करना फ़र्ज़ है। आंहुज़ूर सल्ल० ने फ़र्माया कि अल्लाह की ख़ुशी मां-बाप की ख़ुशी में है और अल्लाह की नाराज़ी, मां-बाप की नाराज़ी में है।

दूसरी हदीस में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़र्माया मां-बाप के साथ एहसान करना, नमाज़, सदक़ा, रोज़ा, हज, उमरः अल्लाह के रास्ते में जिहाद, मतलब यह कि तमाम चीज़ों से बढ़कर मां-बाप के साथ एहसान करना है, और फ़र्माया, जो आदमी इस हालत में सुबह करता है कि उसके मां-बाप उससे ख़ुश होते हों, उसके लिए दो दर-वाज़े जन्नत की तरफ़ खुल जाते हैं और अगर सिर्फ़ मां या सिर्फ़ बाप ज़िंदा हो और वह उससे ख़ुश रहे, एक दरवाज़ा जन्नत की तरफ़ खुल जाता है और अगर इस हालत में सुबह करे कि उसके मां-बाप उससे नाराज़ हों तो उसके लिए दोज़ख़ के दरवाज़े खुल जाते हैं और अगर सिर्फ़ मां या सिर्फ़ बाप नाराज़ है, तो दोज़ख़ का एक दरवाज़ा खुल जाता है और यह हुक्म हर हालत में है, चाहे मां-बाप उसके साथ इन्साफ़ और एहसान करते हों या ना-इन्साफ़ी और ज़ुल्म करते हों, फिर फ़र्माया :—

'अपने मां-बाप के साथ हमेशा नेकी किया करो। तेरे सामने ये दोनों

وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا إِمَّا يَبْلُغَنَّ

عِندَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَا أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُل لَّهُمَا أُفٍّ وَلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُل لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيمًا ۝

(پ۱۵،ع۲)

या इनमें से कोई एक बूढ़ा हो जाये तो उन्हें (मजबूर और बूढ़ा समझ कर) कभी उफ़ भी न कहना और न कभी उन्हें झिड़कना और उनसे बात-चीत हमेशा अदब और नर्मी से करना।

—पारा १५, रुकूअ २

हदीस शरीफ़ में भी आपने यह जुमला तीन बार फ़र्माया, अगरचे मां-बाप उस पर ज़ुल्म करें, अगरचे मां-बाप उस पर ज़ुल्म करें, अगरचे मां-बाप उस पर ज़ुल्म करें।

हज़रत मूसा अलै० से अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि ऐ मूसा! जो मुसलमान अपने मां-बाप के साथ एहसान करे और मेरी नाफ़र्मानी करे, फिर तौबा भी करे, तब भी मैं उसे नाफ़र्मान न लिखूंगा। (क्योंकि यह बंदों का हक़ है और बन्दों के हक़ को अल्लाह माफ़ नहीं करेगा)।

हुज़ूर नबी करीम सल्ल० ने फ़र्माया, 'मां की दुआ औलाद के हक़ में बहुत तेज़ी से क़ुबूल होती है।' और एक जगह और कहा गया है कि, 'मां की ख़िदमत करो क्योंकि उसके क़दमों के नीचे जन्नत है।' इस क़िस्म की बहुत सी हदीसों में मां-बाप की ख़िदमत और उनकी फ़र्मांबरदारी की ताकीद है। क्यों है? इसलिए कि उन्होंने तुम्हारे लिए कैसी-कैसी तकलीफ़ें बर्दाश्त कीं, तुम्हारे लिए कितनी रातें जाग-जाग कर गुज़ारीं। तुम ज़रा बीमार हो गयीं और वे बेचारे तुम्हारी ख़िदमत करने में लगे रहे। तुम ज़रा-सी तकलीफ़ में रहीं और वे बेचारे तुम्हारी इस तकलीफ़ को दूर करने के लिए ख़ुद हज़ारों तकलीफ़ें उठाने को तैयार हो गये। उन्होंने तुम्हारे आराम के लिए न कभी दिन को दिन, न कभी रात को रात समझा, उन्होंने तुम्हें ख़ुश रखने के लिए ख़ुद कैसे-कैसे रंज व ग़म बर्दाश्त किए, तुम्हारी ज़रा-सी परेशानी उन्हें किस क़दर परेशान कर देती थी, तुम्हारी ज़रा-सी तकलीफ़ से उन्हें कितनी तकलीफ़ पहुंचती थी

तुम्हारे चेहरे का ज़रा-सा भी मुरझा जाना उनकी तमाम खुशियों को ग़मों में बदल देने के लिए काफ़ी होता था, तुम्हारी आँखों से गिरा हुआ एक आँसू उनके दिल पर न जाने कितनी चिंगारियां गिरा देता था और अब भी वे तुम्हारी तालीम व तर्बियत की हर वक़्त तमन्ना करते हैं। और उनके दिल की आरज़ू और ख्वाहिश यही है कि तुम बड़ी होकर शरीफ़ लड़की का एक ऐसा नमूना पेश करो, जो अपनी मिसाल आप हो।

उन्होंने जहां तुम्हें अच्छे से अच्छा खिलाया और पहनाना चाहा वहाँ वे तुम्हें अख्लाक़ व आदात की खूबियों से मालामाल करना भी चाहते हैं और उनकी हमेशा से यह ख्वाहिश है कि तुम्हारी तालीम व तर्बियत ऐसी हो कि दूसरी औरतें तुम्हें देख कर सबक़ हासिल करें और तुम्हारे अख्लाक़ और अच्छी आदतों से तुम्हारी छोटी बहनें तुम से नसीहत और सलीक़ा हासिल करें, यही वजह है कि तुम्हारे पढ़ने के लिए इस तरह की किताबें ले आते हैं, जिनसे शराफ़त, अख्लाक़, हमदर्दी, खानादारी वग़ैरह के तुम्हें सबक़ मिले और तुम्हें हर उस किताब के पढ़ने से रोकते हैं जो झूठे क़िस्सो, अफ़सानों और अख्लाक़ खराब करने वाले मज़मूनों से भरी होती हैं या जिनमें गुमराहियों का सबक़ पढ़ाया जाता है और जो गन्दी बातों से भरी रहती हैं। यह भी इसी लिए वे कहते हैं ताकि तुम्हारे अख्लाक़ पर बुरा असर न पड़े क्योंकि वे समझते हैं कि औलाद अल्लाह की अमानत है जिसे न सिर्फ़ परवरिश करने के लिए, बल्कि तालीम व तर्बियत के लिए भी हमारे सुपुर्द किया गया है, अगर हम औलाद की तालीम व तर्बि-में कमी करेंगे, तो गोया अल्लाह तआला के एक बड़े फ़र्ज़ को नज़र-अंदाज़ करेंगे और उसकी अमानत में ख़ियानत करेंगे और क़ियामत के दिन परवरदिगार के सामने सिर झुकाये खड़े होंगे और शर्मिन्दगी के अलावा और कोई जवाब न दे सकेंगे, इसी वजह से वे अपने आराम और राहत को नज़र अंदाज़ करके तुम्हारे आराम और राहत को

हमेशा अपनी नज़र में रखते हैं। इसी वजह से तुम्हारी तालीम व तर्बियत के लिए शफ़ीक़ और लायक़ उस्तानियां तजवीज़ की हैं कि उनकी सोहबत से तुम फ़ायदा उठाओ और एक हयादार और अच्छे अख़्लाक़ वाली शरीफ़ लड़की कहलाओ और दुनिया के सामने शराफ़त और अख़्लाक़ का नमूना बन कर अपने को पेश कर सको और दोनों जहान की इज़्ज़त व आबरू बनाये रख सको।

मेरी प्यारी बहनो ! जिनकी इस क़िस्म की आरज़ूएं और तमन्नाएं हों, जो हमारी भलाई की हर वक़्त तमन्ना रखते हैं, जो हमारे आराम के लिए ख़ुद तकलीफ़ें सहते हों, क्या हम उनका एहसान न मानें, उनकी फ़र्माबर्दारी न करें, क्या उनकी ख़िद्मत गुज़ारी न करें, जिन्होंने हमारे बचपन की गन्दगियों को बर्दाश्त किया, जिन्होंने हमारी बीमारी की वजह से अपनी रातों की नींद हराम की, जिन्होंने हमें अच्छा खिलाने के लिए ख़ुद अच्छा खाने की तमन्ना न की हो, जिन्होंने हमें अच्छा पहनाने के लिए ख़ुद अच्छा पहनने की ख़्वाहिश न की हो, जिन्होंने हमारी ख़्वाहिशों को पूरा करने के लिए ख़ुद अपने-आप को बे-शुमार फ़िक्रों में डाल रखा।

अगर हम अपने मेहरबान और मुह्सिन मां-बाप की नाफ़रमानी करें और उनकी क़द्रदानी और ख़िद्मतगुज़ारी न करें तो हमसे ज़्यादा कोई एहसानों को भुला देने वाला और नालायक़ नहीं हो सकता और सबसे बढ़कर परवरदिगार की नाफ़रमानी है, क्योंकि अल्लाह ने अपने कलाम पाक में जगह-जगह माँ-बाप की फ़र्माबर्दारी की ताकीद फ़र्माई है। उन में कुछ आयतें इस तरह हैं :—

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ
وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ
عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا

तेरे रब ने हुक्म कर दिया है, कि उसके अलावा किसी की बन्दगी न करो और तुम अपने मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक किया करो। अगर तेरी मौजूदगी में एक या दोनों बुढ़ापे को

फَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝

(پاره ۱۵ رکوع ۲)

पहुंच जायें तो उनके आगे 'हूं' तक न कहना और उनको न झिड़कना और उनसे ख़ूब अदब व एहतराम से बात करना और उनके सामने मुहब्बत के साथ झुके रहना और उनके लिये यह दुआ करते रहना कि मेरे परवरदिगार इन दोनों पर रहमत फ़र्मा, जैसा कि उन्होंने मुझ को बचपन में पाला-परवरिश किया।

—पारा १५, रुकूअ १२

इस आयत में परवरदिगार इन्सान को ताकीद फ़र्मा रहे हैं कि सबसे बढ़ कर आदमी पर अल्लाह का हक़ यह है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करें यानी उसके साथ किसी को शरीक न करें, क्योंकि अल्लाह ने इसको पैदा किया है। फिर मां-बाप का हक़ है। जब मां के पेट में बच्चा पैदा होता है, तो उसकी हर तरह की परवरिश और तर्बियत दुनिया में मां-बाप करते हैं, इसलिए उनकी फ़र्मांबदारी और शुक्रगुज़ारी की ताकीद फ़र्माई।

दूसरी जगह आया है :—

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ۭ اِلَيَّ الْمَصِيْرُ ۝

(پاره ۲۱ رکوع ۱۱)

'हमने इन्सान को उसके मां-बाप के बारे में ताकीद की। उसकी मां ने कमज़ोरी पर कमज़ोरी उठाकर उसको पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छूटता है, तो मेरी और अपने मां-बाप की शुक्रगुज़ारी किया कर, (याद रखो) मेरी ओर लौट कर आना है।

—पारा २१, रुकूअ १

इस आयत में माँ-बाप का हक़ बाप से ज्यादा फ़र्माया, इसलिए

कि वह कई महीने पेट में लिए फिरती थी और थक-थक जाती थी और बड़ी तकलीफ़ के साथ उसको जना और फिर दो साल तक अपनी छाती से दूध पिलाया और कैसी-कैसी सख्तियां और तकलीफ़ें झेल कर बच्चे की तर्बियत फ़र्माई और अपने आराम पर उसके आराम को तरजीह दी, इसलिए मां का एहसान और उसकी शुक्रगुज़ारी बाप से ज़्यादा हुई।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ۚ حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَوَضَعَتْهُ كُرْهًا ۖ وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ۚ رَبِّ أَوْزِعْنِيْ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَأَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝

(پ ۲۶ رکوع ۲)

'हमने इन्सान को अपने मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया। उसकी मां ने उसको बड़ी मेहनत के साथ पेट में रखा और तक्लीफ़ बर्दाश्त करके उसे जना और उसके हमल का और उसके दूध छुड़ाने का ज़माना तीस महीनें में पूरा होता हैं, ऐ मेरे रब ! मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी इस नेमत का शुक्रगुज़ार बन जाऊं, जो तूने मुझ पर मेरे मां-बाप पर इनाम फ़र्माये हैं और यह कि मैं ऐसे नेक काम करू, जिससे तू राज़ी हो जाये और तू मेरी औलाद में भी (यह) सलाहियत फ़र्मा और आपकी जनाब में रुजू करता हूं और फ़र्मांबर्दार हूं।'

—पारा २६, रुकूअ २

इस आयत में भी ऊपर वाली आयत की तरह मां का हक़ ज़्यादा फ़र्माया कि कई महीने हमल में रखा और इस बोझ को उठाये-उठाये फिरती रही और कैसी-कैसी तकलीफ़ें बर्दाश्त करती रही और दो साल तक अपनी छाती से लगाकर दूध पिलाती रही और हर तरह की निगरानी करती रही, अपने आराम और राहत को उसके आराम और राहत पर क़ुर्बान करती रही और बाप भी

बड़ी हद तक इन तकलीफ़ों में शरीक रहा और तबियत का सामान जुटाता रहा। इसमें शक नहीं, ये सब काम फ़ितरत के तक़ाज़े से होते हैं, मगर उसी फ़ितरत का तक़ाज़ा यह भी है कि औलाद मां-बाप की मुहब्बत व प्रेम को महसूस करे और उनकी मुहब्बत और क़ुर्बानी को देखते हुए उनकी शुक्रगुज़ारी, फ़र्मांबर्दारी करे और कई जगह क़ुरआन पाक में इसकी ताकीद है।

हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्ल० ने एक बार मिम्बर पर चढ़ते हुए पहली सीढ़ी पर क़दम रख कर फ़र्माया, 'आमीन'। फिर दूसरी सीढ़ी पर क़दम रख कर फ़र्माया, आमीन। जब आप ख़ुत्बे से फ़ारिग़ होकर नीचे तशरीफ़ लाये, तो सहाबा रज़ि० ने पूछा, ए अल्लाह के रसूल! आज हमने एक नई बात देखी, जो इससे पहले कभी नहीं देखी। आपने फ़र्माया, क्या बात देखी? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, आज आपने आदत के ख़िलाफ़ मेम्बर पर चढ़ते हुए हर सीढ़ी पर आमीन फ़र्माया। आपने फ़र्माया कि उस वक़्त जिब्रील अलै० मेरे सामने आये थे। जब मैंने पहली सीढ़ी पर क़दम रखा तो जिब्रील अलै० ने कहा, हलाक हो वह शख़्स, जिसने रमज़ान मुबारक का महीना पाया और फिर भी उसकी मग़फ़िरत न हुई। मैंने कहा, आमीन। दूसरी सीढ़ी पर जब क़दम रखा तो आपने फ़र्माया, हलाक हो वह आदमी जिसके सामने आपका यानी मेरा ज़िक्रे मुबारक हो और वह दरूद न पढ़े। मैंने कहा, आमीन। जब तीसरी सीढ़ी पर क़दम रखा, तो फ़र्माया हलाक हो वह आदमी, जिसके सामने उसके मां-बाप या उनमें से कोई एक बुढ़ापे को पहुंचे और वे उसको जन्नत में दाख़िल न करायें। मैंने कहा, आमीन। इस हदीस में हज़रत जिब्रील अलै० ने तीन आदमियों की हलाकत की बद-दुआ मांगी और उन पर हुज़ूर नबी करीम सल्ल० ने आमीन फ़र्माई तो अब आप समझ लीजिए कि यह बद-दुआ कितनी सख़्त होगी। एक तो हज़रत जिब्रील अलै० की ही बद-दुआ क्या कम

थी, फिर हुज़ूर सल्ल० की आमीन ने जितनी सख्त बद-दुआ बना दी, वह ज़ाहिर है।

एक हदीस में है, जन्नत के दरवाज़ों में से बेहतरीन दरवाज़ा बाप है, तेरा जी चाहे, उसकी हिफ़ाज़त कर या उसे बर्बाद कर दे। एक सहाबा ने पूछा, मां-बाप का क्या हक़ है। आपने फ़र्माया, वे तेरे लिए जन्नत हैं या जहन्नम, यानी उनकी खुशी तेरे लिए जन्नत को वजह बनेगी और उनकी नाराज़ी तेरे लिए जहन्न का जरिया है। एक हदीस में आता है कि अल्लाह तआला शिर्क के अलावा तमाम गुनाहों को जिस क़दर चाहें माफ़ फ़र्मा देते हैं, मगर मां-बाप की नाफ़र्मानी का वबाल मरने से पहले भी, मरने के बाद भी पहुंचता है।

मेरी प्यारी बहनो ! तुम कहती होगी मां-बाप की हुक्मबरदारी पर ही सारा ज़ोर दिया जा रहा है, लेकिन याद रखो, मां-बाप की फ़र्माबर्दारी ही तमाम अख़्लाक़ व अदब की चीज़ है। उनकी फ़र्मांबर्दारी और खिदमतगुज़ारी तमाम लोगों का प्यार बनने का ज़रिया है। अगर यह कुंजी तुमने हासिल, करली, तो इनशाअल्लाह हर जगह इज़्ज़त व आबरू हासिल होगी। यह शुरू की मंज़िल है। इसमें तालीम व तर्बियत, अख़्लाक़ व तहज़ीब, खाकसारी, फ़र्माबरदारी, खिदमतगुज़ारी सीख लोगी, तो दूसरी जगह जाकर भी हरेक की नज़र में सबकी प्यारी बन जाओगी। तुम जानती हो, दुनिया में इज़्ज़त व आबरू किसको हासिल होती है, हरेक के दिल में किसकी मुहब्बत होती है, किसकी मुहब्बत को शरीफ़ औरत भी पसन्द करती है, हर समझदार औरत किसकी सोहबत को अपने लिये अच्छी चीज़ समझती है। क्या दुनिया में उसकी इज़्ज़त व आबरू होती है जो बुरे अख़्लाक़ का और बुरे मिज़ाज का हो ? क्या हरेक के दिल में उसकी मुहब्बत होती है जो बद-ज़बान और बद-कलाम हो ? क्या कोई शरीफ़ आदमी झूठे,

झगड़ालू और जलने वाले को पसन्द करती है ? क्या कोई बे-हुनर बद-सलीक़ा, बद-तहज़ीब की सोहबत को अपने लिये मुफ़ीद समझता है ? हरगिज़ नहीं, बल्कि हर समझदार आदमी तमीज़ वाले, अच्छी तबियत, अख़्लाक़ और मिज़ाज वाले, मीठे बोल बोलने वाले सलीक़ा और हुनर वाले आदमी की सोहबत को ही अपने लिये मुनासिब और मुफ़ीद समझता है।

मेरी प्यारी बहनो ! तुम्हारी तालीम व तबियत और अख़्लाक़ व तहज़ीब की जो कोशिश की जाती है और तुमको जो बार-बार इसे अपनाने के लिए कहा जाता है, यह सिर्फ़ इस वजह से है कि तुम दोनों जहान में कामयाबी हासिल करो और क्या तुम्हें इस बात का एहसास है कि तुम ज़िन्दगी की राह में किस मंज़िल से गुज़र रही हो और किस मंज़िल में क़दम रखने वाली हो। क्या तुम जानती हो कि तुम्हारी दुनिया अब तक जो कुछ थी, वह आइन्दा क्या होने वाली है। आज तुम जो बेफ़िक्री की ज़िन्दगी गुज़ार रही हो, आइन्दा आने वाली मंज़िल में तुम्हें हर क़दम पर ग़ौर व फ़िक्र से काम लेना होगा। अब तक तुम ग़ैर-ज़िम्मेदाराना तौर पर काम करती रहीं हो, आइन्दा तुम्हें हर काम के सिलसिले में अपनी ज़िम्मेदारी का ख़्याल रखना पड़ेगा, अब तुम्हारी तमाम आरज़ूएं और तमन्नाएं, अन्जाम के फ़िक्र से बे-नियाज़ हैं, आइन्दा तुम्हें हर आरज़ू, हर ख़्वाहिश को ज़ाहिर करने से पहले उसके नतीजे पर निगाह रखनी होगी। अब तुम अपनी तज्-वीज़ों को दूसरों से मनवाती हो, लेकिन आइन्दा तुम्हें दूसरों की तज्-वीज़ों को मानना पड़ेगा, मतलब यह कि उस वक़्त तुम्हारी दुनिया ही बदल जायेगी, तुम जिस तरीक़े से सर्गर्म रहती हो, ये तरीक़े आइन्दा बहुत कुछ बदल जायेंगे। अब तुम जिन-जिन उसूलों पर मुस्तक़िल तौर पर क़ायम हो, उनमें से बहुत से उसूलों को छोड़ना पड़ेगा और बहुतों में कमी बेशी करनी पड़ेगी। उस वक़्त तुम्हारी ज़िन्दगी का हर हिस्सा एक नये अन्दाज़ से ज़ाहिर होगा। तुम कभी-कभी ज़रा-

ज़रा सी बात पर कितनी ज़िद अपना लेती हो, तुम्हारी मां तुम्हें समझाती हैं, तुम नहीं मानतीं, भाई तुम्हें सलाह देते हैं, तुम मान-कर नहीं देतीं, मामा तुम्हारी खुशामद करती है तुम्हारी समझ में नहीं आता, बाप तुम्हें कुछ कहते हैं, तो तुम रोती-पीटती हो, खाना नही खातीं, यहाँ तक कि घर वालों को तुम्हारी ज़िद पूरी करनी पड़ती है। अगर्चे यह बात मानी हुई है कि ऐसा वाक़िआ कभी-कभी पेश आता है, मगर आइन्दा तुम्हें अपनी मर्ज़ी से कहीं ज़्यादा दूसरों की मर्ज़ी पर निगाह रखनी पड़ेगी और तुम्हें अपनी खुशी से ज़्यादा दूसरों की खुशी का ख्याल रखना पड़ेगा। तुम्हें अपनी किसी तमन्ना को ज़ाहिर करने से पहले यह सोचना पड़ेगा कि तुम्हारे जीवन-साथी और उनके रिश्तेदार-नातेदार तुम्हारी इस तमन्ना को और इस तरीक़े को किस निगाह से देखते हैं।

यह ज़िन्दगी का कितना बड़ा इन्क़िलाब होगा, गोया तुम्हारे लिए ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा ही बदल जायेगा। तुम्हारे ख्यालात अजीब क़िस्म की अंगड़ाइयां लेंगे, तुम्हारे एहसासात में क़िस्म-क़िस्म की तब्दीलियां होंगी, तुम्हारे जज़बात में तबदीली आ जायेगी, तुम्हारे अन्दर खुद-ब-खुद ऐसी-ऐसी तब्दीलियाँ होंगी कि तुम इस वक़्त की ज़िन्दगी को भूला हुआ अफ़साना समझोगी। तुम्हारा अख़्लाक़ ही नहीं, तुम्हारी चाल-ढाल, बात-चीत सब में इन्क़िलाब होगा। तुम सोचोगी कि मैं क्या थी और क्या हो गई, तुम्हें खुद अपने पर ताज्जुब होगा, उस वक़्त जिस क़िस्म की ज़िन्दगी तुम्हें गुज़ारनी होगी और तुम्हें जिन-जिन हालात, और वाक़िआत का सामना करना पड़ेगा और तुम जिस क़िस्म के माहौल में होगी उस वक़्त जो तुम्हें करना होगा, उसका तुम्हें कोई तजुर्बा नहीं है।

यह ठीक है कि तुमने अज़ीज़ों, रिश्तेदारों, सहेलियों या मुहल्ले वालियों की शादीशुदा ज़िन्दगियों पर ग़ौर किया होगा, और मुम्किन है उनके अच्छे-बुरे हालात से तुमने कुछ नतीजे निकाले हों और वे

तुम्हारे जेहन में भी महफ़ूज़ हों, मगर फिर भी दूसरों के हालात और अपने हालात में बड़ा फ़र्क़ होता है, दूसरों की बा अफ़सानतों की तरह होती हैं और अपने वाक़िआत हक़ीक़त की तरह महसूस होते हैं और उस वक़्त तुम्हारी बहनें और सहेलियां जो हर वक़्त तुम्हारे साये की तरह तुम्हारे साथ-साथ रहती हैं, हर काम में साथ, जिनके एहसासात और जज़बात, तुम्हारे एहसास और तुम्हारे जज्बे का साथ देने की कोशिश करते हैं, तुम्हारा चेहरा ज़रा उतरा, उनके चेहरों के रंग बदल गये, तुम्हारे होंठों पर ज़रा मुस्कराहट आई, उनके लबों पर क़हक़हे आ गये, तुम ज़रा ख़फ़ा हुयीं उनके दिल सहम कर रह गए, तुम कभी बीमार हो गयीं, ऐसा मालूम हुआ मानो ये सब बीमार हो गयी हैं, कितना साथ देती हैं, कभी साथ-साथ गुड़ियां खेली जा रही हैं, कभी साथ-साथ खाने पक रहे हैं, साथ-साथ झूला झूले जा रहे हैं, साथ-साथ सीना-पिरोना हो रहा है, कभी दिन-दिन भर मिल-जुल कर खेलते-कूदते गुज़र रहे हैं, कभी रातें साथ बैठकर कहानियां और पहेलियां सुनते-सुनाते बीत रही हैं, सोना है तो साथ, जागना है तो साथ, कहीं जाना है तो साथ, और जब तुम चली जाओगी तो इन बहनों के लिए तुम्हारा घर सूना हो जायेगा, काम-काज तो सब होते ही रहेंगे, मगर निगाहें हर वक़्त ढूंढेंगी और दिल किसी वक़्त तुम्हारी याद से ग़ाफ़िल न होंगे।

सहेलियाँ, जो एक दिन भी तुम्हें देखे बिना नहीं रहतीं, अगर किसी वजह से कभी दो दिन न आ सकीं, तो उन्होंने मिलने का कोई न कोई बहाना निकाला। कभी गुड़ियों का ब्याह हो रहा है, कभी दावत हो रही है, कभी लिया-दिया जा रहा है। यह सब कुछ इसलिए होता है कि तुम उनसे मिलो और वे तुमसे मिलती रहें। जब वे हफ़्तों तुम्हें न देख सकेंगी और तुम उनको न देख सकोगी, तो फिर तुम्हारी याद उन्हें किस-किस तरह बेचैन करेगी और तुम्हारी जुदाई उन्हें किस-किस मौक़े पर महसूस होगी। शायद तुम उस वक़्त

उसका सही अन्दाज़ा न कर सको और शायद तुम समझ रही होगी कि यह मामूली सी तबदीली होगी कि एक घर को छोड़कर दूसरे घर में जा रहूंगी मगर सिर्फ़ इतनी ही बात नहीं बल्कि तुम्हारी ज़िंदगी का बहुत बड़ा इन्क़िलाब होगा, इसीलिए तुम्हारी ज़िन्दगी के इस सबसे अहम वक़्त के पहले हम तुम्हें आगाह करना चाहते हैं ताकि आने वाली नई ज़िन्दगी में तुम्हारे काम आये और जिनको सामने रख कर तुम अपनी ज़िन्दगी को ऐसी उलझनों से बचा सको, जिनमें अक़सर उन लड़कियों की ज़िन्दगियां तबाह हो जाती हैं, जो शादी के बाद आने वाले वक़्त को नहीं समझतीं और न ही समझदारी से काम लेती हैं।

मैं समझता हूं कि तुम अल्लाह के फ़ज़्ल से काफ़ी समझदार हो, मैं यह भी जानता हूं कि तुम जो भी क़दम उठाती हो, काफ़ी सोच-समझकर उठाती हो, मगर फिर भी तुम्हें कुछ ऐसी बातें बता देना ज़रूरी हैं, जिनसे तुम अपने हालात के मुताबिक़ फ़ायदा उठा सको। इस सिलसिले में पहली बात जो दिल में बिठा लेनी चाहिए, वह यह है कि शादी है क्या चीज़ ? हकीक़त में शादी किसी की ग़ुलामी नहीं, बल्कि खुदारसूल के हुक्म के मुताबिक़ एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहना और काम करना है।

शादी का सही मतलब यह है कि लड़का और लड़की मर्द और औरत आपस में मिल-जुल कर और अपने-अपने दायरों में रह कर ज़िन्दगियां गुज़ारने का इरादा करते हैं, जिसमें दोनों को एक दूसरे की मुहब्बत, खुलूस और हमदर्दी की ज़रूरत पड़ती है, इस तरह दोनों एक दूसरे की ज़रूरत, और दोनों एक दूसरे के लिए खुशी और इत्मीनान का सामान बन जाते हैं।

इसमें शक नहीं कि अल्लाह ने मर्द को औरत का हाकिम क़रार दिया है, मगर यह हुकूमत सिर्फ़ हुक्मरानी करने के लिए नहीं है, बल्कि इससे मुराद औरत की सरपरस्ती और निगहबानी है, जो

औरत की ज़िन्दगी में ज़्यादा आसानियां पैदा कर सके। अगर ऐसा न होता तो मर्दों पर औरतों के अनगिनत हुक़ूक़ का ज़िक्र न किया जाता, ज़ाहिर है कि जिस मर्द पर औरतों की इतनी ज़्यादा ख़िदमतों का बोझ हो, वह पूरी तरह हाकिम क्या हो सकता है, हां अच्छा जीवन-साथी और इज़्ज़त का हक़दार ज़रूर हो सकता है।

इसी तरह औरतों के भी बहुत से फ़र्ज़ हैं, जो उन्हें मर्दों का साथ बनाये रखने के लिए अन्जाम देने पड़ते हैं। जब शादी मिल जुला एक काम है, एक आपसी समझौता है, तो ज़ाहिर है कि शादी के बाद, बल्कि शादी से पहले, वे अपनी ज़िन्दगी के बारे में अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० के बताये हुये तरीक़ों के मुताबिक़ एक प्रोग्राम और एक निज़ाम बनायें, ताकि इन उसूलों की पाबन्दी करके ज़्यादा राहत और इत्मीनान से अपनी ज़िन्दगी गुज़ार सकें। इस निज़ाम के बनने में एक लड़की के क्या-क्या फ़र्ज़ हैं उनमें से कुछ इसके पहले हिस्से में पढ़ चुकी हो और कुछ तुमको ख़ुद ही महसूस होते रहेंगे, मगर कुछ बातें इस सिलसिले में बता देनी भी ज़रूरी हैं ताकि तुम जो भी तरीक़ा अपनाओ उसमें समझदारी से ज़्यादा काम ले सको और जिन उसूलों पर भी क़ायम रहो, अक़्ल व शऊर से काम लेती रहो।

जब तुम अपने नये घर को जाओगी उस वक़्त तुम्हारी मां और बहनें और क़रीबी रिश्तेदार तुम्हारी जुदाई के अफ़सोस में तुम्हें आंसुओं और आहों की भीड़ में विदा कर रहे होंगे। इसके ख़िलाफ़ जब तुम वहां पहुंचोगी तो इसी तरह वहां तुम्हें मुस्कराहटों और क़हक़हों के साए में ख़ुश आमदीद कहा जायगा, जिस तरह तुम यहां से ग़मगीन फ़िज़ा में जाओगी, इसी तरह वहां ख़ुशी भरी दुनिया में पहुंचोगी, यहां विदाई गीत सुनकर जुदा होगी और वहां आराम और ख़ुशी के नग़मों से तुम्हारे आने का ऐलान किया जायगा, वहां तुम्हें दुनिया ही दूसरी मिलेगी, तमाम घर ख़ुशी और मुहब्बत के असर

से भरा रहेगा, दरो-दीवार से खुशी का रंग छलक रहा होगा, हर एक का चेहरा खुशी से भरा रहेगा, हर एक हंसी-मजाक की बातों से हंस-हंसा रहा होगा, हर एक मुस्कराता होगा और तुम उस घर में इस तरह पहुंचोगी जैसे महफ़िल में शमा-ए-महफ़िल लाई जाती है। तुम जाते ही सबकी तवज्जाहे का न ंज़ बन जाओगी, छोटे-बड़े सब तुम्हें देखने के मुश्ताक़ होंगे, तुम्हारी हर-हर हरकत पर न जाने कितनी निगाहें पड़ेंगी और तुम्हारे हर-हर अमल पर न जाने कितनी तनक़ीदें की जायेंगी, मगर यह सब हंगामा दो-एक दिन का ही होगा। इस हंगामे में एहतियात से काम लेना तुम्हारा फ़र्ज़ है। सिर्फ़ इस वजह से कि ज़रा सी ग़लती ख्वामख्वाह के लिए तुम्हारे बारे में चेमी गोइयों की वजह बन जायेगी। इसमें शक नहीं कि तुम काफ़ी समझदार हो, तुमने अपने खानदान की बहुत सी लड़कियों को दुल्हन बनते हुए देखा है। तुम खूब समझती हो कि दुल्हन को शादी के शुरू के ज़माने में किस तरह बड़ी होशियारी और समझदारी से काम लेना पड़ता है। इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि तुम इन दिनों को निहायत बड़े अच्छे तरीक़े से गुज़ार लोगी और कोई बात ऐसी न करोगी कि शादी में शरीक होने वाले मेहमानों को तुम्हारे बारे में ना-मुनासिब तनक़ीद करने का मौक़ा मिले।

सब से पहले जिस इंसान से तुम्हारा वास्ता पड़ेगा, वह तुम्हारा सरताज, तुम्हारा जीवन-साथी होगा। उसी हस्ती के साथ तुम्हें ज़िंदगी के दिन गुज़ारने होंगे, इसी हस्ती से तुम्हारा मुस्तक़्बिल लगा हुआ होगा। उसी हस्ती से तुम्हें अपनी सभी तमन्नायें क़ायम करनी होंगी। अगर यह हस्ती चाहेगी, तो तुम्हारी ज़िंदगी खुशियों की रँगीन दास्तान बन जायेगी और अगर न चाहेगी, तो तुम्हारी ज़िंदगी तबाही और बर्बादी का अफ़सोसनाक सिलसिला होकर रह जायेगी। मतलब यह है कि तुम्हारी आइंदा ज़िंदगी की बेहतरी या बर्बादी सब इसी एक हस्ती के सुलुक पर मुनहसर होगी, इसलिए तुम्हारा सबसे

पहला फ़र्ज़ यह होगा कि तुम अपने जीवन-साथी को ज्यादा-से ज्यादा समझने की कोशिश करना और जहां तक हो सके अपनी तमाम ख्वाहिशों को उसकी आरज़ूओं के मातहत नहीं,तो मुताबिक़ ज़रूर करना, ताकि तुम्हारी ज़िदगी में वह ज़ेहनी और रूहानी कशमकश न पैदा होने पाये, जो मियां-बीवी के बे-मेल कामों से कुछ घरानों में नज़र आती है और शादी के कुछ दिन बाद लड़के और लड़की के लिए सबसे बुरा अज़ाब होती है ।

इस वक़्त इन तमाम बातों से परहेज़ कर रहा हूं जो शौहर के फ़र्ज़ों में दाख़िल हैं, यह तमाम बातें 'मुसलमान ख़ाविंद' में लिखी जा चुकी हैं, वहां से पढ़ ली जायें । इस वक़्त जो कुछ कहना है, तुम से कहना है, जो कुछ बताना है तुम्हें बताना है, जो कुछ समझाना है, तुम्हें समझाना है । तुम्हारे जीवन साथी को कोई नसीहत करना या उन्हें कोई बात समझाना, असल में, उनके मां-बाप का फ़र्ज़ है, जो ज़रूर ही उन्होंने अदा किया होगा । एक बात यह भी है कि तुम्हारे शौहर के मां-बाप अपने बेटे के साथ रहेंगे, वे ख़ुद हर बात की देख-भाल करेंगे, जहां ज़रूरत समझेंगे तुम्हारे शौहर को मश्विरे देते रहेंगे,मगर तुम अपने मां-बाप से जुदा हो जाओगी, तुम उनसे दूर रहोगी, तुम लगातार उनके पास नहीं रहोगी,तुम उनको कभी-कभी मिलोगी, इसलिए यह ज़रूरी हुआ कि सिर्फ़ तुम्हीं से कहें और तुम्हें ही यह बतायें कि तुम्हें क्या-क्या करना है और तुम किस-किस तरीक़े से ज़िदगी इत्मीनान व राहत से गुज़ार सकोगी ।

हां, तो मैं यह कह रहा था कि तुम्हें सबसे पहले जिस हस्ती से वास्ता पड़ेगा, वह ऐसी हस्ती होगी जिससे मुस्तक़िल तौर पर और ज़िदगी के आख़िरी लम्हे तक तुम्हारा वास्ता पड़ेगा इसलिए तुम्हें इस हस्ती को ज्यादा से ज्यादा समझना पड़ेगा । उसकी फ़ितरत, मिज़ाज,आदतें, रुझानात, दिलचस्पियां, ज़ौक़ व शौक़ सबको समझना पड़ेगा ताकि तुम्हें उसके साथ ज़िदगी गुज़ारने में तकलीफ़ों और

परेशानियों का सामना न करना पड़े ।

आज हमारे सामने हज़ारों मिसालें हैं कि सिर्फ़ इस वजह से मियां-बीवी की ज़िंदगियां तबाह हुई कि दोनों के मिज़ाजों में इख़्तिलाफ़ रहा और दोनों एक दूसरे की अदतों और तबीयतों को न समझ सके ।

मैं तुम्हें एक वाक़िआ सुनाऊं । हमारे पड़ोस में एक साहब आकर रहे । वह किसी दफ़्तर में अच्छी पोस्ट पर मुलाज़िम थे, तनख़्वाह काफ़ी थी । मगर बेचारे बड़े कमज़ोर, बड़े परेशान, थके-थके दीख पड़ते थे, जैसे कई वर्षों का रोगी हो । मालूम हुआ कि बेचारे की बीवी उनसे भी बदतर हाल में है, मगर दोनों में से एक भी बीमार न था, सास और ससुर भी बहू से ख़ुश थे, बहू का भी उनसे कोइ झगड़ा न था, घर में खाने-पीने की कोई तंगी न थी, कपड़े लत्तों में भी कोई कमी न थी । अल्लाह का दिया हुआ सब कुछ था, अगर कमी थी तो सिर्फ़ एक चीज़ थी, वह यह कि मियां-बीवी में मुहब्बत और मेल न था, दोनों के ख़्यालात हर मामले में अलग-अलग थे, दोनों की रायें किसी एक मामले में भी एक न होती थी एक कहता दिन, तो दूसरा कहता रात, एक कहता पूरब, तो दूसरा कहता पश्चिम, मतलब यह है कि दिन-रात यही क़िस्सा लगा रहता था। मियां अपनी ज़िद पर क़ायम रहते थे, तो बीवी अपनी हठ पर क़ायम रहती, ज़िंदगी दोनों की तबाह हो रही थी और इस तमाम तबाही की वजह सिर्फ़ यह थी कि दोनों ने कभी एक दूसरे को समझने की कोशिश नहीं की । इसकी फ़िक्र तो दोनों को हो कि हमारी बात नीची न हो और हमारी ज़िद क़ायम रहे, मगर इसका ख़्याल किसी को न आया कि हमारी ज़िंदगी बर्बाद न हो ।

ख़्यालों का इस क़िस्म का इख़्तिलाफ़ बहुत नुक़्सानदेह और तकलीफ़देह होता है । कोई ख़ास वजह होती नहीं, न किसी अहम मामले में इख़्तिलाफ़ ज़ाहिर होता है, बल्कि बहुत छोटी-छोटी बातों पर

झगड़े होते रहते हैं। मामूली-मामूली शिकायतों पर लड़ाइयां होती रहती हैं—किसी-किसी दिन तो दो-दो घंटे मियां-बीवी की तकरार सुनने में आती थी, तो उसकी वजह यह मालूम होती थी कि मियां के कमरे में किसी ने कुर्सी-मेज़ से ज़रा दूर रख दी थी या किसी खाने में ज़रा नमक कम हो गया था, या किसी खूंटी पर किसी ने मैला कुर्ता या पाजामा लटका दिया था—बस ऐसा ही किसी बात पर आपस में झगड़ा शुरू हो जाता था और कभी-कभी यह झगड़ा इतना बढ़ जाता था कि तमाम-तमाम रात जारी रहता था और पड़ोस वालों की नींद हराम हो जाती थी। जबतक पड़ोस में रहे यही देखने में आते रहे। मतलब यह कि मुहल्ले के घर-घर में उन लोगों की चर्चा थी, हर आदमी उनसे इख़्तिलाफ़ करता रहता था कैसी शर्म और रुसवाई की बात थी। यह भी मालूम हुआ था कि बीवी छः-छः महीने तक मैके में रहती हैं, उनके शौहर एक तो उन्हें बुलाते ही नहीं और बुला लेते हैं तो बुला कर खुश नहीं होते बल्कि पछताते हैं।

इसी तरह एक दोस्त की लड़की का वाक़िया है कि उनका शौहर न तो अपने पास बुलाता है और न अलग करता है और न ही उसके खर्च के लिए कोई रक़म भेजता है। ज़िंदगी मौत से भी बुरी हो गयी है। इस बर्बादी की वजह कोई लम्बी चौड़ी नहीं है, सिर्फ़ मामूली से इख़्तिलाफ़ पर बात यहाँ तक पहुंच गयी। लड़की इस बात को खुद जानती है कि शुरू-शुरू में उनका शौहर उनसे बेहद मुहब्बत करता था, लेकिन लड़की ने उनकी मुहब्बत की क़द्र ही न की, हमेशा शौहर की राय के खिलाफ़ किया। पहले तो मामले ने ज़्यादा तूल न खींचा और शौहर नें भी काफ़ी बर्दाश्त किया मगर लड़की ने आदत न बदली तो झगड़े ज़्यादा बढ़ गये, यहाँ तक की मियां-बीवी का एक जगह रहना दूभर हो गया।

मैं यह नहीं कहता कि इस मामले में उनके शौहर की ग़लती नहीं है। यक़ीनन उनकी तरफ़ से भी ज़्यादती होगी, मगर मुझे इस वक़्त

सिर्फ़ उन ग़लतियों को ज़ाहिर करना है, जो ग्राम तौर पर लड़कियों की ग्रोर से होती हैं। इसलिये लड़की की ग़लती का ज़िक्र कर रहा हूं कि लड़की ने ज़रा-ज़रा से मामले में कितनी ज्यादा बे-शर्मी ग्रपनाई। शौहर कोई चीज लाया या शौहर ने कोई राय दी लेकिन लड़की को मुख़ालफ़त करनी ज़रूरी थी। लड़की यह कहती है कि वह जान-बूझ कर ऐसी बातें करते थे जो मेरी तबियत के ख़िलाफ़ होती थीं ग्रौर वह मुझे जलाने के लिए इस क़िस्म की सूरतें पैदा करते रहते थे, जिससे मुझे तकलीफ़ पहुंचती थी, मगर यह बात किसी समझदार इन्सान की समझ में नहीं ग्रा सकती। कोई शौहर भी जान-बूझ कर ऐसी बातें नहीं कर सकता, जो बीवी को तकलीफ़ पहुंचाने वाली हो। हर ग्रादमी ग्रपने ग्राराम, इत्मीनान ग्रौर ख़ुशी के लिए शादी करता है, किसी का मक़्सद शादी से यह नहीं हो सकता कि वह ग्रपनी जीवन-साथी को परेशान करने के लिए शादी करे। कोई भी यह नहीं चाहेगा कि ज़रा-ज़रा-सी बातों से ख़ुद ग्रपनी भी ज़िन्दगी तबाह करे ग्रौर घर वालों की भी ज़िन्दगी बर्बाद करे, हां, यह हो सकता है कि ग्रापस का इख़्तिलाफ़ बढ़कर ऐसी सूरत ग्रख़्तियार कर ले कि हर बात में मुख़ालफ़त का पहलू निकल ग्राये ग्रौर हर मामले में झगड़ा पैदा हो जाए।

मतलब यह कि यह सूरत हमारे दोस्त की लड़की ग्रौर उनके शौहर के बीच हो गयी थी। दोनों एक-दूसरे के मिज़ाज ग्रौर तबियत को नहीं समझे ग्रौर न उन्होंने समझने की कोशिश की। नतीजा यह हुग्रा कि बात-बात में झगड़ा होने लगा। ग्राख़िरकार लड़की को उसके शौहर ने मैके भेजवा दिया, ग्रब न मेल-मिलाप की कोई तदबीर नज़र ग्राती है, न ग्रलग होने की कोई शक्ल दिखाई देती है। देखिए शौहर तो फिर भी ग्राज़ाद है, वह एक ग्रौर शादी भी कर सकता है ग्रौर ग्रगर न भी करे तो उसे इस क़िस्म की तकलीफ़ों का सामना करना न पड़ेगा, जैसे वह लड़की बर्दाश्त कर रही है। मुश्किल तो लड़कों

की है। बच्चों का साथ है भाई खर्च बर्दाश्त कर रहा है, भावज से भी कभी नहीं बनती। जिसने शौहर की बात को अहम न समझा, वह भावज की बात की क्या परवाह करेगी, इस तरह गोया अपना घर भी तबाह हुआ और बराबर तकलीफ़ों का सामना भी करना पड़ा।

इन मिसालों से तुम समझ गयी होगी कि मेरा क्या मतलब है मैं यह नहीं कहता कि बीवी को हरजा-बेजा हुक्म को मान लेना चाहिए, मगर यह ज़रूर कहूंगा कि अगर लड़की, ज़रा-सी अक़्लमंदी से काम ले और अपने शौहर के मिज़ाज, फ़ितरत और आदतों को समझ ले, तो मामला कभी न बिगड़े। ज़िद मामले को ख़राब कर देती है। मेरे ख़्याल में अगर कोई बीवी समझदार हो और शौहर को अपनी मुहब्बत, ख़ुलूस और हमदर्दी का यक़ीन दिला दे और बे-जा ज़िद से काम न ले तो कोई शौहर भी ऐसा बेदर्द न होगा कि ख़ुद ही तो हज़ारों आरज़ूओं और तमन्नाओं के साथ शादी करे और ख़ुद ही अपनी जीवन-साथी को मुसीबतों और तकलीफ़ों में डाल दे।

मर्द की सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वह अपनी बात की मुख़ालफ़त पसंद नहीं करता, ख़ास तौर से जब वह मुख़ालफ़त उसकी बीवी करती है, तो उसका मिज़ाज बिल्कुल बिगड़ जाता है। इसलिए अगर कोई बीवी यह चाहे कि शादी के बाद उसकी ज़िन्दगी तबाही या बर्बादी में न हो तो उसे किसी मामले में शौहर से खुल्लम खुल्ला मुख़ालफ़त नहीं करनी चाहिए, बल्कि उसकी बात को किसी दूसरे तरीक़े से शौहर के सामने पेश कर मनवा लेनी चाहिए, सिर्फ़ मुख़ालफ़त कभी कामयाब नहीं होती।

अक़्लमंद समझदार बीवियां यह करती हैं कि उन्हें किसी मामले में अपने जीवन-साथी से इख़्तिलाफ़ होता है, तो वे उसे फ़ौरन ज़ाहिर नहीं करती और किसी ऐसे मौक़े की तलाश में रहती है कि जिसमें उनकी बात शौहर को नागवार न गुज़रे और बात असर करे। जो

बात मौक़े पर समझाई जाये, वह बहुत कारगर होती है। दिल्ली का एक वाक़ग्रा मुझे याद आया :—

एक शरीफ़ घराने की लड़की, जिसका नाम अज़ीज़ा था, उसके माँ-बाप ने एक अच्छे क़ाबिल पढ़े-लिखे घराने में उसकी शादी कर दी। लड़की अज़ीज़ा भी पढ़ी-लिखी समझदार और सुलझे हुई मिज़ाज की थी। जब ससुराल में जाकर क़दम रखा तो एक नई दुनिया नज़र आई। कुछ दिन तो ख़ैर घूंघट में गुजरे, न अच्छे की खबर, न बुरे की, गो आंखें बन्द थीं, मगर मकान में तो आवाज़ें सुनाई देती थीं। धीरे-धीरे शर्म खुली तो देखा सब सूरतें अजनबी और घर का रंग-ढंग भी निराला, रहे दूल्हा मियाँ तो वह दुल्हन की तरफ़ ज़रूरत से ज़्यादा मुतवज्जह और आशिक़। आगे की ख़ैर खुदा ही बेहतर जनता है कि कैसे निभेगी। घर में सास (नईमा बेगम) के अलावा तीन नन्दें थीं, बड़ी का नाम सुल्ताना था जो ब्याही हुई थी, मालूम हुआ कि बद मिज़ाजी की वजह से लड़-झगड़ कर कई साल से माँ के यहां बैठी है, मझली नन्द का नाम ताहिरा, जो शादी के क़ाबिल थी मगर अभी कुंवारी थी और छोटी जिसका नाम रज़िया था, जो अभी सात आठ साल की थी।

अज़ीज़ा ने सास का रंग-ढंग पहले ही जांच लिया था कि बड़ी झक्की हैं। आये दिन मां बेटियां बल्कि बेटे से भी झड़प होती रहती थी। बड़ी नन्द को तो कलंक का टीका लगा हुआ था कि ससुराल में नहीं निभ सकी, जभी तो मैके में आ बैठी। मंझली भी देखने में मिलनसार मालूम न होती थी। रही छोटी नन्द, एक तो वह अभी किस गिनती में थी, इसलिए कि अभी बच्चा ही थी। अज़ीज़ा ने पहले उसी को अपना बनाया और जो कुछ मालूम करना होता, उसी से जनकारी हासिल कर लेती।

ससुर, एक अच्छे और नेक आदमी थे, मियां पढ़े-लिखे अंग्रेज़ीदां, फ़ैशन के आशिक़, हर वक़्त बनाव-सिंगार, कंघी-ब्रुश, कालर-नकटाई

बूट की सफ़ाई वग़ैरह में लगे रहते और घरेलू बातों से उन्हें कोई मतलब ही न था। अज़ीज़ा बुरी तरह इस घर में आ फंसी थी, जिसका हर आदमी अनोखा मिज़ाज रखता था। ख़ुदा ही उसकी शर्म रख ले। अगर कोई नादान और नासमझ होती तो छक्के छूट जाते, घबरा जाती और एक की दस-दस, अपनी मां से लगाती और उसी वक़्त से क़िस्से-झगड़े शुरू हो जाते, लेकिन वह बड़े ठंडे मिज़ाज और मुस्तक़िल इरादे की लड़की थी, जब उसने ससुराल की तमाम बातों को अच्छी तरह जान लिया, तब उसमें सुधार लाने का बीड़ा उठाया।

सबसे पहले उसे यह मालूम करके ताज्जुब हुआ कि ससुर साहब की आमदनी छः सौ रुपए महाना है और मियां की आमदनी तीन सौ रुपए माहाना है। दोनों की आमदनी नौ सौ रुपए माहाना हुई, जो किसी शरीफ़ घर के गुज़ारे के लिए किसी तरह कम न थी, मगर जब देखो तो ढाक के तीन पात। घर में ख़ाक उड़ रही है न फ़र्श-फ़रूश दुरुस्त है न चारपाइयां और पलंग ढंग के, न बर्तन मुनासिब, जिधर देखो, फूहड़पन, जिस ओर नज़र दौड़ाओ बेढंगापन, खाना है तो बद-मज़ा, मीठा रूखा, फीका, बद-रूपा और सबसे बढ़ कर मज़ा यह कि जितनी आमदनी उससे ज़्यादा ख़र्च। भला यह बेल कैसे मंढ़े चढ़ सकती थी। ससुर को ख़बर नहीं कि घर में क्या हो रहा है, सास स्याह सफ़ेद की मालिक थी, जो चाहे करे। ससुर अपनी कुल आमदनी बीवी को देते थे और उलट कर पूछ न सकते थे कि यह कुल रक़म क्या होती है और कहां-कहां ख़र्च होती है। हर आदमी बड़ी बीवी के मिज़ाज से सहमता और डरता रहता था। मामाएं घर में एक छोड़कर दो-दो थीं, मगर सब चोर, उचक्के और निगरानी की मुहताज रहे मर्दाने के नौकर, वे टर्रबाज़ और मुंह-ज़ोर, औरतों की वे कब सुनते। एक कहती थी, तो दस सुनाते थे मतलब यह घर क्या था, फुहड़पन, ढंगेपन, और बद-तमीज़ी का

एक तूफ़ान था। ऐसे बिगड़े हुए घर को ठीक करना मामूली अक़्ल के आदमी के बस की बात न थी, न दो-चार दिन का काम था, उसको वर्षों ही चाहिए था।

अज़ीज़ा के लिए यह मुम्किन न था कि घर की चलती हुई गाड़ी को एकदम दर्मियानी राह पर लगा देती। वह घर के हर आदमी के मिज़ाज व तबियत को ध्यान से देख रही थी, और जानकारी हासिल कर रही थी। ससुर से वह अभी बात-चीत नहीं कर सकती थी और सास का मिजाज़ एक तो झक्की था, दूसरे दिल में बड़ाई, घमंड। एक तो कूड़वा करेला, दूसरे नीम चढ़ा। मतलब यह है कि बहू को ऐसी टेढ़ी-मेढ़ी निगाहों से देखती थी कि नज़रों ही नज़रों में खाये जाती थी।

रही बड़ी नन्द बिजली पसन्द, वह मां से भी कई हाथ बढ़ी हुई थी। कभी उन्होंने भावज से सीधे मुंह बात भी न की और उनका बात न करना ही अच्छा था। उनको दिन-रात ससुराल की शिकायत और मियां का दुखड़ा रोने से कब फ़ुर्सत, जो फ़ावज से मुठभेड़ करती। हाँ, दूर ही दूर से आवाज़ें तवाज़े कहती रहती थी, दूसरों पर ढाल-ढाल कर बातें बनाती रहती थी और गज्जी मार देती थी कि तौबा भली और फिर अलग की अलग। जब कभी पूछा, साफ़ मुकर जाती थी। तौबा, तौबा मैंने यह बात कब कही। उनका तो कोई ज़िक्र न फ़िक्र। वह बात तो फ़्लां की थी और बुआ ज़बरदस्ती अपने पर कोई ढाल ले तो इसका क्या इलाज। नक्टे के सामने नाक खुजाई, उसने कहा, मुझको ही चिढ़ाया। क्या ख़ूब इसका मतलब यह है कि इनके सामने कोई बात न करे, अपना मुंह सी ले। ऐ बुआ! जब अलग घर करके बैठोगी, जब ऐसी बातें करना, यह घर कोई तुम्हारा नहीं है, मेरी माँ का है। अज़ीज़ा नन्द की ये सब बात बर्दाश्त करती, एक कान से सुनती, दूसरे कान उड़ा देती। वह जानती थी कि भलों के साथ भलाई करना कमाल नहीं, बल्कि बुरों

के साथ भलाई करना कमाल है। वह जानती थी कि परवरदिगार ने अपने बन्दों की ख़ूबियों में एक ख़ूबी यह भी बताई है, जब वे बेकार की बातें सुनते हैं, तो उससे बचते हैं और कहते हैं, हमारा क्या हमारे साथ तुम्हारा क्या। हमारे साथ हमारे अमल और तुम्हारे साथ तुम्हारे अमल। तुम पर सलाम है। हम नासमझों से नहीं उलझते।

हदीस में आता है, जो किसी की बुरी बात सुनकर सब्र करले और उसका जवाब न दे, तो फ़रिश्ते उसके बदले में जवाब देते हैं और अल्लाह सब्र करने वालों को पसन्द फ़र्माता है और उसके दर्जे बुलन्द कर देता है मतलब यह कि अज़ीज़ा उनकी बातें सुनकर कोई जवाब न देती और समझती कि जवाब देने में बात बढ़ेगी, फ़ायदा कुछ न होगा और जवाब न देने में फ़ायदा ही फ़ायदा है।

रही मंझली नन्द, वह भी घुन्नी, मिमिसी, जितनी ऊपर थी उतनी ही नीचे थी। बड़ी ज़ुबान ज़ोर, लड़ाका, बात-बात में लान-तान करने वाली, लेकिन अज़ीज़ा उनकी तबीयत को समझ गई थी, वह उसको ऐसा मौक़ा आने ही न देती थी कि लड़ने-भिड़ने की नौबत आये, मगर दूर ही दूर से वह भी ज़हर उगलती रहती थी, मगर अज़ीज़ा अपने अच्छे अख़्लाक़ से सबको बर्दाश्त कर लेती थी और अपने दिल को समझा लेती कि ना समझों के साथ ना समझ बनना नासमझी है। नापाक पानी से नापाकी दूर नहीं होती बल्कि पाक पानी से नापाकी दूर होती है। क़ुरआन मजीद में भी आया है बुराई को अच्छाई से दूर करो, बद-अख़्लाक़ी को अख़्लाक़ से दूर करो।

प्यारे नबी सल्ल० ने फ़र्माया, तुम में बहादुर वह नहीं है जो बहुत ज़्यादा वज़न उठाये, बल्कि बहादुर वह है जो अपने ग़ुस्से को दबा ले। दूसरी जगह है, जो अपने मुख़ालिफ़ दुश्मन की बात को बर्दाश्त करे, वह बहादुर है। रह गई छोटी नन्द, चूंकि उसको अज़ीज़ा ने शुरू ही से गांठ लगा रखा था, वह भावज की तरफ़ थी।

अब सुनिये दूल्हा मियां की बात, जो शुरू-शुरू में मुहब्बत की बातें करते थे, कुछ दिनों बाद वह बात न रही। खुल्लम-खुल्ला बिगाड़ तो हुआ नहीं, सिर्फ़ इसलिए कि अज़ीज़ा ने अपनी खुद्दारी की वजह से इसकी नौबत ही न आने दी। मगर जैसा मियाँ बीवी को हो जाना चाहिए था, वह बात न हुई। इस ताल्लुक़ के न बढ़ने की वजह ज्यादातर उनकी सास थीं और उनकी कान भरने की आदत थी। अन्दर ही अन्दर वह बेटे को लगा बुझाकर उभारा करती थी और हर बात में शह देकर बिगाड़ डलवाने की कोशिश में लगी रहती थी। कुछ तो माँ का उकसाना और कुछ हज़रत की आज़ाद-ख्याली उनकी राह की रुकावट थी।

मियाँ का अब हाल यह था कि मदरसे के वक़्त के अलावा बाक़ी ज्यादा वक़्त उनका मदरसे में गुज़रता था, यहां तक कि खाना भी बाहर खा लिया करते थे, मदरसे से आये, मुंह-हाथ धोया, भागम-भाग चाय पी, कपड़े बदल हवाखोरी को निकल गये, वहां से कभी ग्यारह बजे रात को आये, दिल चाहा तो आये, कभी दिल न चाहा, तो न भी आये। जल्दी-जल्दी कुछ खाया, कुछ नहीं, फिर लम्बी तान कर जो सोये तो सुबह की खबर लाये और बीवी से बातचीत करने का वक़्त ही कौन-सा था।

सबसे पहले अज़ीज़ा ने सीधे रास्ते पर लाने की कोशिश की। यह नहीं किया कि एकदम ही मियाँ का टेंटुआ दबा दिया, या मरने मारने पर पिल पड़ी, या मुंह को फुलाकर पड़ गई, या मियां से बातचीत करना बन्द कर दी, या अटवाटी-खटवाटी लेकर पड़ गई। उसने ऐसा नहीं किया, बल्कि इसके ख़िलाफ़ मियां से और ज्यादा हंसते चेहरे के साथ मिलती, मजाल क्या जो तेवरी पर ज़रा बल भी आ जाये या गुस्सा और नाराज़ी का शक तक भी हो ज़ाये। मियां पर कभी यह खुला ही नहीं कि उसका देर से आना कभी बीवी को ना-पसन्द भी हुआ है, बल्कि वह दिल ही दिल में कहता था कि

अजीब औरत है कि किसी बात की परवाह नहीं करती। देर से आओ तो कुछ नहीं, सवेरे आओ तो कुछ नहीं, आओ तो अख्तियार, न आओ तो तुम्हारी खुशी। किसी बात का उस पर असर ही नहीं होता, लेकिन बीवी अन्दर ही अन्दर मन्सूबे गांठ रही थी और इस तरह धीरे-धीरे तदबीरें कर रही थी कि किसी को कानों-कान खबर न हुई।

दिन भर तो मियां घर में क़दम ही न धरते थे और आधी रात सैर-सपाटे में गंवा देते थे और बीवी का यह हाल था कि अकेले बैठे उसका दम घबरा जाता था, कभी कुछ सीना ले बैठी, कभी कोई किताब पढ़ने लगी, खाना लिए मियां के इन्तिज़ार में दरवाज़े पर निगाहें जमाये बैठी रहती थी, कभी-कभी नींद के झोंके भी आ जाते थे, मगर क्या मजाल जो कमर सीधी कर ले। ज़रा पांव की आहट हुई कि फट उठ खड़ी हुई। अंगीठी पास रखी होती थी, सालन गरम किया, रोटी को पहले ही दस्तरखान में अच्छी तरह से लपेट दिया करती थी कि ठंडी न हो जाये दस्तरखान बिछा कर मियां के हाथ धुलाये, मियां खाते रहे, आप पंखा झलती रही। इधर खाना खत्म हुआ उधर गिलोरी तैयार, हुक़्क़ा भरवा कर रखा, अगर मामा न हुई तो झट आप भर दिया। उनके खिलाने से उस वक़्त छूटती, जब कि सारे घर में सन्नाटा रहता था और खर्राटों के अलावा कोई आवाज़ सुनाई न देती थी। उस वक़्त जाकर टुकड़ा-टैरा बीवी को नसीब होता था, मगर वाह रे सब्र, यह उसी में मगन, उसी में खुश। ऐसों के लिए ही कहा जाता है, 'जिसमें तुम राज़ी, उसी में हम राज़ी। यानी शौहर में फ़िना का दर्जा हासिल हो गया था और क्यों न होता, जब कि उसने प्यारे रसूल सल्ल० की वह हदीस सुनी हुई थी, जिसमें प्यारे नबी सल्ल० ने फ़र्माया, 'ऐ औरत ! याद रख ! तेरी जन्नत और दोज़ख तेरा खाविन्द है,' यानी अपने खाविन्द की खुशी में जन्नत की हक़दार बनेगी और नाराज़ी में जहन्नम में

जायेगी।

दूसरी हदीस में आया है कि, औरतों से अच्छी वह औरत है, जो अपने खाविन्द को खुश रखती है, जब वह उसको देखता है तो उसका कहना मानती है, जब वह कोई हुक्म करता है तो अपने माल व जान में उसके खिलाफ़ नहीं करती, जिससे उसको रंज पहुँचे। यानी जो औरत अपनी जान व माल से अपने खाविन्द को खुश करने में लगी रही, अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक वह सबसे अच्छी औरत है। मतलब यह कि जो हदीसें तुम पहले पढ़ चुकी हो, वे सब उसके ज़ेहन में थीं, इसलिए वह क्यों न खाविन्द की खुशी में खुश होती। एक दिन मियां को मूड में पाकर डरते-डरते छेड़ा और कहा कि 'अगर आप बुरा न मानें और मुझे माफ़ करें तो कहूं।'

'शौक़ से कहो, क्या बात है?'

'बात तो कुछ ऐसी है नहीं, मगर मेरे दिल में खटक ज़रूर रही है। आप सारे दिन तो बाहर ही रहते हैं। मैं जानती हूं कि मर्दों को सैंकड़ों काम होते हैं, दिन में रहें तो क्या खास बात हुई। मर्द औरतों की तरह घर में बैठे तो नहीं रह सकते, मगर मुश्किल यह है कि रात का एक बड़ा हिस्सा भी आप बाहर ही काट देते हैं और मुझे अकेले पड़े-पड़े डर लगता है।'

'दिन भर मुझे सिर खुजाने की फ़ुर्सत नहीं मिलती, रही रात, तुम तो जानती ही हो, मैं हवाखोरी का आदी हूं, बाहर चला जाता हूं और वहीं से कोई न कोई दोस्त पकड़ ले जाते हैं। मैं बहुत चाहता हूं कि जल्दी छुटकारा मिले, मगर वे लोग छोड़ते ही नहीं। ताश, शतरंज, कैरम, चौसर वग़ैरह में कुछ इस क़दर जल्दी रात गुज़र जाती है कि मैं समझता हूं कि अभी तो सवेरा ही है और यहां आते-आते बे-शक देर हो जाती है और मुझे अफ़सोस है कि मेरी वजह से तुमको इन्तिज़ार की तक़लीफ़ गवारा करनी पड़ती है। तुम कल ही

से देख लेना, इन्शाअल्लाह मैं सवेरे आने की कोशिश करूंगा।'

'(मुस्करा कर) खुदा हमारे इरादे को पूरा फ़र्माये।'

बात गई गुज़री हुई। फिर बीवी ने उलट कर न पूछा और मियां को बिल्कुल उसकी मरज़ी पर छोड़ दिया। अब इतना हो गया था कि ग्यारह-बारह की जगह लगातार नौ ही बजे घर में आ जाया करते थे। बीवी की नसीहत कैसे काम कर गई और क्यों न होती, जो बात मौक़े पर कही जाती है, वह तो दिल में घर ही कर जाती है।

बाहर का हाल औरतों को क्या मालूम कि मर्द क्या गुलछर्रे उड़ाते हैं, मगर चाल-ढाल और मियां की बे-रुखी साफ़ बतला रही थी कि उनका दीदा हवाई हो गया है और बीवी से न उन्हें ताल्लुक़ है, न लगाव। कुछ ही दिनों बाद कान में आवाज़ पड़ी कि कुछ आवारा बदमाशों की सोहबत में फंस गये हैं और अपनी तन्दुरुस्ती, क़ीमती वक़्त बर्बाद कर रहे हैं और चोरी-छिपे कभी-कभार नाच-रंग भी शुरू हो गया है, बाज़ारी औरतें आने-जाने लगी हैं, बल्कि उड़ती हुई यह बात भी कान में पड़ी कि शहर की किसी रंडी के कोठे तक भी पहुंच गये हैं और सिनेमा, थिएटर, तमाशबीनी भी आदतों में दाखिल हो गई है।

अज़ीज़ा ऐसी बेवक़ूफ़ न थी कि हथेली पर सरसों जमाती और मियां से भिड़ जाती और फ़ौरन ही इन बातों की जवाब तलबी करती। मगर ऐसा कर बैठती तो फिर मियां से हाथ भी धो बैठती और रहा-सहा लिहाज़ भी उठ जाता। अब जो कुछ हो रहा था पर्दे से यानी चोरी-छिपे हो रहा था, फिर एलानिया डंके की चोट पर होने लगता। बीवी तेल देखती, तेल की धार देखती, मौक़े की घात में रहती। वह समझती थी कि देर का आना सही ही होगा, जो दौड़ कर चलता है, वही गिरता भी है और बे-मौक़े बात कहना-समझाना भी फ़ुज़ूल होगा और बजाय फ़ायदे के नुक़सान होगा और

मियां को वह पाबंद भी करना चाहती थी, न कि एकदम बन्द। बे-मौक़े बात न करती थी और ज़ुबान पर भूल कर शिकायत की कोई बात न लाती थी। वह ऐसी भोली-भाली और अन्जान बन गई थी कि गोया मियां के करतूतों की उसे कुछ ख़बर ही नहीं। इस रवैये की कुछ और बात थी। वह ऐसे मौक़े की तलाश में थी कि बात कहूं तो ख़ाली न जाये। वह बातों ही बातों में मियां को ऊंच नीच समझाया करती थी, इस तरह कि ताने व शिकायत का ख़्याल भी न हो, बल्कि सुनने वाला उसको ख़ैरख़ाही, हमदर्दी और ख़ुलूस व मुहब्बत की बात समझे।

एक दिन मौक़ा पाकर कहने लगी, ये जितने तुम्हारे 'गहरे दोस्त' कहलाते हैं, बुरा न मानना ये सब हवा के साथी हैं, झूठे लबड़िये, डींगें, शेख़ीख़ोरे, घर खाऊ और सच पूछो तो इज़्ज़तख़ोर, आबरू डुबोऊ हैं। इनकी सोहबत तुम्हारे हक़ में ज़हर है। यानी हलाक करने वाले ज़हर की तरह और डसने वाले सांप की तरह है, जिनका फैलने वाला असर आइन्दा बड़ी-बड़ी ख़राबियां लाने वाला है। ये सब ख़ुदग़रज़ मतलबी, तोताचश्म हैं, ख़ुशामदी, अपनी-अपनी रोटी पर दाल घसीटने वाले हैं, रत्ती बराबर तुम्हारी भलाई इन ख़बीसों में से किसी के दिल में नहीं है। मैं जानती हूं, इस वक़्त मेरा यह कहना तुम्हें बोझ हो रहा होगा, तुम पढ़े-लिखे, समझदार और मर्द हो, मैं जाहिल उजड्ड औरत हूं। तुमसे कुछ कहना लुक़मान को हिकमत सिखाना और चांद के सामने चिराग़ जलाना है। लेकिन क्या करूं मजबूर हूं, दिल नहीं मानता कि तुमको बे-राह चलते या बुरी सोहबत में बैठता देख लूं। क्या ऐसा देखकर मेरा दिल ख़ुश हो सकता है? क्या तुम्हारा जानी और माली नुक़सान होते देखूं और आंखें बचा जाऊं। मुझसे अपनी आंखें बन्द नहीं की जा सकतीं। याद रखिये और मेरी बात को गिरह बांध लीजिये कि अगर आज ख़ुदा न करे, आपके दुश्मनों पर ज़रा-सी बात आ पड़े, तो जो आज आपकी

दोस्ती का दम भरते हैं और कहते हैं कि जहां तुम्हारा पसीना गिरेगा, हम खून बहाने को तैयार हैं, ये सब चलती गाड़ी के साथी हैं, जिधर हवा का रुख होता है उधर इनका भी रुख होता है और अगर जरा हवा बिगड़ी तो यह गोया फटे पर की चिड़ियां हैं। एक भी तो पास न फटकेगा। तुम्हारी सारी उम्र तो इल्म हासिल करने में गुज़री, बी० ए० हुए और अब भी इल्म की किश्ती में सवार हो खुद नहीं पढ़ते तो दूसरों को पढ़ाते हो। बात एक ही है यानी है तो वही काम, वही तीन बीसी के साठ, क्या तुम जैसे आदमी को सिवाय पढ़ने-पढ़ाने के और कोई काम चाहिए, जो दर-बन्दर भटकते फिरते हो? लोग तुमको ऐसी ग़लत सोहबत में देख कर क्या कहते होंगे, चाहे तुम्हारे मुंह देखे या लिहाज़ के खातिर तुम्हारे सामने कोई कुछ न कहे, मगर पीठ पीछे तो ज़रूर मलामत करते होंगे।

लिखे-पढ़े आदमियों को किताब पढ़ने से ज्यादा कौन सा अच्छा और दिलचस्प काम हो सकता है? मगर आप अपने क़ीमती वक़्त को बुरी सोहबतों में खर्च करने के बजाये अपने घर में बैठ कर कितबें पढ़ा करें, तो कैसी अच्छी बात है, तुम्हा दिल भी बहल जायेगा और उम कमबख्त लुंगारों का भी मुंह काला हो। आप यह न समझिये गा कि मैं कुछ अपने मतलब से यह कहती हूं फिर मेरा मतलब भी हो, तो क्या हरज, आखिर मैं तुम्हारी बीवी हूं, मुझसे बढ़ कर तुम्हारा कोई हमदर्द और भलाई चाहने वाला दूसरा नहीं हो सकता। मैं हरगिज़ यह नहीं चाहती कि तुम दिन रात में घुटने से लगे बैठे रहो, हरगिज़ नहीं, मर्द औरतों की तरह घर में क़ैद थोड़ी हैं। जो उन्हें क़ैद करना चाहे, वह पागल है, अपनी तन्दुरुस्ती के लिए थोड़ी बहुत हवाखोरी या कोई वर्जिश करनी जरूरी है, लेकिन हर चीज जो ज्यादती के साथ न की जाए, भली लगती है।

मतलब यह कि मियां अपनी बीवी की ये बातें सुनकर दिल ही दिल में क़ायल और शर्मिन्दा हुआ। मियां माक़ूल पसन्द था उस

वक़्त कुछ ऐसा झेंपा कि जवाब न बन पड़ा और सीधी सच्ची बा..
मौक़े को देख कर कही जाए और ढंग के साथ कही जाए तो उसका
जवाब क्या हो सकता था। वह चुप साध गया, मगर उसी वक़्त
अपनी हरकतों पर शर्मिन्दगी उसके चहरे से झलकने लगी और दिल
ही दिल में ग़ौर करने लगा कि क्या करूं। अगर एकदम अपनी
पालिसी बदल दूं तो यह भी ठीक नहीं। मतलब यह है कि उसका
दिल उस को मलामत कर रहा था। उसने उसी वक़्त पक्का इरादा
कर लिया कि धीरे-धीरे इन ताल्लुक़ात को ज़रूर कम करना है।

अगर अज़ीज़ा समझदार, दूर तक सोचने वाली न होती और
जैसा कि आजकल की बीवियों का क़ायदा है, लड़ने-भिड़ने पर उतर
आती हैं, अगर यह भी वही तरीक़ा अख़्तियार करती तो यक़ीनन
हमेशा के लिए मियां से हाथ धो बैठती, मगर वह थी तो लड़की,
ना तजुर्बेकार, मगर ख़ुदा ने उसे अक़्ल की दौलत से माला-माल
किया था। वह जानती थी कि ज़रा मैंने सख़्ती की या कोई बात
ख़िलाफ़ मरज़ी की तो यह भड़कते हुए कबूतर की तरह हाथ से
निकल जाएगा। वह सब बातों को देखती थी, मगर क्या मजाल
कि किसी के आगे मुंह से बात निकाले या मियां के मुंह पर कुछ
कहे। ज्यों-ज्यों मियां खिचते गये वैसे-वैसे बीवी झुकती गई। अपनी
ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ अपने पित्त को मारा। अपने राहत व आराम
को क़ुर्बान किया, कभी मियां पर इस बात को ज़ाहिर भी न होने
दिया कि उसे कुछ अपने करतूतों की ख़बर है, जब और जिस हालत
में और जिस वक़्त मियां घर आये, बड़े हंसते चेहरे से उनको लिया
जो कहा, सो माना, कभी मियां की कोई बात न काटी, वह बात न
कही जिससे मियां का दिल दुखे।

अज़ीज़ा बिगाड़, लड़ाई और दबाव से मियां पर क़ाबू हासिल
करना नहीं चाहती थी, बल्कि इताअत, ख़िदमतगुज़ारी, और फ़रमां-
बर्दारी से, जब ख़ुश-ख़ुश पाया, मुख़ालिफ़ बन कर नहीं, शिकायत

के तौर पर नहीं, ताने देकर नहीं, जली-कटी बातो से नहीं, बल्कि भलाई चाहते हुए, हमदर्दी के साथ, मुख्लिस बन कर बड़ी नर्मी, ख़ुशामद के साथ और छोटा बन कर ऊँच-नीच समझाया। जब देखा बात बढ़ती है और बुरी लगती है, वहीं उसे छोड़ दूसरी बात छेड़ दी। फिर जब कभी मौक़ा देखा, सिलसिला चला दिया, मतलब यह कि मर्द की ज़िम्मेदारी सांप का खिलाना दोनों बराबर हैं। यह काम अज़ीज़ा का ही था कि अपनी अक़्लमन्दी से बिगड़े हुए शौहर को सांचे में ढाल लिया, जितने लूट-खसोट बदमाश यार थे, सबसे अलग हो गए। उन्होंने उनके यहां जाना छोड़ा, उन्होंने आना बन्द किया। कुछ दिनों बाद लोगों ने देखा कि वह एक ईमानदार सीधे-सच्चे मुसलमान बन गए थे। इस वक़्त उनके पूरे वाक़िआत सुनाने की गुन्जाइश नहीं, क्योंकि और बातें कहनी हैं, वरना इसमें बहुत लम्बा मज़मून हो जायेगा।

मैं पहले कह रहा था ससुराल में तुम्हें अपने शौहर के अलावा और जिन हस्तियों से वास्ता पड़ेगा, उनमें सबसे ज़्यादा अहम हस्ती सास की होगी। तुम उस हस्ती की अहमियत का अन्दाज़ा इसी तरह कर सकोगी, जब कि तुमको अपनी मां की अहमियत का ख़्याल तुम्हारे दिल में हो। हम शुरू में तुम्हें बता चुके हैं कि तुम्हारी मां की कितनी अहमियत है और तुम अपनी मां से कितनी मुहब्बत करती हो। मान लो तुम्हारी बहन या भाई तुम्हारी मां का कहना न माने या कोई रिश्तेदार या कोई ग़ैर कोई बुरा-भला कहे तो क्या तुम्हें उसकी तकलीफ़ न होगी। जिस तरह तुम यह चाहती हो कि सब तुम्हारी मां को अच्छा कहें, सब तुम्हारी मां से ख़ुश रहें, सब तुम्हारी मां का कहा मानें, उसी तरह तुम्हारे शौहर की भी यही तमन्ना होगी कि सब उनकी मां को अच्छा समझें, सब उनकी तारीफ़ करें, सब उनका कहना मानें। इसके अलावा तुम्हें एक बात और ज़ेहन में रख लेनी चाहिए कि तुम जिस घर में जा रही हो,

अब तक उस घर की मालकिन तुम्हारी सास रही हैं। अब तक तमाम घर का इन्तिज़ाम उन्हीं के मुताबिक़ होता रहा है, अब तक घर के तमाम मामलों में उन्हीं की राय और उन्हीं के फ़ैसले को ज़्यादा अहमियत दी जाती रही है और तुम्हारे जीवन-साथी भी अब तक उन्हीं के कहने पर चलते रहे होंगे।

ज़ाहिर है कि ऐसी सूरत में एकदम घर का निज़ाम बदल नहीं सकेगा। इस घर में जो लोग भी ऊँचा मुक़ाम रखने वाले हैं, उसी तरह मुक़ाम रखे रहेंगे। अब तक जिन बुज़ुर्ग हस्तियों के इशारों से घर के काम-काज होते रहे हैं, अब भी होते रहेंगे और घर वाले जिन बुज़ुर्गों की इताअत करते आये हैं, अब भी उन्हीं की इताअत करेंगे। इसमें हमें या तुम्हें बुरा मानने की ज़रूरत नहीं है। तुम अगर यह उम्मीद करोगी कि तुम्हारे जाते ही इस घर का हर आदमी अपने तमाम अख़्तियारों से हाथ धोकर तुम्हें अपना बुज़ुर्ग समझने लगे, तो यह तुम्हारी ना-समझी और लड़कपन होगा और इस तरह की उम्मीद से सिवाय इसके और कुछ हासिल न होगा कि तुम ख़ुद अपने लिए मुसीबत और परेशानी की वजह जुटा लो।

तुम्हारे सामने घर की मिसाल मौजूद है कि जब तुम्हारी भाभी जान घर में पहले-पहल आई थीं, तो उस वक़्त से लेकर जब तक तुम्हारे भाई जान कारोबार के सिलसिले में बाहर न चले गए, घर के इन्तिज़ामों में तुम्हारी भाभी जान का ज़्यादा दख़ल न होने पाया, यहां तक कि वे अपनी तमाम ज़रूरतों की चीज़ें भी तुम्हारी माँ से कह कर मँगवाया करती थीं। अब तुम्हारी भाभी जान भी अपने शौहर के पास चली गई हैं। अब उनका पूरा-पूरा अख़्तियार होगा कि वे अपनी और अपने शौहर के मुताबिक़ घर के तमाम इन्तज़ाम करें और बिल्कुल आज़ादी के साथ अपनी तमन्नाओं और आरज़ूओं को पूरा करें।

एक बात और भी याद रखनी चाहिए कि जिस घर में तुम

जाओगी, वह घर असल में तुम्हारी सास और ससुर का होगा। तुम उस घर में एक मेहमान की हैसियत से जाओगी, जिसे थोड़े ही दिनों में मेज़बानी करनी पड़ेगी, इसलिए यह मानी हुई बात है कि ससुराल में पहुंचते ही तुम्हारी ससुराल के लोग तुम्हें अपना बड़ा मानने के लिए किसी तरह तैयार न होंगे और न उन्हें होना चाहिए। यह और बात है कि तुम्हारी सास बुज़ुर्गों जैसी मुहब्बत से काम लेकर घर के मामलो में तुम्हारी राय या मश्विरा लेती रहें और यह बात भी है कि तुम तमाम घर वालों को अपनी बातचीत और काम से यक़ीन दिला दो कि तुम उन सबका भला चाहने वाली हो और तुम्हारी हर राय ख़ुलूस के साथ होती है, तो तुम्हारे इस रवैये से ख़ुश होकर तुम्हारी सास और ससुर हर बात में तुम्हारा मश्विरा लेने लगेंगे, लेकिन हक़ीक़त यह है कि जो हस्तियां बरसों से घर का तमाम निज़ाम अपनी मरज़ी के मुताबिक़ किये हुये हैं, वे तुम्हारे पहुंचते ही तमाम अख़्तियार तुम्हें देने के लिए किसी तरह भी तैयार न होंगी, इसलिए तुम्हें इस तरह की उम्मीदें क़ायम ही नहीं करनी चाहिए और अगर तुम्हारे दिल में घर की मालिका बनने का जज़्बा तेज़ हो तो तुम उस दिन का इन्तिज़ार करना, जब तुम्हारे शौहर अपना अलग कोई घर बनायें, और अपने घर का मुख़्तार तुमको बना दें और फिर तुम पूरी ख़ूबी के साथ अपनी इन्तिज़ामी क़ाबिलियत दिखाओ।

बे-अक़्ल औरतें

जैसे पांचों उंगलियां बराबर नहीं हैं, वैसे ही तमाम औरतें भी बराबर नहीं हैं और न तमाम मर्द ही बराबर है।

कुछ औरतें अपने मर्दों की बिल्कुल इज़्ज़त नहीं करतीं, बल्कि उनकी इज़्ज़त लूट लेने पर ही तैयार रहती हैं और समझती हैं कि

मर्द हमारा ग़ुलाम और ख़िद्मत गुज़ार है, उसको हमारे मातहत रहना चाहिए और मर्द पर इतना ज़ोर डालती हैं, गोया मर्द बजाये औरत के है।

और कुछ औरतें शादी के दिन से पक्का इरादा कर लेती हैं कि हम सास-ससुर से अलग होकर रहेंगे। आते ही सास नन्दों से लड़ाई-झगड़े-फ़साद शुरू कर देती हैं और दिन-रात ऐसी तदबीरें करती हैं, जिससे घर में झगड़ा पैदा हो। बेचारे सास-ससुर जो हज़ारों आरज़ू, तमन्ना से बहू को शादी करके लाये हैं, उनकी आरज़ू का वे ख़ून करती हैं और उनको शादी करने का मज़ा जल्द चखा देती हैं। उस नेकबख़्त बहू को ज़रा सब्र नहीं होता कि मौक़े और वक़्त का इन्तिज़ार करे और सोचे की सचमुच मौक़े और वक़्त से जुदा होना पड़ेगा। सदा सास ससुर के साथ कोई नहीं रहता। अगर दुनिया में लोग जुदा न होते तो ये हज़ारों मकान, मुहल्ले, गांव और क़स्बे कहां से आबाद हो जाते, लेकिन उसको इतनी अक़्ल और तमीज़ नहीं होती कि वह इस बात को समझे और मौक़े और वक़्त का इन्तिज़ार करके सब्र करे मगर वे तो यह चाहती हैं कि जो कुछ होना है, वह आज ही हो जाये। मर्द को ऐसे-ऐसे तरीक़े से परेशान करती हैं और तरह-तरह की बातें सुनाती हैं कि मर्द भी मजबूर हो जाता है। सास नन्दों की या और जो कोई घर में रहता हो, उनकी बुराई तरह-तरह से करती हैं कि हमारी मरज़ी के मुताबिक़ अलग हो जाए।

एक दोस्त की बात याद आई। उनकी शादी होते ही बीवी ने सास-ससुर से अलग रहने का पैग़ाम दे दिया कि मैं तुम्हारे मां-बाप के साथ नहीं रहूंगी। शौहर ने बहुत समझाया कि मैं अभी अलग रहने के क़ाबिल नहीं हूं, तुम अभी साथ रहो। उसने सास नन्दों पर वह-वह इल्ज़ाम लगाये और ऐसी-ऐसी शिकायतें कीं कि मियां को भी यक़ीन न आया और उसने बात को टालने के लिए यह कह दिया

तुम जानो, वे जानें। मैं औरतों के मामले में दखल नहीं देता। उस का यह कहना था कि बीवी ने जवाब दिया मैं तुमको जानती हूं, मेरा निकाह तुमसे हुआ है, मैं और किसी को नहीं जानती, मेरा तुमसे वास्ता है।

मियां ने कहा, 'जो तुमको सिर पर हाथ धर कर लाये, वे तुम्हारे नज़दीक किसी गिनती में नहीं और मैं भी उन्हीं का बेटा हूं, वह मेरी मां हैं तुम तो आज गुस्से में भरी हुई हो, उनसे लड़ चुकीं, अब क्या मुझ ग़रीब से लड़ोगी ?'

बीवी बोली, 'मेरा क्या सिर फिरा है या मैं पागल हूं या किसी बावले कुत्ते ने मुझे काटा है, जो मैं हक़-नाहक़ किसी से लड़ूं या मेरा दिल चल गया है कि मैं खामखाही तुमसे झगड़ूं। लेकिन हां, मैं यह कहती हूं कि मैं किसी कि लौंडी या बांदी नहीं हूं। किसी की दबैल नहीं, जो चाहे कह ले और मैं सबकी ठोकरें खाने के लिए आई हूं।'

'अच्छा तुम्हारा मतलब क्या है ?'

तुम्हारे सामने तो खैर भली-बुरी जैसी गुजरती है वह मेरे खुदा पर रोशन है, लेकिन तुम्हारे जाने के बाद हर आदमी फ़िऔं न ही नज़र आता है और सीधी बात यह है कि तुम्हारे पीछे दम भर के लिए भी मेरा गुज़ारा इस घर में नहीं हो सकता, मैंने बहुत चाहा कि ये लोग मेरे हों, मगर सीधे मुंह बात का भी रवादार नहीं। बात-बात में मेरे कचूके वे खुद लगाते हैं और नाम बदनाम मेरा करते हैं।'

'फिर अब क्या कहना है ?'

'फिर यही कि तुम मेरा ही मुंह काला करो। मुझे अलग घर लेकर दो कि किसी तरह यह आये दिन की लड़ाई दूर हो। मेरा घर भला और मैं भली।'

'क्या खूब' इसका मतलब यह हुआ कि मैं अपनी मां को छोड़

हूं ।'

'नहीं खुदा न करे, मैं तुम्हारी मां को छुड़ाने वाली कौन, खैर मुझी को छोड़ दो। यह तुम्हारे लिए बहुत आसान है।'

'अगर तुम्हारे यही लक्षण रहे तो देर-सवेर एक न एक दिन यह होकर ही रहेगा। अलग घर करना क्या मुंह का नेवाला है। मैं अलग घर किस बूते पर करूं। बाप की रोटियों पर तो मैं खुद पड़ा हूं, नौकरी अभी तक कोई मिली नहीं है।'

'तो फिर नौकरी करो न। मना किसने किया है।'

'हां, ढूंढ़ तो रहा हूं। नौकरी मिलना क्या आसान है। होते-होते ही होगी।'

'कल-कलां को यह इलज़ाम भी मेरे ही सिर धरा जायेगा कि बीवी नौकरी नहीं करने देती और लड़ाई-भिड़ाई की इस वक़्त कुछ बात नहीं। मैं तो तुम से साफ़-साफ़ कहती हूं कि मेरा निभाव इस साझे के घर में होने वाला नहीं।'

मियां ने बिगड़ कर कहा, 'झक मारती हो। इसी घर में तुम को रहना होगा और इसी में मरना होगा, न मैं मां को छोड़ सकता हूं, न तुम को अलग लेकर बैठ सकता हूं।

बीवी ने आंखों में आंसू लाते हुए कहा, 'ऐसी ही तुमको मां की धड़कन थी और तुम दूध-पीते बच्चे थे तो शादी करनी क्या ज़रूरी थी कि अपनी भली-चंगी जान को इस जंजाल में फंसाया और मेरी भी मिट्टी पलीद की और तक़दीर फोड़ी।'

'तक़दीर फूटे या संवरे, मैं कुछ नहीं कह सकता। कुछ सब्र करो जब मैं नौकर हो जाऊंगा तो देखा जायेगा।'

'हमसे तो सब्र नहीं हो सकता तुम जो चाहो कि मुझे जला-जला कर मारो तो मैं ऐसी ज़िंदगी से खुद बेज़ार हूं। अगर हराम मौत का डर न होता, तो मैं कभी का कुछ खा-पी लेती कि यह पाप कट जाता।'

इस वक़्त उनके पूरे हालात लिखने नहीं हैं, क्योंकि बात बहुत

लम्बी हो जायगी। मैं कह रहा था कि मर्द को औरत ऐसे-ऐसे लफ़्ज़ कहती है कि उसको सुनकर पसीना आ जाता है, मगर सिवाए खामोशी के और क्या करे। अगर ज़ुबान से, आंखों से या हाथ से, कुछ औरत की शान में निकल जाए, तो फिर देखो कैसा तमाशा, घर वाले मुहल्ले वाले देखते हैं और औरत रो-रो कर तमाम घर और मुहल्ले को जुटा कर सबको मर्द का तमाशा दिखलाती है। अगर मर्द किसी मसलहत से आंखें चुरा लेता है या बात को टाल कर बाहर चला जाता है, तो बेअक़्ल औरतें यह समझती हैं कि हमसे डर गया, फिर आइन्दा और ज़्यादा पैर निकालती हैं, हालांकि मर्द को अल्लाह ने मर्दे मैदान, तोप और तलवार का सामना करने वाला बनाया है, भला वह औरतों से कब डरता है। वह सिर्फ़ वक़्त की मसलहत को समझ कर टाल जाता है, मगर औरतों को इसकी भी परवाह नहीं होती, वे अपने उसी जोश में रहती हैं और उनको यह भी ख्याल नहीं होता कि मर्द न जाने किस-किस मुश्किल और परेशानी से कमा कर लाता है और तरह-तरह की मुसीबत उठा कर हमारे सामने लाकर रखता है, उसकी हम क़द्र करें, लेकिन उनको भूल कर ख्याल नहीं होता। मतलब यह कि औरत की बेअक़्ली और बे-जा बर्ताव से मर्द तंग आ जाता है और कोई खुशगवारी की सूरत उसको नज़र नहीं आती, तो परेशान होकर परदेस का रास्ता लेता है, फिर बर्षों घर आने का नाम नहीं लेता और औरत की बद-अख़-लाक़ी से उसका दिल पत्थर का हो जाता है। परदेस में जहां उनका रोज़गार लग जाता है वहीं अपनी खुशी का सामान जुटा लेता है। अब औरत घर में बैठी सास-ससुर से लड़ाई-झगड़ा करती रहती है। और यह लड़ाई सिर्फ़ इसलिए होती है कि मुझको खाविन्द के पास पहुंचा दिया जाए और नहीं समझती कि खाविन्द तो हमारा निकाला हुआ गया है, अपनी बे-अक़्ल पर शर्मिन्दा नहीं होती।

अगर औरतें शादी के दिन से मर्द की हां में हां मिलायें और सास

ससुर का कहना मानें तो उनको यह भी मालूम न हो कि बहू हमसे किसी भी वक़्त अलग भी हो जावेगी और सारे घर को अपना गुलाम बना लेगी और अगर फ़र्ज़ करो कि खाविन्द में या सास-ससुर में कोई ऐब औरत के मिज़ाज के खिलाफ़ हो तो आसानी के साथ, धीरे-धीरे और ऐसे तरीक़े से उसमें सुधार करेगी कि उनको नाग-वार भी न गुज़रे और बात समझ में भी आजाए तो वह ऐब उनसे छूट भी जाएगा और ज़ोर-ज़बरदस्ती से कभी उनका ऐब न छूटेगा। मर्द तो और ज़्यादा ज़िद करेगा। हक़ीक़त में औरतों को भी मर्द का दिल रखना नहीं आता।

कुछ औरतें यह भी समझती हैं कि हम बड़े अमीर घर की हैं। हम इतना-इतना जहेज़ और सामान लेकर आये हैं। खाविन्द, सास-ससुर की फ़रमांबरदारी करने से हमारी शान घट जायेगी, यहां तक कि अपने मर्द से भी सीधे मुंह नहीं बोलती। ख़िदमत करना तो दूर की बात वे अपना काम भी खुद नहीं करतीं, सिवाय इसके कि तकिया लगाये सारे दिन सोती या बैठी रहती हैं और हर वक़्त मुंह चढ़ा रहता है और कुछ का यह भी तरीक़ा है कि बीमारी का बहाना करके तकिया से सिर नहीं उठातीं कि मेरे सिर में दर्द है या मेरे सिर में चक्कर आ रहे हैं। मतलब यह कि घर वालों को परेशान कर डालती हैं। सैंकड़ों रुपयों की दवायें, मुरब्बे, ख़मीरे वग़ैरह-वग़ैरह खा जाती हैं और सिर के दर्द और चक्करों को किसी तरह आराम नहीं होता और कभी-कभी जिन्न-भूत को भी लिपटा लिया जाता है। मर्द को हर तरह से नाच नचाती हैं और उसके अक़्ल व होश को खो डालती हैं और काठ का उल्लू बना कर किसी काम का नहीं रखतीं। इसका मतलब सिर्फ़ यह होता है कि मियां हमारी हां में हां मिलाता रहे और हमारी फ़रमांबरदारी करता रहे और जो कुछ हुक्म करें, उसकी फ़ौरन तामील करता रहे और हरदम हमारी ख़िदमत के लिए तैयार रहे, तब ख़ैर है।

मतलब यह कि कुछ बातें नसीहत के लिए लिख दी हैं। इस तरह की हरकतें करने वाली औरतें अल्लाह की नाफ़रमान हैं, दुनिया व आख़िरत में ज़लील व रुसवा होती हैं।

सलीक़ा और अदब

१. जब रात को दरवाज़ा घर का बंद करने लगो, तो बंद करने से पहले घर के अन्दर ख़ूब देख-भाल लो कि कोई कुत्ता-बिल्ली तो नहीं रह गयी, कभी रात को जान का या चीज़ का नुक़्सान करदे और कुछ नहीं तो रात भर खड़-खड़ ही करती रहे और नींद भी उचाट हो।

२. कपड़ों को और अपनी किताबों को कभी-कभी धूप देती रहा करो।

३. घर साफ़ रखो और हर चीज़ अपने मौक़े और जगह पर रखो।

४. अगर अपनी तन्दुरुस्ती चाहो, तो अपने को बहुत आराम तलब न बनाओ, कुछ मेहनत का काम अपने हाथ से किया करो। सबसे अच्छी चीज़ औरतों के लिए चक्की पीसना, या मूसल से कूटना या चर्ख़ा कातना है। इससे बदन दुरुस्त रहता है।

५. अगर किसी से मिलने जाओ तो वहाँ इतना न बैठो या उससे इतनी देर तक बातें न करो कि वह तंग आजाए या उससे किसी काम में हरज होने न लगे।

६. सब घर वाले इस बात के पाबन्द रहें कि हर चीज़ की एक जगह मुक़र्रर हो और वहां से ज़ब उठायें तो बरत कर वहीं रख दें ताकि हर आदमी को वक़्त पर पूछना य ढूंढना न पड़े और जगह बदलने से पहले कभी तो किसी को भी नहीं मिलती। सबको तक-लीफ़ होती है और जो चीज़े ख़ास तुम्हारे बरतने की हैं, उनकी भी

जगह मुक़र्रर कर लो ताकि ज़रूरत के वक़्त हाथ डालते ही मिल जाये।

७. राह में चारपाई पीढ़ी या कोई बर्तन, ईंट पत्थर, सिल वग़ैरह न डालो। अक्सर ऐसा होता है कि अंधेरे में या कभी-कभी दिन ही में कोई झपटा हुआ, रोज़ की आदत के मुताबिक़ बे-खटके चला आ रहा है और उलझ कर गिर गया और जगह [illegible] चोट लग गई तो तकलीफ़ होगी।

८. जब तुमसे कोई किसी काम को कहे, तो उसको सुनकर हां या नहीं ज़रूर ज़बान से कह दो, ताकि कहने वाले का दिल एक तरफ़ हो जाये, वरना ऐसा न हो कि कहने वाला तो समझे कि उसने सुन लिया और तुमने सुना न हो या वह यह समझे कि तुम यह काम करदोगी और तुमको करना मंज़ूर न हो तो ना-हक़ दूसरा आदमी भरोसे में रहे।

९. नमक खाने में कुछ कम डाला करो, क्योंकि कम का इलाज हो सकता है, लेकिन अगर ज़्यादा हो गया तो उसका इलाज मुश्किल है।

१०. दाल में, साग में मिर्च कतर कर न डालो, पीस कर डालो, क्योंकि कतर कर डालने से बीज उसके टुकड़ों में रहते हैं। अगर कोई टुकड़ा मुंह में आ जाता है, तो इन बीजों से मुंह में आग लग जाती है।

११. अगर रात को पानी पीने का इत्तिफ़ाक़ हो, तो अगर रोशनी हो तो, उसको खूब देख लो, नहीं तो लोटे वग़ैरह को कपड़ा लगा कर पानी पियो, ताकि मुंह में कोई ऐसी-वैसी चीज़ न आ जाये।

१२. बच्चों को हंसी में मत उछालो और खिड़की वग़ैरह से मत लटकाओ। खुदा न करे ऐसा हो कि हाथ से छूट जाये और हंसी की फंसी हो जाए। इसी तरह उनके पीछे हंसी में न दौड़ो, शायद

गिर पड़े और चोट लग जाए।

१३. जब बर्तन खाली हो जाये तो उसको धोकर हमेशा उलटा रखो और जब दोबारा उसको बरतना हो, तो फिर उसको धोलो।

१४. बर्तन जमीन पर रख कर अगर उसमें खाना निकालो तो वैसे ही सेनी या दस्तरख्वान पर न रखो, बल्कि पहले उसके तले देख लो और साफ़ कर लो।

१५. किसी के घर मेहमान जाओ तो उससे फ़र्माइश न करो। कभी तो चीज बे-हक़ीक़त होती है, मगर वक़्त की बात है, घर वाला उसको पूरी नहीं कर सकता, ना-हक़ उसको शर्मिन्दगी होगी।

१६. जहां और आदमी बैठे हों, वहां बैठ कर न थूको और न नाक साफ़ करो। अगर ज़रूरत हो तो एक किनारे जाकर फ़ारिग़ हो जाओ।

१७. खाना खाने में ऐसी चीजों का नाम न लो, जिससे सुनने वालों को घिन पैदा हो। कुछ नाज़ुक मिज़ाजों को बहुत तकलीफ़ होती है।

१८. बीमार के सामने या उसके घर वालों के सामने ऐसी बातें न करो, जिससे ज़िन्दगी की ना उम्मीदी पाई जाये, ना-हक़ दिल टूटेगा। बल्कि तसल्ली की बातें करो कि इन्शाअल्लाह सब जाता रहेगा।

१९. अगर किसी की पोशीदा बात करनी हो और वह भी उस जगह मौजूद हो, तो आंख से या हाथ से उधर इशारा न करो, बिला वजह उसको शुब्हा होगा और यह भी उस वक़्त हो, जबकि उस बात का करना शरअ से दुरुस्त हो। और अगर दुरुस्त न हो तो ऐसी बात ही करना गुनाह है।

२०. बात करते वक़्त बहुत हाथ न मटकाओ।

२१. दामन, आंचल, आस्तीन से नाक न साफ़ करो।

२२. पाख़ाने के क़दमचे में पानी न लो पानी लेने के लिए एक

क़दमचा अलग छड़ दो।

२३. जूती हमेशा झाड़ कर पहनो। शायद कोई मूज़ी जानवर बैठा हो। इसी तरह कपड़ा बिस्तर भी झिटक लिया करो।

२४. पर्दे की जगह में किसी के फोड़ा-फुंसी हो, तो उससे न पूछो कि किस जगह है, क्योंकि उसको बताते हुए शर्म आयेगी।

२५. आने-जाने की जगह न बैठो। तुमको और आने जाने वालों को तकलीफ़ होगी।

२६. बदन और कपड़े में बदबू न पैदा होने दो। अगर धोबी के घर के कपड़े धुले हुए न हों, तो बदन ही के कपड़े को धो डालो और नहा डालो।

२७. आदमियों के बैठे हुए झाड़ू न दिलाओ।

२८. गुठली छिलके किसी आदमी के ऊपर न फेंको और न रास्ते में डालो।

२९. चाक़ू या क़ैंची या सूहे या और ऐसी चीज़ से न खेलो, शायद ग़फ़लत से कहीं लग जाये।

३०. जब कोई मेहमान बहुत दूर से कहीं आये, तो उससे मालूम कर लो कि अगर पेशाब वग़ैरह की ज़रूरत हो, तो फ़्लां जगह फ़ारिग़ हो लीजिए और बहुत ही जल्दी उसके साथ की सवारी के खड़े करने का और बैल या घोड़े को घास और चारे का बन्दोबस्त कर दो और खाने में इतना तकल्लुफ़ न करो कि उसके वक़्त पर न मिले, खाना वक़्त पर पका लो, चाहे सादा और कम ही क्यों न हो और जब उसका जाने का इरादा हो तो बहुत जल्द और सवेरे से नाश्ता तैयार कर दो। मतलब यह है कि उसके आराम और मसलहत में खलल न पड़े।

३१. पाखाने या ग़ुस्लखाने से कमरबन्द बांधती हुई न निकलो, बल्कि अन्दर ही अच्छी तरह बांध लो, तब बाहर आओ।

३२. जब तुमसे कोई बात पूछे, पहले उसका जवाब दो, फिर

और काम में लगो।

३३. जो बात कहो या किसी बात का जवाब दो, खूब मुंह खोल कर साफ़ बात कहो, ताकि दूसरा अच्छी तरह समझ ले।

३४. किसी को कोई चीज़ हाथ में देना हो तो दूर से न फेंको, शायद दूसरे के हाथ न आ सके, तो नुक्सान हो, पास जाकर दे दो।

३५. अगर दो आदमी पढ़ते-पढ़ाते हों या बातें कर रहे हों तो उन दोनों के बीच में आकर चिल्लाना या किसी से बात न करना चाहिए।

३६. अगर कोई किसी काम में या बात में लगा हो, तो जाते ही उससे अपनी बात शुरू न करो, बल्कि मौक़े का इन्तिज़ार करो। जब तुम्हारी ओर ध्यान दे, तब बात करो।

३७. जब किसी के हाथ में कोई चीज़ देनी हो, जब तक दूसरा आदमी उसको अच्छी तरह न संभाल ले, अपने हाथ से न छोड़ो। कभी तो, ज़रा-सी बे-ख्याली में गिर कर नुक्सान हो जाता है।

३८. अगर किसी को पंखा झलना हो तो ख़ूब ख्याल रखो कि सिर में या और कहीं बदन या कपड़े में न लगे और ऐसी ज़ोर से न झलो, जिससे दूसरा परेशान हो।

३९. खाना खाते में हड्डियाँ एक जगह जमा रखो, इसी तरह किसी चीज़ के छिलके वग़ैरह सब तरफ़ न फैलाओ। जब सब इकट्ठा हो जाये, मौक़े से एक तरफ़ डालो।

४०. बहुत दौड़ कर या मुंह ऊपर उठा कर न चलो, कभी गिर न पड़ो।

४१. किताब को बहुत सम्भाल कर एहतियात से बन्द करो, अक्सर शुरू और आख़िर के पन्ने मुड़ जाया करते हैं।

४२. अपने शौहर के सामने ना-महरम मर्द की तारीफ़ न करना चाहिये, कुछ मर्दों को ना-पसन्द होता है।

४३. इसी तरह ग़ैर-औरतों की तारीफ़ शौहर से न करें शायद

उस का दिल उस पर आ जाये और बीवी से हट जाये।

४४. जिससे बे-तकल्लुफ़ी न हो, उससे मुलाक़ात के वक़्त उसके घर का हाल या उसके माल व दौलत, ज़ेवर व पोशाक का हाल न पूछना चाहिए।

४५. महीने में तीन या चार दिन ख़ास इसके लिए मुक़र्रर कर लो कि घर की सफ़ाई पूरे तौर से कर लिया करो, जाले उतार दिये, फ़र्श उठवा दिया, झड़वा दिया, हर चीज़ क़रीने से रख दी।

४६. किसी के सामने कोई काग़ज़ या किताब रखी हुई उठा कर न देखनी चाहिए। अगर वह काग़ज़ क़लमी है तो शायद उसमें कोई पोशीदा बात लिखी हो और अगर वह छपी हुई है, तो शायद उसमें कोई ऐसा काम लिखा हुआ रखा हो, जो दूसरे से पोशीदा रखना हो।

४७. सीढ़ियों पर बहुत संभल कर उतरो-चढ़ो। बल्कि बेहतर यह है कि जिस सीढ़ी पर एक पांव रखो दूसरा भी उसी पर रख कर फिर अगली सीढ़ी पर उसी तरह पांव रखो और यह कि एक सीढ़ी पर एक और दूसरी सीढ़ी पर दूसरा पांव लड़कियों और औरतों को बिल्कुल मुनासिब नहीं और बचपन में लड़की को भी मना करो।

४८. जहां कोई बैठा हो, वहां कपड़ा या किताब या और कोई चीज़ इस तरह नहीं झटकनी चाहिए कि उस आदमी पर धूल पड़े। इसी तरह मुंह से या कपड़े से भी न झाड़ना चाहिए, बल्कि उस जगह से दूर जाकर साफ़ करना चाहिए।

४९. किसी ग़म या परेशानी या दुख-बीमारी की कोई ख़बर सुने तो जब तक ख़ूब पक्के तौर पर जांच न हो जाये, किसी से ज़िक्र न करे और खास कर उस आदमी के रिश्तेदारों से तो हरगिज़ न कहे क्योंकि अगर ग़लत हुई तो ख़ामख़ाह दूसरे को परेशानी होगी, फिर वे लोग उसको भी बुरा-भला कहेंगे कि क्यों ऐसी बद-फ़ाली निकाली।

५०. इसी तरह मामूली बीमारी और तकलीफ़ की ख़बर दूर परदेस के रिश्तेदारों को ख़त के ज़रिये न करें। उनका ख़्याल हर वक़्त उसी तरफ़ लगा रहेगा और परेशानी की वजह होगी।

५१. दीवार पर न थूको और न पान की पीक डालो, इसी तरह तेल का हाथ दीवार या किवाड़ से न पोंछो, बल्कि धो डालो, लेकिन जले हुए तेल को नापाक न कहो जैसा कि कुछ जाहिल औरतें कहती हैं।

५२. अगर दस्तरख़्वान पर और सालन की ज़रूरत हो तो खाने वाले के सामने से बर्तन न उठाओ, दूसरे बर्तन में ले आओ।

५३. कोई आदमी तख़्त या चारपाई पर बैठा या लेटा हो तो उसको हिलाओ नहीं। अगर पास से निकलो तो इस तरह निकलो कि उसमें ठोकर या घुटना न लगे। अगर तख़्त पर कोई चीज़ रखनी हो या उस पर से कोई चीज़ उठाओ तो ऐसे वक़्त धीरे से उठाओ और धीरे से रखो।

५४. खाने-पीने की कोई चीज़ खुली न रखो, यहां तक कि अगर कोई चीज़ दस्तरख़्वान पर भी रखी जाये, लेकिन वह ज़रा देर में या आख़िर में खाने की हो तो उस को ढांक कर रखो।

५५. मेहमान को चाहिए कि अगर पेट भर जाये तो थोड़ा सालन रोटी दस्तरख़्वान पर ज़रूर छोड़ दे, ताकि घर वालों को यह शक न हो कि मेहमान को खाना कम हो गया, इससे वे शर्मिन्दा होते हैं।

५६. जो बर्तन बिल्कुल ख़ाली हो उसको अल्मारी या ताक़ वग़ैरह में रखना हो, तो उलट करके रखो।

५७. चलने से पांव पूरा उठा कर आगे रखो, घसीट कर न चलो, इसमें जूता भी जल्द टूटता है और बुरा भी मालूम होता है।

५८. चादर-दुपट्टे का बहुत ख़्याल रखो, उसका पल्ला ज़मीन पर लटकता चले।

५९. अगर कोई नमक या और कोई खाने-पीने की चीज़ मांगे, बर्तन में लाओ, हाथ में रख कर न लाओ।

६०. लड़कियों के सामने कोई बे-शर्मी की बात न करो, वरना उनकी शर्म जाती रहेगी।

ऐब दूर करो

१. एक ऐब यह है कि बात का माक़ूल जवाब नहीं देतीं, जिससे पूछने वाले को तसल्ली हो जाए। बहुत सी बेकार बातें इधर-उधर की उसमें मिला देती हैं और असल बात फिर भी मालूम नहीं होती। हमेशा याद रखो कि जो आदमी कुछ पूछे उसका मतलब खूब ग़ौर से समझ लो। फिर उसका जवाब उसके मुताबिक़ दे दो।

२. एक ऐब यह है कि किसी काम को उनसे कहा जाए तो सुन कर खामोश हो जाती हैं। काम कहने वाले को यह शुबहा रहता है कि ख़ुदा जाने उन्होंने सुना भी या नहीं सुना। कभी उसने ग़लती से यह समझ लिया कि सुन लिया होगा और सच में न सुना हो तो इस भरोसे पर वह काम नहीं होता और पूछने के वक़्त यह कह कर अलग हो गयीं कि मैंने नहीं सुना। मतलब यह कि वह काम तो रह गया। ऐसा भी हो सकता है कि ग़लती से उसने समझ लिया कि नहीं सुना होगा। दोबारा उसने फिर कहा तो उस ग़रीब के लत्ते लिये जाते हैं कि सुन लिया, सुन लिया, क्यों जान खायी। मतलब यह कि उस वक़्त भी आपस में रंज होता है। अगर यह पहली बार ही में इतना कह देतीं कि अच्छा, तो दूसरे को खबर तो हो जाती।

३. एक ऐब यह है कि मामा (नौकरानी) को जो काम बतला देंगी या किसी से घर में कोई और बात कहेंगी तो ज़ोर से चिल्ला कर कहेंगी। इसमें दो खराबियां हैं—एक तो बे-हयाई और बे-पर्दगी

कि बाहर से दरवाज़े तक, बल्कि कभी-कभी तो सड़क तक आवाज़ पहुंचती है। दूसरी ख़राबी यह है कि दूर से कोई बात समझ में आयी और कुछ न आयी। जितनी समझ में न आयी, उतना काम न हुआ। अब बीवी ख़फ़ा हो रही हैं कि तूने क्यों न किया। दूसरी जवाब दे रही है कि मैंने तो सुना ही नहीं था। मतलब यह कि ख़ूब तू-तू मैं-मैं होती है और काम बिगड़ा, सो अलग। इसी तरह उनकी मामा (नौक़रानी) है कि जिस बात का जवाब बाहर से ला देगी, दरवाज़े से चिल्लाती हुई आयेंगी। इसमें भी कुछ समझ में आया और कुछ न आया। तमीज़ की बात यह है कि जिससे बात करनी हो, उस के पास जाओ या उसको अपने पास बुलाओ और इत्मीनान से अच्छी तरह समझा कर कह दो और समझ कर सुन लो।

४. एक ऐब यह है कि चाहे किसी चीज़ की ज़रूरत हो या न हो, लेकिन पसन्द आने की देर है। ज़रा पसन्द आयी और ले ली, चाहे क़र्ज़ हो जाये, लेकिन कुछ परवाह नहीं, अगर क़र्ज़ भी न हो, तब भी अपने पैसे को इस तरह बेकार खोना कौन-सी अक्ल की बात है। फ़िज़ूल ख़र्ची करना गुनाह भी है जहां ख़र्च करना हो, पहले ख़ूब सोच समझ लो कि यहां ख़र्च करने में दीन का फ़ायदा या दुनिया की ज़रूरत भी है। अगर ख़ूब सोचने से ज़रूरत और फायदा मालूम हो ख़र्च करो, नहीं तो पैसे मत खोओ, क़र्ज़ तो जहां तक हो सके मत लो, चाहे थोड़ी-सी तकलीफ़ भी हो जाये।

५. एक ऐब यह है कि जब कहीं जाती हैं चाहे शहर में या सफ़र में, वक़्त टालते-टालते बहुत देर कर देती हैं कि वक़्त तंग हो जाता है। अगर सफ़र में जाना है तो मंज़िल पर देर में पहुंचेंगी। अगर रास्ते में देर हो गयी तो जान और माल का भी डर है। अगर गर्मी के दिन हुए तो धूप में ख़ुद भी तपेंगी और बच्चों को भी तकलीफ़ होगी। अगर बरसात है तो एक तो बरसने का डर, दूसरे गाढ़े-कीचड़ में गाड़ी का चलना मुश्किल और देर में देर हो जाती है,

अगर सवेरे से चलें तो हर तरह की गुंजाइश रहे, अगर बस्ती ही में जाना है, जब भी कहारों को खड़े-खड़े परेशानी, फिर देर में सवार होने से देर में लौटना होगा, अपने कामों में हर्ज होगा, खाने के इन्तिज़ाम में देर होगी। कहीं जल्दी खाना बिगड़ गया, कहीं मियां तक़ाज़ा कर रहे हैं, कहीं बच्चे रो रहे हैं। अगर जल्दी सवार हो जातीं, तो ये मुसीबतें क्यों होतीं।

६. एक ऐब यह है कि सफ़र में बे-ज़रूरत भी सामान बहुत-सा लाद कर ले जाती हैं, जिससे जानवर को भी तकलीफ़ होती है, जगह में भी तंगी हो जाती है और सबसे ज़्यादा मुसीबत साथ के मर्दों को होती है, उनको संभालना पड़ता है, कहीं-कहीं लादना भी पड़ता है। मज़दूरों के पैसे भी उन्हीं को देने पड़ते हैं। मतलब यह कि पूरी फ़िक्र इन बेचारों की जान पर होती है। यह अच्छी ख़ासी गाड़ी में बेफ़िक्र बैठी रहती हैं। सामान हमेशा सफ़र में कम ले जाओ इस तरह से हर क़िस्म का आराम मिलता है। इसी तरह रेल के सफ़र में ख़्याल रखो, बल्कि ज़्यादा सामान ले जाने से और ज़्यादा तकलीफ़ होती है।

७. एक ऐब यह है कि गाड़ी वग़ैरह में सवार होने के वक़्त मर्दों से कह दिया कि मुंह ढांक लो या एक कोने में छिप जाओ और जब सवार हो चुकीं तो उन लोगों को दुबारा इत्तला नहीं दी जाती कि अब पर्दा नहीं है। इसमें दो ख़राबियां होती हैं कभी ये बेचारे मुंह ढांके हुए बैठे हैं ख़ामख़ाह तकलीफ़ हो रही है और कभी ऐसा होता है कि वे अटकल से समझते हैं कि बस पर्दा हो चुका और समझ कर मुंह खोल देते हैं, सामने आ जाते हैं और बेपर्दगी होती है। ये सारी ख़राबियां दोबारा न कहने की हैं। अगर सबको मालूम हो जाये कि दोबारा कहने की भी आदत है, तो सब आदमी इसके इन्तिज़ार में रहें और बे कहे कोई सामने न आये।

एक ऐब यह है कि अभी सवार होने को तैयार न हुईं और आधा

घण्टा पहले से पर्दा कर दिया, रास्ता रुकवा दिया, बे-वजह खुदा की मख़्लूक़ को तक्लीफ़ हो रही है।

९. एक ऐब यह है कि जिस घर जाती हैं, गाड़ी या डोली से उतर कर चुप से घर में जा घुसती हैं। अक्सर ऐसा होता है कि कोई मर्द अन्दर होता है, उसका सामना होता है। तुमको चाहिए कि अभी गाड़ी या डोली से मत उतरो, पहले किसी मामा वग़ैरह को भेज कर दिखला लो और अपने आने की ख़बर कर दो। कोई मर्द वग़ैरह होगा अलग हो जायेगा। जब तुम सुन लो कि अब घर में कोई मर्द वग़ैरह नहीं है, तब उतर कर अन्दर जाओ।

१०. एक ऐब यह है कि आपस में दो औरतें बातें करती हैं, अक्सर यह होता है कि एक की बात ख़त्म होने नहीं पाती, दूसरी शुरू कर देती है, बल्कि बहुत बार ऐसा हो जाता है कि दोनों एकदम से बोलती हैं, वह अपनी कह रही है यह अपनी हांक रही है। न वह इसकी सुने, न यह उसकी, भला ऐसा करने ही से क्या फ़ायदा। हमेशा याद रखो कि जब एक बोलने वाले की बात ख़त्म हो जाये, उस वक़्त दूसरी को बोलना चाहिए।

११. एक ऐब यह है कि ज़ेवर और रुपया-पैसा बे-एहतियाती से कभी तकिया के नीचे रख दिया, कभी किसी ताक़ में खुला रख दिया। ताला कुंजी होते हुए सुस्ती के मारे उसमें हिफ़ाज़त से नहीं रखतीं, कोई चीज़ जाती रही तो सबका नाम लगाती फिरती हैं।

१२. एक ऐब यह है कि उनको एक काम के वास्ते भेजो, जाकर दूसरे काम में लग जाती हैं। जब दोनों से फ़ारिग़ हो जायें, तब लौटती हैं, उसमें भेजने वाले को बड़ी तकलीफ़ और उलझन होती है, क्योंकि उसने तो एक का हिसाब लगा रखा है कि यह इतनी देर का काम है, जब इतनी देर गुज़र जाती है तो फिर उसको परेशानी शुरू होती है और यह अक्लमन्द कहती हैं कि आये तो हैं, लाओ दूसरा काम भी करते चलें। ऐसा न करो। एक तो यह कि पहला

काम करके अपनी फ़रमाइश पूरी कर दी. फिर अपने तौर पर इत्मीनान से दूसरा काम कर लो।

१३. एक ऐब सुस्ती का है कि एक वक़्त के काम को दूसरे वक़्त पर उठा रखती हैं, इससे अक्सर हरज और नुक़्सान हो जाता है।

१४. एक ऐब यह है कि मिज़ाज में जल्दी नहीं और ज़रूरत और मौक़े को नहीं देखतीं कि जल्दी का वक़्त है, जल्दी से इस काम को निबटा लो, हर वक़्त उनको इत्मीनान और तकल्लुफ़ ही सूझता है, इस तकल्लुफ़-तकल्लुफ़ में कभी-कभी असल काम बिगड़ जाता है और मौक़ा निकल जाता है।

१५. एक ऐब यह है कि कोई चीज़ खो जाये तो बिना जांच किये किसी पर तोहमत लगा देती हैं यानी जिसने कभी कोई चीज़ चुरा ली, बे धड़क कह दिया कि बस जी उसका काम है। हालांकि यह क्या ज़रूरी है कि सारे ऐब एक ही आदमी ने किये हों। इसी तरह और बुरी बातों में ज़रा से शक से ऐसा पक्का यक़ीन करके अच्छा-ख़ासा गड़बड़ कर देती हैं।

१६. एक ऐब यह है कि पान-तम्बाकू का खर्च इस क़दर बढ़ा दिया कि ग़रीब आदमी तो सहारा ही नहीं दे सकता और अमीरों के यहां इतने खर्च पर चार-पांच ग़रीबों का भला हो सकता है। इसको घटाना चाहिए। ख़राबी यह है कि बे-ज़रूरत भी खाना शुरू कर देती हैं, फिर वह आदत पड़ जाती है।

१७. एक ऐब यह है कि उनके सामने दो आदमी किसी मामले की बात करते हों और उनसे न कोई पूछे, न गछे, मगर यह ख़ाम-ख़्वाह दख़ल देती हैं और सलाह बताने लगती हैं। जब तक तुमसे कोई सलाह न ले, तुम बिल्कुल गूंगी-बहरी बनी रहो।

१८. एक ऐब यह है कि महफ़िल में से आकर तमाम औरतों की सूरत-शक्ल उनके ज़ेवर-पोशाक का ज़िक्र अपने ख़ाविन्द से करती हैं,

भला अगर ख़ाविन्द का दिल किसी पर आ गया और वह उसके ख़्याल में लग गया तो तुमको कितना बड़ा नुक़्सान पहुंचेगा।

१९. एक ऐब यह है कि उनको किसी से कोई बात करनी हो तो वह दूसरा आदमी, चाहे कैसे ही काम में हो या वह कोई बात कर रहा हो, कभी यह इन्तिज़ार न करेंगी कि उसका काम या बात ख़त्म हो ले तो हम बात करें कि उसकी बात या काम के बीच में जाकर टांग अड़ा देती हैं, यह बुरी बात है, ज़रा ठहर जाना चाहिए - जब वह तुम्हारी ओर ध्यान दे सके उस वक़्त बात करो।

२०. एक ऐब यह है कि हमेशा बात अधूरी करेंगी। पैग़ाम अधूरा पहुंचाएंगी, जिससे मतलब ग़लत समझा जाएगा। कभी-कभी इसमें काम बिगड़ जाता है और कभी-कभी दो आदमियों में इस ग़लती से रंज हो जाता है।

२१. एक ऐब यह है कि उनसे बात की जाए तो पूरे तौर से ध्यान देकर उसको नहीं सुनतीं इसी में और काम भी कर लिया, किसी और से भी बात कर ली, न तो बात करने वाले का बात करने में ही भला होता है, न इस काम के होने का पूरा भरोसा होता है, क्योंकि जब पूरी बात सुनी नहीं तो उसको करेंगी किस तरह।

२२. एक ऐब यह है कि अपनी ख़ता या ग़लती का कभी इक़रार न करेंगी, जहां तक हो सकेगा बात को बना देंगी, चाहे बन सके या न बन सके।

२३. एक ऐब यह है कि कहीं से थोड़ी चीज़ उनके हिस्से की आये या छोटी क़िस्म की चीज़ आये तो उसको नाक मारेंगी, ताना देंगी कि घर गयी, ऐसी चीज़ भेजने की क्या ज़रूरत है, भेजते हुए शर्म न आयी, यह बुरी बात है। उसकी इतनी ही हिम्मत है, तुम्हारा तो उसने कुछ न बिगाड़ा और ख़ाविंद के साथ भी उनकी यही आदत है कि ख़ुश होकर चीज़ कम लेती हैं, उसको रद्द करके ऐब निकाल कर, तब क़ुबूल करती हैं।

२४. एक ऐब यह है कि उनको क़ोई काम कहो, उसमें झक-झक कर लेंगी, फिर उसको करेंगी। भला जब वह काम करना है तो उसमें वाही-तबाही मे क्या फ़ायदा निकला। ना-हक़ दूसरे का भी जी बुरा किया।

२५. एक ऐब यह है कि कपड़ा पहने-पहने सो लेती हैं। कभी-कभी सूई चुभ जाती है, बे-ज़रूरत तकलीफ़ में क्यों पड़े।

२६, एक ऐब यह है कि आने के वक़्त और चलने के वक़्त मिल कर ज़रूर रोती हैं चाहे रोना न भी आये, मगर इस डर से रोती हैं कि कोई यूं न कहे कि इसको मुहब्बत नहीं।

२७. एक ऐब यह है कि अक्सर तकिये में या वैसे ही सूई रख कर उठ जाती हैं और कोई बे-ख़बरी में आ बैठता है, उसके चुभ जाती है।

२८. एक ऐब यह है कि बच्चों को सर्दी-गर्मी से नहीं बचातीं, इससे अक्सर बच्चे बीमार हो जाते हैं फिर तावीज़ गंडा कराती-फिरती हैं या दवा-इलाज, लेकिन आइंदा को एहतियात फिर भी नहीं करातीं।

२९. एक ऐब यह है कि बच्चों को बे-भूख खाना खिला देती हैं या मेहमान को ज़िद करके खिला देती हैं। फिर बे-भूख खाने की तकलीफ़ उनको भगतनी पड़ती है।

तजुर्बा और इंतिज़ाम

१. अपने दो लड़कों की या दो लड़कियों की शादी जहां तक हो सके, एकदम न करो, क्योंकि बहुओं में ज़रूर फ़र्क़ होगा, दामादों में ज़रूर फ़र्क़ होगा खुद लड़कों और लड़कियों की सूरत-शक्ल में, कड़ड़े की सजावट में, अदब-सलीक़े में, हया व शर्म में ज़रूर फ़र्क़ होगा और भी

बहुत बातों में फ़र्क़ हो जाता है और लोगों की आदत है ज़िक्र-मज़कूर करने की और एक को घटाने की और दूसरे को चढ़ाने की। इससे ना-हक़ दूसरी का जी बुरा होता है।

२. हर किसी पर इत्मीनान न कर लिया करो, किसी के भरोसे पर घर छोड़कर न जाया करो। मतलब यह है कि जब तक किसी को हर तरह के बर्ताव से न अज़मा लो, उसका ऐतबार न करो, खास कर अक्सर शहरों में बहुत सी औरतें कोई हज्जिन बनी हुई काबे का ग़िलाफ़ लिए और कोई तावीज़-गंडा, झाड़-फूंक करती हुई, कोई फ़ाल देखती हुई, कोई तमाशा लिए हुए घरों में घुसती फिरती हैं, उनको तो घर में ही न आने दो, दरवाज़े ही से रोक दो। ऐसी औरतों ने बहुत से घरों की सफ़ाई कर दी है।

३. कभी संदूक़ पर या पानदान को, जिसमें रुपया-पैसा, गहना-ज़ेवर रखा करती हो, खुला छोड़ कर न उठो। ताला लगाकर या अपने साथ लेकर उठो।

४. जहाँ तक मुम्किन हो सके, सौदा उधार न मंगाओ, जो बहुत लाचारी में मंगाना ही पड़े तो दाम पूछकर तारीख के साथ लिख लो और जब दाम हों, फ़ौरन दे दो।

५. धोबिन के कपड़े, पंसारी का अनाज और पिसाई उस सबका हिसाब लिखती रहो। ज़ुबानी याद का भरोसा न करो।

६. जहां तक हो सके, घर का खर्च बहुत किफ़ायत और इन्तिज़ाम से उठाओ, बल्कि जितना खर्च तुमको मिले, उसमें से कुछ बचा लिया करो।

७. जो औरतें बाहर से घर में आया करती हैं, उनके सामने कोई बात ऐसी न किया करो जिसका तुमको दूसरी जगह मालूम कराना मंज़ूर न हो, क्योंकि ऐसी औरतें घरों की बातें दस घरों में जाकर कहती हैं।

८. आटा, चावल अटकल से न पकाओ अपने खर्चे का अन्दाज़ा

करके दोनों वक़्त चीज़ें नाप-तौल कर ख़र्च करो। अगर तुमको कोई ताना दे कुछ परवाह न करो।

९. जो लड़कियां बाहर निकलती हैं उनको ज़ेवर न पहनाओ, इसमें जान व माल दोनों का ख़तरा है।

१०. अगर कोई मर्द दरवाज़े पर आकर तुम्हारे शौहर या बाप-भाई से अपनी मुलाक़ात या किसी क़िस्म की दोस्ती का ताल्लुक़ ज़ाहिर करे, हरगिज़ उसको घर में न बुलाओ, यानी पर्दा करके भी उसको न बुलाओ और न कोई क़ीमती चीज़ उसके कब्ज़े में दो। ग़ैर-आदमी की तरह खाना वग़ैरह भेज दो, ज़्यादा मुहब्बत व इख़्लास मत करो, जब तक तुम्हारे घर का कोई मर्द उसको पहचान न ले। इसी तरह ऐसे आदमी की भेजी हुई चीज़ हरगिज़ न बरतो, अगर वह बुरा माने तो कुछ ग़म न करो।

११. इसी तरह अगर कोई अन्जान औरत डोली के साथ कहीं से आकर कहे कि मुझको फ़्लां घर से आपके बुलाने को भेजा है, हरगिज़ उसके कहने से डोली में सवार न हो। मतलब यह कि अंजान आदमी के कहने से कोई काम न करो न उसको अपने घर की कोई चीज़ दो चाहे मर्द हो, चाहे औरत हो, चाहे वह अपने नाम से या दूसरे के नाम से माँगे।

१२. घर के अन्दर कोई ऐसा पेड़ न रहने दो जिसके फल से चोट लगने का डर हो, जैसे कैथ का पेड़।

१३. कपड़ा सर्दी में ज़रा ज़्यादा पहनो। अक्सर औरतें बहुत कम कपड़ा पहनती हैं कहीं ज़ुकाम हो जाता है कहीं बुख़ार हो जाता है।

१४. बच्चों को मां-बाप, बल्कि दादा का नाम भी याद करा दो और कभी-कभी पूछती रहा करो ताकि उसको याद रहे। इसमें यह भी फ़ायदा है कि अगर ख़ुदा न करे, बच्चा कभी खो जाये और कोई उससे पूछे कि तू किसका लड़का है, तेरे माँ-बाप कौन हैं, तो अगर बच्चे को याद होंगे तो बतला देगा। फिर कोई न कोई तुम्हारे पास

उसको पहुंचा देगा, और अगर याद न हो तो पूछने पर इतना ही कहेगा कि मैं अम्मां का हूं, अब्बा का हूं। यह खबर नहीं कि कौन अम्मां, कौन अब्बा।

१५. एक जगह एक औरत अपने बच्चे को छोड़कर किसी काम को चली गयी। पीछे एक बिल्ली ने आकर उसको इतना नोचा कि उसी में जान गयी। इसमें दो बातें मालूम हुईं। एक तो यह कि बच्चे को कभी तनहा न छोड़ना चाहिए। दूसरे यह कि बिल्ली-कुत्ते जानवर का कुछ एतबार नहीं। कुछ औरतें बेवक़ूफ़ी करती हैं कि बिल्लियों को साथ सुलाती हैं, भला इसका क्या एतबार, अगर रात को कहीं धोखे से पंजा मारा या दांत मारे या नरख़रा पकड़ ले तो क्या करोगी।

१६. दवा हमेशा पहले हकीम को दिखा लो और उसको खूब साफ़ कर लो। कभी ऐसा होता है कि अनाड़ी पंसारी दवा कुछ की कुछ देता है, कई बार उसमें कोई चीज़ मिली होती है कि उसका असर अच्छा नहीं होता और जो दवा किसी बोतल या डिबिया या पुड़िया में बच जाये, उसके ऊपर एक काग़ज़ की चिट लगा कर उस दवा का नाम लिख दो। बहुत बार ऐसा हुआ है कि किसी को उसकी पहचान नहीं रही। इसलिए चाहे कितनी ही लागत की हुई, मगर फेंकनी पड़ी और कुछ ग़लत याद रही और उसको दूसरी बीमारी में ग़लती से बरत लिया और उसने नुक़सान किया।

१७. लिहाज़ की जगह क़र्ज़ न दो और ज्यादा क़र्ज़ भी न दो। इतना दो कि अगर वसूल न हो तो वह तुमको भारी न मालूम हो।

१८. जो कोई बड़ा या नया काम करो, किसी समझदार दीनदार ख़ैरख़्वाह आदमी से सलाह ले लो।

१९. अपना रुपया-पैसा माल व सामान छिपा कर रखो। हर किसी से उसका ज़िक्र न करो।

२०. जब किसी को ख़त लिखो, पता साफ़ लिखो और अगर उसी

जगह फिर खत लिखो तो यों न समझो कि पहले खत में तो पता लिख दिया था, पता लिखना क्या ज़रूरी है, क्योंकि पहला ख़ुदा जाने है या नहीं। अगर न हो तो दूसरे आदमी को कैसी दिक़्क़त पड़ेगी कि शायद उसको ज़ुबानी भी न याद रहा या अनपढ़ होने की वजह से लिखने वाले को न बतला सका।

२१. अगर रेल का सफ़र करना पड़े तो अपना टिकट बड़ी हिफ़ाज़त से रखो, या अपने पास रखो और गाड़ी में ग़ाफ़िल होकर न सोओ, न किसी औरत मुसाफ़िर से अपने दिल के भेद कहो, न अपने असबाब और ज़ेवर का उससे ज़िक्र करो और किसी की दी हुई चीज़ पान-पत्ता, मिठाई-खाना वग़ैरह न खाओ और ज़ेवर पहन कर रेल में न बैठो, बल्कि उतार कर संदूकचा वग़ैरह में रख लो। जब मंज़िल पर पहुंच कर घर जाओ, उस वक़्त जो चाहो पहन लो।

२२. सफ़र में कुछ खर्च ज़रूर पास रखो।

२३. बावले आदमी को न छेड़ो, न उससे बात करो। जब उसको होश नहीं तो ख़ुदा जाने क्या कह बैठे, क्या कर गुज़ारे, फिर ना हक़ तुमको शर्मिंदगी और रंज हो।

२४. अंधेरे में नंगा पाँव कहीं न रखो। अंधेरे में कहीं हाथ न डालो। चिराग़ की रोशनी ले लो, फ़िर हाथ डालो।

२५. अपना भेद हर किसी से न कहो। कुछ आदमी ओछों से भेद कह कर मना कर देते हैं कि किसी से कहना नहीं, इससे ऐसे आदमी और भी कहा करते हैं।

२६. ज़रूरी दवायें हमेशा अपने घर में रखो।

२७. हर काम का अंजाम पहले सोच-समझ लो फ़िर उसको शुरू किया करो।

२८. चीनी और शीशे के बर्तन और सामान भी बे-ज़रूरत ज़्यादा न खरीदो कि उसमें बड़ा रुपया बर्बाद हो जाए।

२९. अगर औरतें रेल में बैठें और अपने साथ के मर्द दूसरी

जगह बैठे हों, तो जिस स्टेशन पर उतरना हो, रेल के पहुंचने के वक़्त उस स्टेशन का नाम सुन कर या तख़्ते पर लिखा हुआ देख कर उतरना न चाहिए। कुछ शहरों में दो तीन स्टेशन होते हैं, शायद उनके साथ का मर्द दूसरे स्टेशन पर उतरे और ये यहां उतर पड़ें, तो दोनों परेशान होंगे या मर्द की आंख लग गयी हो और वह यहां न उतरा, और ये उतरीं, तब भी मुसीबत होगी, बल्कि जब अपने घर का मर्द आ जाये तब उतरे।

३०. सफ़र में लिखी-पढ़ी औरतें ये चीज़ें भी अपने साथ रखें—एक किताब मस्अलों की, पेन्सिल-काग़ज, थोड़े से कार्ड, वज़ू का बर्तन।

३१. सफ़र में जाने वालों से, जहां तक मुम्किन हो, कोई फ़र्माइश न करो कि फ़्लां जगह से यह ख़रीद लाना, हमारी फ़्लां चीज़ फ़्लां जगह रखी है, तुम अपने साथ ले आना या ये असबाब ले जाओ फ़्लाने को पहुंचा देना या यह ख़त फ़्लाने को दे देना। इन फ़र्माइशों से अकसर दूसरे आदमी को तकलीफ़ होती है और अगर दूसरा बे-फ़िक्र हो, तो उसके भरोसे में रहने से तुम्हारा नुक़्सान होगा। ख़त पंद्रह पैसे में जहां चाहो, भेज दो और जो चीज़ रेल से मंगा सकती और भेज सकती हो या वह चीज़ अगर यहां ही मिलती हो, तो मंहगी ले सकती हो। अपनी थोड़ी सी बचत के वास्ते दूसरे को परेशान करना बेहतर नहीं है। कुछ काम होता तो है ज़रा-सा, मगर उसके बन्दो-बस्त में बहुत उलझन होती है और अगर बहुत लाचारी आ पड़े तो चीज़ मंगाने में पहले दाम भी दे दो कि शायद उसके पास ख़ुद अपना असबाब भी हो, और सब मिलाकर तौलने के क़ाबिल हो जाये।

३२. रेल में या वैसे कहीं सफ़र में अंजान आदमी के हाथ की दी हुई चीज़ कभी न खाओ। कुछ शरीफ़ आदमी कुछ ज़हर या नशा खिलाकर माल व असबाब ले भागते हैं।

३३. रेल की जल्दी में इसका ख़्याल रखो कि जिस दर्जे का टिकट

तुम्हारे पास है, उससे बड़े किराये के दर्जे में न बैठ जाओ। टिकट और गाड़ी चार क़िस्म की हैं :—

१. तीसरा दर्जा, जिसमें ज्यादातर आदमी बैठ रहते हैं। और सबसे कम किराया होता है, इस गाड़ी के दरवाज़े पर तीन लकीरें होती हैं।

२. फर्स्ट क्लास सबसे बढ़िया, उसका किराया भी सबसे ज्यादा होता है, उसके ऊपर एक लकीर।

३. सेकेन्ड क्लास, दुगुने किराये वाली, उस पर दो लकीरें।

४, इसका नाम इन्टर होता है, डेढ़ गुना किराया। इस पर दो लकीरों के बीच एक और हर्फ़ अंग्रेज़ी का होता है।[1] जिस दर्जे का टिकट खरीदो, उस में पहचान करके बैठो।

३४. सीने में अगर कोई सुई अटक जाये तो उसको दांत से पकड़ कर न खींचो कभी-कभी टूट कर या फिसल कर तालू में या ज़ुबान में घुस जाती हैं।

३५. एक नहनी नाखून काटने की ज़रूर अपने पास रखो। अगर वक़्त-बे-वक़्त नाइन को देर होगी, तो अपने हाथ से नाखून तराशने का आराम मिलेगा।

३६. बनी हुई दवा कभी न इस्तेमाल करो। जब तक उसका पूरा नुस्खा, किसी तजुर्बेकार (समझदार) हकीम को दिखला कर इजाज़त न ले ली जाये, खास कर आंख में, तो कभी दवा हरगिज़ न डालना चाहिए।

३७. जिस काम का पूरा भरोसा न हो, उसमें दूसरे को कभी भरोसा न दो, वरना तकलीफ़ और रंज होगा।

३८. किसी मसलहत में दखल और सलाह न दो, हां, जिस पर

---

१. अब ये तमाम तक़सीमें खत्म हो गई हैं सिर्फ़ दो डिब्बे होते हैं— फर्स्ट या सिकंड।

पूरा अख्तियार हो या जो खुद पूछे वहां कुछ डर नहीं।

३९. किसी को ठहराने पर, खाना खिलाने पर ज़्यादा इसरार न करे। कभी-कभी इसमें दूसरे को उलझन और तकलीफ़ होती है। ऐसी मुहब्बत से क्या फ़ायदा जिसका अन्जाम नफ़रत और तकलीफ़ हो।

४०. इतना बोझ न उठाओ जो मुश्किल से उठे। हमने बहुत से आदमी देखे हैं कि लड़कपन में बोझ उठा लिया और ऐसा कोई बिगाड़ पड़ गया जिससे सारी उम्र की तकलीफ़ खड़ी हो गयी, खास कर लड़कियां और औरतें बहुत एहतियात रखें, उनके बदन के जोड़ और रग और पट्ठे और भी कमज़ोर और नरम होते हैं।

४१. सुआ या सूई या ऐसी कोई चीज़ छोड़ कर न उठो, शायद कोई भूले से उस पर आ बैठे और वह उसको चुभ जाये।

४२. आदमी के ऊपर से कोई चीज़ वज़न की या खतरे की न दो, और खाना पानी भी किसी के ऊपर से न दो, शायद हाथ से छूट जाये।

४३. किसी बच्चे या शागिर्द को सज़ा देनी हो तो मोटी लकड़ी या लात घूसा से न मारो। अल्लाह बचाये अगर कहीं नाज़ुक जगह चोट लग जाये तो लेने के देने पड़ जायें और चेहरा और सर पर भी न मारो।

४४. अगर कहीं मेहमान जाओ और खाना खा चुकी हो तो जाते ही घर वालों को इत्तिला कर दो, क्योंकि वे लिहाज़ के मारे खुद नहीं पूछेंगे, बल्कि चुपके चुपके सब फ़िक्र करेंगे, चाहे वक़्त हो या न हो। उन्होंने तकलीफ़ झेल कर खाना पकाया, जब सामने आया तो तुमने कह दिया हमने खा लिया। उस वक़्त उनको कितना अफ़सोस होगा, तो पहले ही से क्यों न कह दो। इसी तरह अगर कोई दूसरा तुम्हारी दावत करे या तुमको ठहराये, तो घर वालों से इजाज़त ले लो। अगर ऐसी ही मसहलत हो, जिससे तुमको खुद मंज़ूर करना

पड़े, तो घर वालों को ऐसे वक़्त इत्तिला करो कि खाना पकाने का सामान न कर ले।

४५. जो जगह लिहाज़ और तकलीफ़ की हो, वहां खरीद फ़रोख़्त का मामला मुनासिब नहीं, क्योंकि ऐसी जगह न बात साफ़ हो सकती है, न तक़ाज़ा हो सकता है। एक दिल में कुछ समझता है, दूसरा कुछ समझता है, अंजाम अच्छा नहीं।

४६. चाक़ू वग़ैरह से दांत न कुरेदो।

४७. पढ़ने वाले बच्चों को कोई चीज़ दिमाग़ की ताक़त की हमेशा खिलाती रहो।

४८. जहां तक मुम्किन हो, रात को अकेले मकान में न रहो खुदा जाने क्या संयोग हो, मजबूरी की बात अलग है। कुछ आदमी यों ही मर कर रह गये और कई-कई दिन के बाद लोगों को खबर हुई।

४९. छोटे बच्चों को कुएं पर न चढ़ने दो, बल्कि अगर घर में कुआं हो तो उस पर तख़्ता डलवाकर हर वक़्त ताला लगा कर रखो और उनको लोटा देकर पानी लाने के वास्ते कभी न भेजो। शायद वहां जाकर खुद ही कुएं से डोल ही खींचने लगे।

५०. पत्थर, सिल, ईंट, बहुत दिनों तक जो एक जगह रखी रहती है, अक्सर उसके नीचे बिच्छू वग़ैरह पैदा हो जाता है। उसको अचानक न उठाओ, खूब देख-भाल कर उठाओ।

५१. जब बिछौने पर लेटने लगो, तो उसको किसी कपड़े से फिर झाड़ लो, शायद उस पर कोई जानवर चढ़ गया हो।

५२. रेशमी और ऊनी कपड़ों की तहों में नीम की पत्ती और काफ़ूर या फ़िनायल की गोलियां रख दिया करो कि उससे कीड़ा नहीं लगता।

५३. अगर घर में कुछ रुपया-पैसा दबा कर रखो तो एक-दो आदमी घरके, जिनका पूरा एतबार हो, उनको भी बतला दो। एक

औरत पांच सौ रुपया मियां की कमाई के दबा कर मर गई, जगह ठीक-ठीक किसी को मालूम न हुई। सारा घर खोद डाला, कहीं पता न लगा। मियां ग़रीब था, ख्याल करो कैसा सदमा हुआ होगा।

५४. कुछ आदमी ताला लगा कर कभी-कभी इधर-उधर चाबी पास ही रख देते हैं, यह बड़ी ग़लती की बात है।

५५. मिट्टी का तेल बहुत नुक़सान करता है उसको न जलायें और चिराग़ में बत्ती अपने हाथ से बनाकर डालें। मुफ़्त में दुगना-तिगुना तेल बर्बाद जाता है और चिराग़ में बत्ती उकसाने के लिए पाबन्दी के साथ एक लकड़ी या लोहे-पीतल का तार ज़रूर रखें, वरना उंगली खराब करनी पड़ती है और चिराग़ गुल करने के वक़्त एहतियात रखें, उस पर ऐसा हाथ न मारें कि चिराग़ ही आ पड़े, बल्कि उसके लिए पंखा या कपड़ा मुनासिब है और मजबूरी से मुंह से बुझा दें।

५६. रात के वक़्त अगर रुपया वग़ैरह गिनना हो तो बहुत धीरे-धीरे गिनो कि आवाज़ न हो। उस के हज़ारों दुश्मन हैं।

५७. जलता चिराग़ अकेले मकान में छोड़कर न जाओ। ऐसे ही दियासलाई सुलगती हुई वैसे ही न फेंको। उसको या तो बुझाकर फेंको या फेंक कर बत्ती वग़ैरह से मसल डालो ताकि बिल्कुल उसमें चिन्गारी न रहे।

५८. बच्चों को दियासलाई या आग या आतशबाज़ी से हरगिज़ न खेलने दो। हमारे पड़ोस में एक लड़का दियासलाई खींच रहा था, कुरते में आग लग गई। तमाम सीना जल गया, एक जगह आतशबाज़ी से एक लड़के का हाथ उड़ गया।

५९. पाखाना वग़ैरह में चिराग़ ले जाओ, तो बहुत एहतियात से रखो, कहीं कपड़ों वग़ैरह में आग न लग जाये। बहुत से आदमी इसी तरह जल चुके हैं, खास कर मिट्टी का तेल तो और भी ग़ज़ब का होता है, लालटेन में कोई हरज नहीं।

बच्चों की देख-भाल

१. हर दिन बच्चे का हाथ, मुंह, गला, कान, चड्ढे वग़ैरह गीले कपड़े से खूब साफ़ कर दिया करो। मैल के जम जाने से गोश्त गल कर ज़ख्म पड़ जाते हैं।

२. जब पेशाब या पाख़ाना करे, फ़ौरन पानी से तहारत कर दिया करो। ख़ाली चीथड़े से पोंछने पर बस न करो, उससे बच्चे के बदन में खुजली और जलन पैदा हो जाती है। अगर मौसम ठंडा हो तो पानी नीम (आधा) गरम कर लो।

३. उसको अलग सुला दें और हिफ़ाज़त के वास्ते दोनों तरफ़ की पाटियों से चारपाइयां मिलाकर बिछादें या उसको दोनों करवट पर दो तकिये रख दें ताकि गिर न पड़े। पास सुलाने में यह डर है कि शायद सोते में कहीं करवट के तले दब जाये, हाथ-पांव नाज़ुक तो होते ही हैं, अगर चोट पहुंच जाये तो ताज्जुब नहीं। एक जगह इसी तरह एक बच्चा रात को करवट में दब गया। सुबह को मरा हुआ मिला।

४. झूले की बच्चों को ज्यादा आदत न डालें, क्योंकि झूला हर जगह नहीं मिलता और बहुत गोद में भी न रखें। इससे बच्चा कम-ज़ोर हो जाता है।

५. छोटे बच्चे की आदत डालें कि सबके पास आ जाया करे। एक आदमी के पास ज्यादा हिल जाने से अगर वह आदमी मर जाये या नौकरी से छुड़ा दिया जाये, तो बच्चे की मुसीबत आ जाती है।

६. अगर बच्चे को अन्ना का दूध पिलाना हो तो ऐसी अन्ना तजवीज़ करनी चाहिए, जिसका दूध अच्छा हो और जवान हो और उसका बच्चा छः सात महीने से ज्यादा का न हो और वह आदत की

अच्छी हो और दीनदार हो, मूर्ख, बेशर्म, बद चलन, कंजूस, लालची न हो।

७. जब बच्चा खाना खाने लगे, अन्ना और खिलाने वाली पर बच्चे का खाना न छोड़ें, बल्कि खुद अपने या किसी सलीक़ेदार आदमी के सामने खिलाया करें, ताकि बे अन्दाज़ा खाकर मर न जाये और बीमारी में दवा भी अपने सामने बनवायें और अपने सामने पिलायें।

८. जब कुछ समझदार हो जाये तो उसको अपने हाथ से खाने की आदत डालें और खाने से पहले हाथ धुला दिया करें और दाहिने हाथ से खाना सिखला दें और उसको कम खाने की आदत डालें ताकि बीमारी और लालच से बचा रहे।

९. मां-बाप खुद ख्याल रखें और जो मर्द या औरत अपने बच्चे पर मुक़र्रर हो, वह भी ख्याल रखे कि बच्चा हर वक़्त साफ़-सुथरा रहे। जब हाथ-मुंह मैला हो जाये, फ़ौरन धुला दे।

१०. अगर मुम्किन हो तो हर वक़्त कोई बच्चे के साथ रहे। खेल-कूद के वक़्त इसका ध्यान रखे, बहुत दौड़ने-कूदने न दें। ऊंची जगह पर न खिलाये, भले-मानुषों के बच्चों के साथ खिलायें, कमीनों के बच्चों के साथ न खेलने दो। बाज़ार वग़ैरह में उसको लिए न फिरे। उसकी हर बात को देख कर हर मौक़े के लिए मुनासिब उसको आदाब सिखा दें, बेजा बातों से उसको रोकें।

११. खिलाने वाली को ताकीद कर दें कि उसको ग़ैर जगह कुछ न खिलाये अगर कोई उसको खाने-पीने की चीज़ दे तो घर लाकर मां-बाप के सामने रख दे, आप ही आप न खिला दे।

१२. बच्चे का बहुत लाड़-प्यार न करे, वरन् बिगड़ जायेगा।

१३. बच्चे में आदत डालें कि अपने बुज़ुर्गों के अलावा और किसी से कोई चीज़ न मांगे और न बिना इजाज़त किसी की दी हुई चीज़ ले।

१४. बच्चे को बहुत तंग कपड़े न पहनायें और बहुत गोटा-किनारी भी न लगायें, हां, ईद वग़ैरह में कोई हरज नहीं।

१५. बच्चों को मजन मिसवाक की आदत डालें।

१६. इस किताब के पहले भाग में कुछ अदब और क़ायदे खाने-पीने के, बोलने-चालने के, मिलने-जुलने के, बैठने-उठने के लिखे गए हैं। इन सब की आदत बच्चे को डालें। इस भरोसे में न रहें कि बड़ा होकर आप ही सीख जायेगा या उसको उस वक़्त पढ़ा देंगे। याद रखो आपसे आप कोई नहीं सीखा करता। पढ़ने से जान तो जाता है, मगर आदत नहीं पड़ती और जब तक इन बातों की आदत न हो, कितना ही कोई लिखा-पढ़ा हो, हमेशा उससे बे-तमीज़ी, ना-लायक़ी दिल दुखाने की बात ज़ाहिर होती है।

१७. पढ़ने में बच्चे पर बहुत मेहनत न डालो, शुरू में एक घंटा पढ़ने का मुक़र्रर कर लो, फिर दो घंटे, फिर तीन घंटे। इसी तरह उसकी ताक़त और सहारे के मुताबिक़ उससे मेहनत लेनी चाहिए। ऐसा न करो कि तमाम दिन पढ़ाते रहो। एक तो थकन की वजह से बच्चा जी चुराने लगेगा, फिर ज़्यादा मेहनत से दिल और दिमाग़ ख़राब होकर ज़ेहन और हाफ़िज़े में ख़राबी आजायेगी और बीमारों की तरह सुस्त रहने लगेगा फिर पढ़ने में जी न लगेगा।

१८. अलावा मामूली छुट्टियों के, सख़्त ज़रूरत बग़ैर बार-बार छुट्टी भी न दिलवायें कि इससे तबियत उचाट हो जाती है।

१९. जहां तक मिल सके, जो इल्म व हुनर सिखलायें, ऐसे आदमी से सिखलायें, जो उसका पूरा जानकार और माहिर हो। कुछ लोग सस्ता उस्ताद रख कर उसे तालीम दिलवाते हैं। शुरू ही से बच्चा बिगड़ जाता है, फिर दुरुस्ती मुश्किल हो जाती है।

२०. आसान सबक़ हमेशा तीसरे पहर के वक़्त मुक़र्रर करें और मुश्किल सबक़ सुबह को, क्योंकि आख़िरी वक़्त में तबियत थकी हुई होती है। मुश्किल सबक़ से घबराहट होने लगेगी।

२१. बच्चों को खास तौर से लड़की को खाना पकाना और कपड़े सीना ज़रूर सिखायें।

२२. शादी में दूल्हा-दुल्हन की उम्र में ज़्यादा फ़र्क़ होना बहुत सी खराबियों की वजह बन सकती है।

२३. और बहुत कम उम्र में शादी न करें, इसमें भी बड़े नुक़सान हैं।

२४. लड़कों को सिखाओ कि सबके सामने खास कर लड़कियों या औरतों के सामने ढेले से इस्तिन्ज़ा न करें।

अच्छी और भली बातें

१. पुरानी बात पर किसी को ताना देना बुरी बात है औरतों की ऐसी बुरी आदत है कि जिन रंजों की सफ़ाई और माफ़ी भी हो चुकी है, जब कोई नई बात होगी, फिर इन रंजों के ज़िक्र को ले बैठेंगी, यह गुनाह भी है और इससे दिलों में दोबारा रंज व ग़ुबार भी बढ़ जाता है।

२. अपनी ससुराल की शिकायत हरगिज़ मैके में जाकर न करो। कुछ शिकायतें गुनाह भी होती हैं और यह बे-सब्री की भी बात है और अक्सर इससे दोनों तरफ़ रंज भी बढ़ जाता है। ऐसे ही ससुराल में जाकर मैके की तारीफ़ या वहां की बड़ाई न करो। इसमें भी कभी-कभी घमंड का गुनाह हो जाता है। और ससुराल वाले समझते हैं कि हमको बहू बे-क़द्र समझती है, इसलिए वे भी उसकी बे-क़द्री करने लगते हैं।

३. ज़्यादा बकवास की आदत न डालो वरना बहुत सी बातों में कोई न कोई बात ना-मुनासिब ज़रूर निकल जाती है, जिसका अन्जाम दुनिया में रंज आख़िरत में गुनाह होता है।

४. जहां तक हो सके अपना काम किसी से न लो। खुद अपने हाथ से कर लिया करो, बल्कि दूसरों का भी काम कर दिया करो, इससे तुमको सवाब भी होगा। और इससे हर दिल में प्यार की जगह भी पैदा कर लोगी ।

५. ऐसी औरतों को कभी मुंह न लगाओ और न कान देकर उनकी बातें सुनो, जो इधर-उधर की बातें घर में आकर सुना दें। ऐसी बातें सुनने से गुनाह भी होता है ।

६. अगर अपनी सास-नन्द देवरानी-जेठानी, या दूर-नज़दीक के रिश्तेदार की कोई शिकायत सुनो तो उसको दिल में न रखो। बेहतर तो यह है कि इसको झूठ समझ कर दिल से निकाल डालो। अगर इतनी हिम्मत न हो तो जिसने तुम से कहा है, उसका सामना करा कर, मुंह दर मुंह उसको साफ़ कर लो, इससे फ़साद नहीं बढ़ता ।

७. नौकरों पर हर वक़्त सख़्ती और तंगी न किया करो और अपने बच्चों की देख-भाल रखो कि वे मामा (नौकरों) को या उनके बच्चों को न सताने पायें, क्योंकि ये लोग लिहाज़ के मारे ज़ुबान से कुछ न कहेंगे, लेकिन दिल मे ज़रूर कोसेंगे, फिर अगर न भी कोसा, जब भी ज़ुल्म का वबाल और गुनाह तो ज़रूर होगा ।

८. हर वक़्त फ़िज़ूल बातों में न खोया करो और बहुत सा काम इस काम के लिए भी रखो कि इसमें लड़कियों को क़ुरआन शरीफ़ और दीन की किताबें पढ़ाया करो। अगर ज़्यादा न हो तो क़ुरआन शरीफ़ के बाद वह किताब बहिश्ती ज़ेवर शुरू से ख़त्म तक तो ज़रूर पढ़ा दिया करो। लड़कियां चाहे अपनी हों या पराई, उन सब के लिए इसका ख्याल भी रखो कि उनको ज़रूरी हुनर भी आ जाये, लेकिन क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म होने तक उनसे दूसरा काम मत लो और जब क़ुरआन शरीफ़ पढ़ चुकें और साफ़ भी कर लें, फिर सुबह के वक़्त तो पढ़ाया करो और जब छुट्टी लेकर खाना खा चुकें उनसे लिखवाओ। फिर दिन रहने से उनको खाना पकाने का और सीने

पिरोने का काम सिखाओ।

९. जो लड़कियां तुमसे पढ़ने आयें, उनसे अपने घर के काम न लो। उनसे अपने बच्चों की टहल न कराओ, बल्कि उनको भी अपनी औलाद की तरह रखो।

१०. नाम के वास्ते कभी कोई फ़िक्र, कोई बोझ अपने ऊपर न डालो, गुनाह का गुनाह, मुसीबत की मुसीबत।

११. कहीं आने-जाने के वक़्त इसकी पाबन्द न हो कि खामखाह जोड़ा भी ज़रूर बदला जाये, क्योंकि उनमें यही नीयत होती है कि देखने वाले हमको बड़ा समझें। सो ऐसी नीयत खुद गुनाह है और चलने में उसकी वजह से देर भी होती है, जिससे तरह-तरह के हरज हो जाते हैं। मिज़ाज में नर्मी और सादगी रखो कभी जो कपड़े पहने बैठी हो, यही पहन कर चली जाया करो। अगर कपड़े ज़्यादा मैले हुए या ऐसा ही कोई मौक़ा हुआ, जितना आसानी से और जल्दी से हो सके, बदल डालो, बस छुट्टी हुयी।

१२. किसी से बदला लेने के वक़्त उसके खानदान के या मरे हुए के ऐब न निकालो, इसमें गुनाह भी हो जाता है और खामखाह दूसरों को रंज भी हो जाता है।

१३. दूसरों की चीज़ जब बरत चुको या जब बर्तन खाली हो जाये, फ़ौरन वापस कर दो। अगर इत्तिफ़ाक़ से कोई ले जाने वाला न मिले तो उसको अपने बरतने की चीज़ों में मिला-जुलाकर न रखो, बिल्कुल अलग उठा कर रख दो, ताकि वह चीज़ बर्बाद न हो, वैसे भी बे इजाज़त किसी की चीज़ का बरतना गुनाह है।

१४. अच्छे खाने-पीने की आदत न डालो। हमेशा एक-सा वक़्त नहीं रहता। फिर किसी वक़्त बड़ी मुसीबत झेलनी पड़ती है।

१५. एहसान किसी का, चाहे थोड़ा ही-सा हो, उसको कभी न भूलो और अपना एहसान, चाहे कितना ही बड़ा हो न, जताओ।

१६. जिस वक़्त कोई काम न हो, सबसे अच्छा काम किताब

देखना है। किताबें हमेशा अच्छी देखो और जिनका असर अच्छा न हो, उन्हें कभी न देखो।

१७. चिल्ला कर कभी न बोलो, बाहर आवाज़ जाएगी, कैसी शर्म की बात है।

१८. अगर रात को उठो, घर वाले सोते हों, तो खड़-खड़ धड़-धड़ न करो ज़ोर-ज़ोर से न चलो। तुम तो ज़रूरत से जागीं, भला औरों को क्यों जगाया। जो काम करो, आहिस्ता करो, आहिस्ता किवाड़ खोलो, आहिस्ता पानी लो, आहिस्ता थूको, आहिस्ता चलो, आहिस्ता घड़ा बन्द करो।

१९. बड़ों से हंसी न करो। यह बे-अदबी की बात है और कम-हौसला लोगों से भी बे-तकल्लुफ़ी न करो, कि बे-अदब हो जायेंगे, फिर तुमको ना-पसन्द होगा या वे लोग कहीं दूसरी जगह गुस्ताखी करके ज़लील होंगे।

२०. अपने घराने वालों या अपनी औलाद की किसी के सामने तारीफ़ न करो।

२१. अगर किसी महफ़िल में सब खड़े हो जायें, तो तुम भी बैठी न रहो उसमें घमंड पाया जाता है।

२२. अगर दो आदमियों में आपस में रंज हो, तो तुम उन दोनों के दर्मियान ऐसी बात न कहो कि अगर उनमें मेल हो जाए तो तुम को शर्मिन्दगी उठानी पड़े।

२३. जब तक रुपया-पैसा या नर्मी से काम निकल सके, सख़्ती और खतरे में न पड़ो।

२४. मेहमान के सामने किसी पर गुस्सा न करो। इससे मेहमान का दिल वैसा खुला हुआ नहीं रहता, जैसा पहले था।

२५. दुश्मन के साथ भी अख़्लाक़ से पेश आओ, उसकी दुश्मनी न बढ़ेगी।

२६. रोटी के टुकड़े यों ही न पड़े रहने दो, जहां देखो, उठा लो और साफ़ करके खा लो। अगर न खा सको, तो किसी जानवर को दे दो और दस्तरख्वान, जिसमें, टुकड़े हों, उसको ऐसी जगह न झाड़ो, जहाँ किसी का पांव पड़े।

२७. जब खाना खा चुको, उसको छोड़ कर मत उठो कि उसमें बे-अदबी है, बल्कि पहले बर्तन उठवा दो, तब ख़ुद उठो।

२८. लड़कियों को ताकीद करो कि लड़कों में न खेला करें, क्योंकि इसमें दोनों की आदत ख़राब होती है और जो ग़ैर लड़के घर में आयें, चाहे वे छोटे ही हों, उस वक़्त लड़कियां वहाँ से हट जाया करें।

२९. किसी से हाथ-पांव की हंसी हरगिज़ न करो। अक्सर तो रंज होता है। और कभी जगह-बे-जगह चोट लग जाती है और जुबानी भी ज्यादा हंसी न करो, जिसमें दूसरा चिढ़ने लगे, इसमें भी तकरार हो जाती है, ख़ास कर मेहमान से हंसी करना और भी बेहूदा बात है जैसे कुछ आदमी बुराइयों से हंसी करते हैं।

३०. अपने बुजुर्गों के सिरहाने न बैठो, लेकिन अगर वे किसी वजह से ख़ुद हुक्म के तौर पर बैठने को कहें, तो उस वक़्त अदब भी यही है कि कहा मान लो, ज़्यादा उज्र न करो।

३१. अगर किसी से कोई चीज़ मांगे के तौर पर लो, तो एक तो उसको ख़ूब एहतियात से रखो और जब ख़ाली हो जाए, फ़ौरन उसके पास पहुंचा दो। यह राह न देखो कि वह ख़ुद मांगे। एक तो उसको ख़बर क्या कि अब ख़ाली हो गई दूसरे शायद लिहाज़ के मारे न मांगे और शायद उसको याद न रहे, फिर ज़रूरत के वक़्त उसको कैसी परेशानी होगी। इसी तरह किसी का क़र्ज़ हो तो उसका ख्याल रखो कि जब ज़रा भी गुंजाइश हो, फौरन जितना हो, उसका क़र्ज़ उतार दिया।

३२. अगर कभी किसी लाचारी में कहीं रात-बे-रात चलने का मौक़ा हो तो छड़े-कड़े वग़ैरह पांवो से निकाल कर हाथ में ले लो। रास्ते में बजाती हुई न चलो।

३३. अगर कोई बिल्कुल अकेली कोठरी वग़ैरह में हो और किवाड़ वग़ैरह बन्द हो तो यकायकी खोल कर अन्दर न चली जाओ। ख़ुदा जाने वह आदमी नंगा हो, खुल गया हो या सोता हो और ना-हक़ को बे-आराम हो, बल्कि आहिस्ता-आहिस्ता पहले पुकारो और अन्दर आने की इजाज़त लो। अगर वह इजाज़त दे तो अन्दर जाओ नहीं तो ख़ामोश हो जाओ, फिर दूसरे वक़्त सही। हां, अगर कोई बहुत ही ज़रूरत की बात हो, तो पुकार कर जगालो, मगर जब तक वह बोल न पड़े, तब तक अन्दर फिर भी न जाओ।

३४. जिस आदमी को पहचानती न हो, उसके सामने किसी शहर या क़ौम की बुराई न करो, शायद वह आदमी उसी शहर या क़ौम का हो, फिर तुमको शर्मिन्दा होना पड़े।

३५. इसी तरह जिस काम का करने वाला तुमको मालूम न हो तो यों न कहो कि यह किस बेवक़ूफ़ ने किया है या ऐसी ही कोई बात न हो, शायद किसी ऐसे आदमी ने किया हो, जिसका तुम लिहाज़ करती हो, फिर मालूम होने पर पीछे शर्मिन्दा होना पड़े।

३६. अगर तुम्हारा बच्चा कोई ग़लती करे, तो तुम कभी अपने बच्चे की तरफ़दारी न करो, ख़ास कर बच्चे के सामने तो ऐसा करना तो बच्चों की आदत ख़राब करना है।

३७. लड़कियों की शादी में ज़्यादा यह बात देखो कि दामाद के मिज़ाज में अल्लाह का डर और दीनदारी हो। ऐसा आदमी अपनी बीवी को आराम से रखता है, अगर माल व दौलत बहुत कुछ हुआ और दीन न हुआ, तो वह आदमी अपनी बीवी का हक़ ही न पहचानेगा और उसके साथ वफ़ादारी न करेगा, रुपया-पैसा भी न देगा अगर दिया भी तो उससे ज़्यादा जलायेगा।

३८. अगर औरतों की आदत है पर्दे में से किसी को बुलाना हो तो खबर करने के लिए आड़ में खड़ी होकर ढेला फेंकती हैं, कभी वह किसी के लग जाता है। ऐसा काम न करना चाहिए, जिससे किसी को तकलीफ़ पहुंचने का डर हो, बल्कि अपनी जगह बैठी ईंट वग़ैरह खटखटा देना चाहिए।

३९. अपने कपड़ों पर सूई-डोरे से कोई निशान फूल वग़ैरह बना दिया करो कि धोबी के यहाँ कपड़े बदल न जायें, बस कभी ग़लती से तुम दूसरे के और दूसरा तुम्हारे कपड़े बरत कर खामखाह गुनाहगार होगा और दुनिया का भी नुक़्सान होगा और आखिरत का भी।

४०. अरब में रिवाज है कि जो लोग किसी बुज़ुर्ग आदमी से चीज़ तबर्रुक के तौर पर लेना चाहते हैं तो वह चीज़ अपने पास से उन बुज़ुर्ग के पास लाकर कहते हैं, आप इसको एक ता दो-दिन इस्तेमाल करके दे दीजिए। इसमें उन बुज़ुर्गों को तरद्दुद नहीं करना पड़ता, वर्ना अगर बीस आदमी किसी बुज़ुर्ग से एक कपड़ा मांगें तो उनकी गठरी में एक चिथड़ा भी न रहे। हमारे हिन्दुस्तान में बे-धड़क मांग बैठते हैं। कभी उनको फ़िक्र होती है और तरद्दद में पड़ जाते है। अगर हम लोग भी अरब का रिवाज अपनायें तो बहुत मुनासिब है।

४१. अगर कोई आदमी अपनी तरफ़ से कोई बात कहे तो अगर उसके खिलाफ़ कोई मुनासिब जवाब देना हो तो अपनी ओर से जवाब दो, किसी और के नाम से न कहो कि तुम तो यों कहते हो और फ़लां आदमी उसके खिलाफ़ कहता है, क्योंकि अगर दूसरे आदमी को उसने कुछ कह दिया तो वह सुनकर रंजीदा होगा।

४२. महज़ अटकल और गुमान से बिना जाँच किए हुए किसी पर इल्ज़ाम न लगा दो, इससे बहुत दिल दुखता है।

हुनर और पेशा

कुछ लावारिस ग़रीब औरतें जिनके खाने-कपड़े का कोई सहारा नहीं, ऐसी परेशानी और मुसीबत में पड़ी हुई हैं, कि खुदा की पनाह ! इसका इलाज दो बातों से होता है, या तो निकाह कर लें या अपने हाथ के हुनर से चार पैसा हासिल करें, मगर हिन्दुस्तान के जाहिल, निकाह और हुनर दोनों को ऐब समझते हैं और किसी को तौफ़ीक़ नहीं होती कि ऐसे ग़रीबों के खर्च की खबर रखें फिर बतलाओ कि बेचारियों का किस तरह गुज़र हो ।

बीवियो ! दूसरों पर तो कुछ ज़ोर चलता नहीं, मगर अपने दिल पर और हाथ-पांव पर अल्लाह ने अख़्तियार दिया है। दिल को समझाओ और किसी को बुरा-भला कहने का ख्याल न करो । अगर किसी की उम्र निकाह के क़ाबिल है तो निकाह कर ले और अगर इस क़ाबिल न हो या यह कि उसको ऐब तो नहीं समझती, मगर वैसे ही दिल नहीं चाहता या बखेड़े से घबराती है तो इस सूरत में अपना गुज़ारा किसी पाक हुनर के ज़रिए से करो । अगर कोई छोटा समझे, हरगिज़ परवाह न करो । हुनर और दस्तकारी का काम सीखना कोई ऐब की बात नहीं ।

बीवियो ! अगर कोई बात इसमें बे-इज़्ज़ती की होती, तो पैग़म्बर इन कामों को क्यों करते, उनसे ज़्यादा किसकी इज़्ज़त है ।

हदीस में है, हमारे पैग़ाम्बर सल्ल० ने बकरियाँ चराई हैं और यह फ़र्माया है कि कोई पैग़म्बर ऐसे नहीं गुज़रे, जिन्होंने बकरियां न चराई हों और यह भी फ़र्माया है कि सबसे अच्छी कमाई अपने हाथ की है और हज़रत दाऊद अलै० अपने हाथ के हुनर से खाते थे। ये सारी बातें हमारे पैग़ाम्बर सल्ल० ने फ़र्मायी हैं ।